अर्देव हें ग्रांश कुव की श्रांत छ र श्रूम की दें की की की की की की की

नेरः ध्रेतः भ्रम्यश्यकुरः ग्रेः क्र्रंदः श्रुव।

न्त्यः अर्केशन्त्रीत्शनक्ष्र्नायते द्वायन्त्र



यक्तिः क्रिंग्सः स्वाप्तः । त्राः संस्याप्ते । स्वाप्तः स्वापतः स्

बुर्श्वेग वग्न व्यक्त या हे रेट। इये श्वेग इटा अर्व र्स्मा अहंस रेस या David ग्राह्स वसेवा

हूं अ य या दिया में या देवर भी य वास्त्र य मर विर हें है।

मुंग्यान त् चर्म अवदा यहम न्वन्य नेया

१००६ विदेश ६ पर पर माले १ विपश्चिमाय है। के ले ल पर चेरल १ वि मुन

Copyright © 2004 VVI All rights reserved. No portion of this re-edited book may be reproduced without permission

First edition 2004

073408

Publication data

ISBN 81-89017-05-5 Tibetan Institute, Sarnath

Title mingon rtogs rgyan gyi sa bead snang byed sgi on me dang skabs brgyad kyi stong thun dang dbu ma chos dbyings bstod pa rnam bshad (The Illuminating Lamp Topics from the Ornament of Realization and other works)

Author Rangjung Dorje

भुवानई ने दुः न्ये अई नावना

Vajra Vidya Institute Library

Khajuhee PO Sarnath, Varanasi, UP, India 221007

Phone: 00-91-542-2595744, 2595747, 2595748

Fax: 00-91-542-2595746

Email vajravidya@yahoo com

Printed and bound in India by Gopsons Papers Ltd , Noida

THE : CANUSAPA

रि जमान्ये अविश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्व **J** क्रेद्रासःदर्गः देव द्राक्रेदे स्वाकारम्भेद रदाशहर्गः प्रवादा में त्येनाका श्रुद वका के प्रवादा द्रिय यदः र्वाह्मचेतुःगश्चरःस्यान्ये प्रमुद्धानरः वेशानाश्चरः दिवायहेशाय वदे हेन चर्केर बोटबारुव.की.कूँटबारुट्रेन.बोबर.जूंदु रिबायबा भ थेनबारापु. १५.विंट.बोईबो. जवानी ह्रांजान वर्षे राजेर क्रिया प्रमान क्रिया में प्रमान में क्रिया में प्रमान क्रिय में प्रमान क्रिय में प्रमान क्रिय में प्रमान क्रिय यदः अध्या श्रीयः श्र्रां अपनी ग्रीश्राः रच क्रु क्रेद्र अयः श्रेदेः द्ययः व्रिश् श्रुवाः व वीय. वीट. क्रंस. हं स. सैका कहुंब. रेट । हो हं स. रेट. झैक ही. खूँ. वंश लव चरेतु. क्रींट बावबाक्यित यदायमेव.त सुव ज्.कुत द्वा सूच.लिट.हूबावाकी.कूबाक्षता तकर. थेव. ह्वा योश्चर्यः अक्ष्यः पर्द्धः प्रश्चरः प्रश

वरावा ४५० म स्माधुरामहामित्रामितावि स्वीति स्वीति । ११ हेन १५ ५८।

हे.ज्. ४००४ हे.धे. १४ ष्ट्रब ४४ जी

अ देव गुव नुराय अवस से दा नु गुवे हें न । नर.रेश.ज्यायायरयश्च.ह्य.ह्य.हेय.ह्या । वर्गेवानद्व तत्त्वकान्त्र द्वा क्षेत्र भन्ने में प्रतास्त्र । पश्चतात्वेषु व्यादेरादु सादेराप्ये वापायाया । देर:वर्देर:श्रवःदेव:वर्वे:वर्व:दे:श्रेंद:श्रद्धाः । **८६२.श्रे२.२.श**४.वग्री.यद्य.तत्र वर्तेवाग्री श्री लूटबार्बी जाउड़े बाह्य हुन किया है वेबा पर केंचे षाळेदाष्ट्रिंदायदेराणुदारेटावृद्धायाद्दा । नर्धेष.८हृष.चीवाय.श्रचेष.चेवस.न्धेष.चीवास.न्धेष.रवीया । पश्चर,तद्र,थर.र्ट्रेष.पश्चर,धर्थश्चर,श्चथाः । पक्षेत्र.ज.८८.ग्रेथ.क्ष्रस.श्रद्येत.तट्र.८चेश.वक्ष्री i पम्रव पति से परे की प्रमण ए द र र रे वा चेशःसि.तर्गी.द्रथे.तू.कु.८८.। ८मूथ.ग्री.स.ग्री.क्षशःग्री.स्वेगशः चर्षर नव्यक्त नर्द्वर् के बातव निर्मात मानि का मानि के मानि का मानि के मानि का मानि का मानि का मानि का मानि का



VENERABLE THRANGU RINPOCHE

義可四美引

बीसायपुःसियांची लेजारीः यहुवा। जिटाहूंचीसायायुमायहैसाखेः यहाय क्रमा। इसाज्ञाज चर्चेट्रायये त्यस्य हिया ही। इसाज्ञाज चर्चेट्रायये या जसाश्चें यस स्टा।

सुवेवस्या ने व इसस्य में नुस्य वर द्वे क्युत होता वर्त केंद् द्द। यद युग दये क्रि हु आर्थे ग्या के यावग । विंका यक्ष प्र दि क्राका येव ग्रद अविवा निया वर्षे की किय हेव ने देश केन यर हैं वा केन ने वाल्या किया श्चिम अनेश य देशन ग्रीम मैयन यहेत स्म वन सेम देन प्रम स्य स्थ. केन। युव यह वेरु नये अर्देन मन्योश सुर यञ्च बुरा नन बु वकर यबेवा न तामान्यता मुता नयद मुझ य मासुम य मद बुद हें हे सामहन यद नतु म क्रिंब रिवीटल पर्केर यद इस पनर रत। सर्वें हेंगल क्वि की ल पनर ब्रूट वेन क्षेत्र के मलुद नदायक या नदा। ने द धेत श्रयका यक्त यी केंद्र बुत नद यक्षायदे म्बुरायदे केदा भूकावई वेदु द्वे अईद्वायद क्ष धुम द्वे देव मुद्ध १००० वम्राय श्वर वेद्धार्द र्येर श्वर पश्चित वावदः य द्द । दे श्रीयश्चरपे क लियश्वीम तमान हिराय के रेट नद । अनुत र्मेम अहंश रेश प ग्राम् केंबारखेल लाक्ष्मेब च वसब कर् ही खेर बी वर्गे वा मेंबर च ल श्रेर वर्गातावकारीयोक इं.के लेक लंकि रहा अ.स्ट्रातरातीय रहायां व्यापा अधिव द्रिया ग्रीय न्ये करदेन देश न्यूय श्रीय श्रीय । वियायहण क्रिया विया न्यान्यान्त्रीय प्राप्ति हैं विश्वाययय क्षेत्रान्यस्य मान्यान्त्र त्र विक्त हैं न क्रिंग ग्राम्य। विदेश र्ने व र्यावयाय द्वायाय व स्वाय हे राज्य यदे यर हिता म्बर् रेंग्राबा बेबा गुर बुदा त्याबा दे चबेब स है मुबल ये अ हेंच य दर। लु-न्यायवन् क्रीव अर्थेन यर्थेय्या श्री स्याक्त-न्दा वें र यहाय हुन्य वससन्द्रामानसायदे। न्यराया मुस्या मुस्या मुस्या क्रिया मुस्या क्रिया मुस्या चनावःचञ्चचःग्रुटःभ्रुनाःचँ रःर्द्वेवःगवदःचनावःदेव वा

মি.তথী.শ্বীকাপ্সখনবৰা

तर.श्रेष.धंश्यायकी

मीन्नी क्रिंग. ल्लंट. चया भी मीन क्रिंग या प्राप्त की या प्राप्त की मीन्नी क्रिंग. ल्लंट. चया भी मीन्ने मी

म् वित्राम् विद्वार्थित्। यहाँ न्यान्य व्या

र्गार.क्य

अर्देवर्ह्मवशक्तुवर्श्वीर्श्ववर्श्वर ्गेत्र्वेत्र्ञ्चेवर्श्वेवर्श्ववर्श्वत्	বহৰায়	
श्रम्य प्रमाधिया	•	1
শ্লু নৰ দ্বিৰ না এম: ব্ৰা		25
श्रम्य मा स्था विश्वेषा	•	35
श्रम्य विष्य हिंग व हें में व हें में य		41
श्रम् व व हे सिंदे श्रूर प	•	59
শ্বনধার্ণানা প্রহানীপার্শ্বীয় বা	•	72
श्रमक पर्वाया श्रद रेग सदे हैं र पा		73
भ्रम्य मकु न । यन्य सुर्केश भु।		.75
ने र द्वेत न्न्रप्य पक्त र ग्री हें र द्वा		89
मृबि:वेश	•	.90
यम्ब		94
इय'यद्वित्।		96
स्तुत्पः अद्विवः ग्राञ्च श्रीः श्रुः देव।		.101
सुत्य अद्वित मह्युक्ष ची 'न देने 'न ।		.102
मिन्न मान्यमानु प्रमानु देश वर्षेत्र या		.103
वनसङ्ग्र्रिं रायावी		.107

क्रम श्रु देश पर्दे प		114
न्द्रब रा प्रमुन् ग्री ब अक्अबा		115
इयायिय ग्री केंब पड़ा		119
प्रस में ब गुँ केंब पहुं ग्रेंग		122
म्बि से में केंब न्स्		127
इस ह्वा क हुँ र चते केंब चहु गहेब।		130
क्रें ग्रंदि केंश यहुन।		134
প্রবস্-দ্রীর নত্ত্র-ছূর নপ্র বার্থ		138
अ न्-डेग्-यदे-ळॅब पदी		142
क्रॅंब क्रुंदि अर्स्य हैर्।		144
क्रॅबर्नुडिरबायक्रॅन्'यदेख'य।	• •	.147
<u> न्तुःसःर्केशन्तुदशःयक्ष्र्नःयतः स्यायरःयत्</u> नःय।	•	157
ग्वस्म म्वास्य ग्रास्य हुत्र र हिंद्र से से स्ट्राम म्वास या सूर्व या	ঝঝ	
श्रेयश् कर ही नवश स्वायश्वर है सूर नवश हुत्य व नविश है।	'	
१ रेंचें अर्रेर पश्च ।		160
१ न्वे न्दः श्रुप्त हे श्रुप्तायम् चन्न् पर्वे		
ग्रेशयःकुश्यम् १८५ये ५८:श्रुरः हे यश्रृतःयः यः यः यत्तुतः हे।		

ŋ	सर मु द्वेश केंश मु द्वित्स से श्रूट च द्र श्रूट चर्ट कुंया	176
3	सुम्राव्यक्षे सम् मेदि न्येश श्रेमश्च उत न्य। यस न्य।	
	श्रम्थ मुश्रायाणे मेव ब्रूप चरिः देश च चश्रुव च।	177
	क्षे रियाम न्य विवादित ही विशुस्त विवे र्वे व	180
a	सेश्रस कर ८८ सटस मुर्ग मु ग्रम स्मायस स्वित् धर	
	शेर्यम ब्रिंम सुरि र्येश यस् य	182
ч	विश्वस देवे हें वें विश्वर की देवें सम्बद्ध या	184
b	तन्त्रः शुद्रः श्री द्येष क्रेंश्य श्री श्रु दूरः चरि स्वा	184
2	कु निरमी न्येस कुं अध्व य रय हु बय यदे केंश।	186
	'य'অম ঘর শ্বৰ শ্পুত্রম'ত্রপ্পর য'অ'শ্বপ্তম স্থ্রী ই'ম শ্বুত্র'ত্র'বর্ম ক্রিঅ'ইম'ত্র'ত্র ত্রক্ষাত্র	
	हे क्रूर वेश्व धर पुष्प	189
3	यर्बेशयदिः स्त्रीया	217
3		245
(Ť	त्यःचाश्रुक्षःस्त्रे।	
9	क्र्यां श्रुदि विस्रवादे केंद्र देवा बाह्य त्वद् पदि हुंवा	189
3	देखेद्रायाञ्चेयायायस्यायदेखेराद्येद्वाचीस्यस्या .	193
841	'य'ब्रुद'ग्वेत'ग्री'र्स्व'यर्द्द्र'यच्युद'य'य स्'ब्रे	
	द्रे-अ-बुद्धायस-रद्यवित-द्याया	195

xii न्यूरक्य

	3	ब्रूट य के न पा के व च च च च च च च च च च च च च च च च च च	197
	3	ल.चेश.मुंश.मूंट यदे.कुल।	198
	C	म् प्रेंद गुरे में र परे स्या	199
	4	ने कुश्यम् चम् पर्वा।	202
된.r	15	र दे कि मुस यर यन द य व च मु द दे।	
	ŋ	मद वा ग्रम गुर स सर्वेद या	203
	3	ब्रीय वेर पश्रम् ।	203
		धे नेशहँग्रायदे र्स्या	.204
	a	गुद्द यह गृद्ध गुँदिव।	206
	ų	ग्वन द्यर में देव।	207
	b	हेब केदः वर्षेय वरः वर्षुदः व	.209
	عا	लूर्श श्रे.चीय.तपु.र्भ्या	212
	4	ने क्षमा की नें व प्रमु पर्वे।	.215
पाने	\$1.5	य प्रश्लेंश प्रतः स्था प्रमुख्य य प्रमुक्ष है।	
•	9	ବ୍ୟକ୍ଷ୍ୟକୁମ୍ପଦି ହୁଁଦା	217
	3	मुक् न्ग्वि अक्रम् सूट परि सुय पन् पर्वा।	232
55	Žī:	३अ <i>श</i> .ब्री.चैट.चतु.ब्र्थ.ज.चर्चेद.हे	
	1	र्बे स्यापानहेत्वका दे सुरापर्वे अपा	.217
	3	मैन्द्राहें अया महेन्द्र वा महें अरहें या महेन्द्र ।	.222

र्या र क्या	xiii
द रदग्राय हूँदर् दुर्मेग्राय दि हुव दी	226
७ वर्षेर वर्षानी रें चें बेशका हेंग्बासाहेंग्बास स्वास्ताया	227
५ म्इन्स् ग्रीः भुदे देव पन् पन्	229
५ वुरःह्य ग्रेरेंब मन्द्रा	230
य अर्देवे:र्देव:पष्ट्रव:या	231
र्ट्ट्र हैं के जाय हें वे वं बहु के र यहूँ शक्त जा के हैं।	
१ श्रेग्'द्र-ग्रुग्रं य पहेत्रव्हर्ग्यास्य पर्या	217
0.0	.219
१ दी स्मायहे व पायदा	.220
६ र्रे. यदायम् व य वी	.220
५ रेग्-वु:षद:पश्चेत्रायदे:धुर।	221
महिश्रायानुवादर्गीवाधर्कमाहि सूरासूरायदे सुवायम्दायाय साहे।	
१ अर्देरवह्नद्वा	.232
१ अदशः मुक्ष श्रेष्य विद्या वि	.233
१ अर्धेदःचदिःस्वा	.234
८ चन्नमः ग्रीमः से 'भियः चर्षः वर्षेत्रः यम्।	240
५ मुम्कुव के दिन्ये प्यते र्वे प्यति प्यति ।	243
ब्रिशत्प्राच्यास्य स्वास्य स्वास्य	
१ तुर-र्देर-दी-र्स्य-वेशयर-दीया	245

ŧ

t

xiv र्गरक्ष

१ वर्षे म चरे मुक्ते व वी।	246
१ बि:चरि:मानेव या	248
ে বিশ্বথা শ্ৰীপ্ৰ বাম বী বাণ্ড ছুপা	251
५ सुंच है सूर मुख चंदे रेस चंदें।।	261
चर्षे त.विश्व मिश्च तर चै च चर्षेष त ज बीश्वेश.क्री	
) বিশ্বপ্ৰ দীপ দ্বী বুল কুল হ'ব বৰি বে।	251
१ दे:लश विद स्व तश्चिय य	255
द मैल वयावबीर वर उर्वीर वर्त्।	261
के.त.क्ष्याह केर.मैब तपु रुश त.ज.चबु ही	
१ स्थापम श्रुन्यमासर्वेद स्था .	261
र अत्यालुमाय यार्विटातु मुकायदे दये।	262
१ अध्य श्रुण धरः ५ ये अर्दे र प्रमुद्धा .	263
< कुष चन् ५ दे।।	264
चर्षि'य कुषायम चस्त्र य त्याय हु ग्री व्यासी	
१ बॅबराबर्बेंट्स्य प्रदेश	. 264
१ नवानुन्त्वादाचा	264
द द्वास्त्रिद्या	266
७ वेंर्डिर्या	267
५ देन्'दर्बे'च।	268

र्गाम कवा	xv
८ बुद्दग्दन्।	270
य सर्देन र शुर पा	271
र देद रुकेंद्र व	272
९ अँग्षें य	273
१० ঐশ্বৰ ঘ ৰি সূৰ্ শ্ৰ	275
११ क्रेंब ग्रे-ह्वेंब चन्द्र चर्वि।	276
चब्रिय द्वे साम्रस्य उर् द्र म्या चित्र के साम्रु वा चर्मेद्र य वा चित्र है।	
१ मात्रक्ष शुर यदि केंब ब्रू रदः वी दें दी।	280
୧ ସକ୍ଷୟ ଶ୍ରିକ ଅଧି । ପ୍ରସ୍ତ ସ	284
द हेंग्य यदे व्यव मन्	286
८ वर्षेत्रः यद्यान्त्र ।	297
ग्रुसायार्ह्माबायास्य श्रुणायते व्यंत हतायत् प यायति है।	
१ बेसब-५म पदे हुंच।	286
१ धे:वेशग्री:स्वाह्मवाया	287
१ न्या परिः व्यव म्ह्रम्	
< र्वेच प्रति स्थित प्रति विश्वा ।	
चत्रेयःत्वेदःयश्यम् द्यायः स्टब्स्	
१ दब्दिन'त्यक्ष'ग्री'म् र्सं'म् ज्ञुत्य'श्रक्ष'न्यन् यञ्जूर'यक्क्रिय'य।	.297
१ वर्षेत्रः चात्रः वर्षेत्रः त्यकास ह्यः कृता	

xvi द्यारक्ष

द विपक्षभवश्चया	30
७ सुद्रव वाबायद्वायये देव।	309
५ वनदःच अदःचते वर्षेत्र वार्ष ग्री देव चस्नुत चर्वे।।	303

ঞ। । মার্হর : यः স্ক্রির মার্য বার্ব : ছী । ব্যক্তর : শ্বর্ম : শ্রীর : শ্রীর : শ্রীর : শ্রীর : ছী । বহু শ্বর : শ্রীর : শ্রীর : শ্রীর : ছী । বহু শ্বর : শ্রীর : শ্রীর : শ্রীর : ছী ।

श्रम्य स्टार्म इस सिवा

्रिक्त । चिक्र् शर्जियः पर्देशः सेशः स्वास्यः ग्रीः सः सूजः थित्रेयः ग्रासियोः पक्षवाः ग्री।

सस्य। मिल्ट्र-र्ट्स्यःस्। सस्य। मिल्ट्र-र्ट्स्यःस्।

५८ में में कुं पक्ष क्रिंब परि अर्क्व दी

मुन्द्रभीत्त्र (मुन्द्रभूद्रित्। अड्डेश्यस्यस्यत्त्रेत्रद्र्यहः

¹ नर् गुन दर में मिदर परे निश्चेन प्रसाद में र निस्पर्ये।

होया. पक्षता. सूर्या में प्रक्षेत्र पक्ष्य शह्य त्र ह्या श्राया होते खेल वी पत्र हुये प्रविश्वाची अदश्च में स्टिश में स्टिश शह्य त्र ह्या श्राया होये खेल वी पत्र होया प्रविश्वाची स्टिश पक्षिय प्रविश्व स्टिश स्

> ढ़ॺॱॿॕॺॱॿऀॱॻॱक़ॕऀ॔॔॔॔॔॔॔॔ॻॾॺॺॱग़ॖॺॱऄ॓ॺॱऄ॓ॸॱॻॖॏॺॱऄ॓ॸॱॿऀॸॱ ढ़ऻॿऀॸॖॱॺॾ॔ॸॖॱॺऻॸॱऄॺॱॸॖॸॱ॥

दर्ने त्यायन पर ने स्वाप्त स्व

क्र्याशायदी, याश्वरकाता। यादा, देवा, क्षेत्र, ताशाश्चित, झेशास्त्र श्वराता, यीव, क्षेत्र, खे

ग्रै'वे'स्प्राने'त्यःस्वग्नात्रक्त्या। १ वृत्वेसःग्रुटःस्व्याःसेयसःन्यतेःस्वृतः

लेबायर्गी

मृत्रेश्वयन्त्र्व्यत्त्र्व्यय्याय्यवि यह्तिः चुन्त्। व्यव्ययः न्ता न्र्वेश्वयन्त्। वृत्तन्त्र्वश्वा । नृत्यं यह्तिः चुन्तः। व्यव्ययः इस्रायाच्यस्य उत्साधिव क्रिन्यस्य विकार्स्या

मानेश य दर्भेय व दे।

क्रेंब्रायबादरीक्ष्यबाचन्द्रायाना। गलव मुंबार्स सुरायायाय विवाही। क्रेंबार्श्वेरायद्वाधीयर्गानेरायी॥ १ सर्दे द्वारव या या यववा व ना। वे ना ने ना

मासुयायान्में स य है।

म्नुं.र्टर.र्जव.तकाश्रम्यर.पर्वीर.द्वीरा। खेळाडू।।

यविय केर दर्गेशकी

यदे व्या हि वे हें ग्राय विश्वा वु च इस यदे द्र्येशय भेता। द वेशयदें।

मिनेशयाम्बुरमी र्नेन यमिनेशहे। अर्ने राम्बुन स्थाइयामिन र्टा क्रिकायरायम्रायदी रिटार्या अर्रेरायक्षेत्रास्वायन्त्रायन्त्राय मेंचेश अर्र्रः पक्ष्यः भेषया पक्षितः दर्भ क्षेत्र प्रतर्देवः विश्व प्रतर्देवः विश्व पक्ष्य पर्दे । १८ : वें अर्दे र पक्ष्य क्ष्य पर्वे ।

> नेशन्यायार्रेषामुन्याने॥ र्देशचें चक्कर्गीश्रणदर्गयन्।।

4 अद्व ह्रीष क्व की य पर दूर के हिंद में

इसःगुदःसञ्जिदःवेदःत्यसःमेशःवेद॥ ६

इसःगुत्रःसर्द्वःह्य्वसर्द्वन्यःद्वन्। इस्यं रःष्ट्वेतः दरःस्ययः ग्रीसःच।। इस्यं रेषाः गरिवाः सर्देतः ह्याः विद्यत्वा। इसःग्रीः श्चाः द्वारा स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः।

क्ष्यं श्री क्ष्यं श्री स्थान्ते निर्म्यक्षं चार्त्। निर्म्याः स्था स्थितः स्थाः स्

क्षेत्रश्च के त्या क्षेत्र क्

श्चिम्प्रतिः स्थान्यः स्थितः स्थितः स्था व्याप्तिः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्

महिश्रयायम् से शही।

र्वेष्विष्यं विष्यं स्टिन्स्य स्वाधित्यः स्टिन्स्य स्वाधित्यः स्टिन्स्य स्वाधित्यः स्वाधितः स्वाधित्यः स्वाधितः स्वाधितः

चेत्रयात्रत्वेश्वयात्रः।। वर्क्षेत्रत्यात्रात्रत्यम्ब्रावयात्रः॥ वर्क्षेत्रयाद्वेशक्षाव्यात्रः।। चेत्रयाचेत्रयाद्वायेत्रया।

ययः नेशक्तिन्द्वे द्वार्यः यहा। विद्यः स्वर्यः सेश्वरः द्वारः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्य

यशित्रातायोषु सेशकी

मेश्राचशाश्चित्रायाश्चीत्राम्बर्गान्त्राचित्राः श्चेत्राह्मेश्चेत्रायाश्चीत्राम्बर्गान्त्राः। व्यवस्थायाचेत्राचन्त्राच्याच्चेत्राः। व्यवस्थायाचेत्राचन्त्राचन्त्राः। 6 अर्देव हॅंग्य मुन मु य वर्ड यूट में र बेंद से।

भ्रे'सञ्चत्रम्वेत्रचित्रस्त्रम्बन्दम्। ५८ देशस्त्री।
भ्रेत्रप्तिः स्त्रम्थः स्त्रम्यः स्त्रम्थः स्त्रम्यः स्त्रम्थः स्त्रम्यः स्त्रम्थः स्त्रम्थः स्त्रम्थः स्त्रम्थः स्त्रम्थः स्त्रम्यः स्त्रम्यः

यवे यद्भय गुव दी

द्यायार्श्वे स्यास्य स्थान्त्रा विद्या स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

क्रता है श्रेंदी।

ने भे क्वा अन्य क्वा यह विश्व दिया

महत्रप्रस्थित्रम् विश्वाणा वि

হুগ ঘমগ্রহন্ত্রীশ্বাম বী

इयःगश्च्याद्वयः विश्वाद्या।

चर्व च स्त्रुन् स्वास्त्री

महिनानीश्रासद्वाङ्ग् नश्चाद्याद्यात्वा। यक्षवानीश्रासद्वाङ्ग् नश्चाद्याद्याद्यात्वा। यक्षवानीश्रासद्वाद्याद्याद्याद्यात्वा।

यक्किन्यकेंशञ्ज्ञाह्मअन्ते न्द्रयक्षयदी।

8 अर्देव हें नश कुव की अनड र इन के र हों व की

इस्तिः केत् स्वित्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्

म्जास्तर्यात्रक्षात्त्रम्बिक्षात्त्वर्ता।
विकास्त्रस्यात्रक्षात्त्रम्बिक्षात्त्वर्ताः विकासिक्षाः विकासिक्षाः विकासिक्ष्यः स्विक्षाः विकासिक्ष्यः स्विक्षाः विकासिक्ष्यः स्विक्षाः विकासिक्ष्यः स्विक्षाः विकासिक्ष्यः स्विक्षाः विकासिक्षः विकास

प्रा वर्षेयः तपुः रश्चामान्य वर्षेयः तपुः वर्षेयः तपुः स्त्रा वर्षेयः तपुः वर्षेयः वर्येयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्येयः वर्षेयः वर्षेयः वर्येयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्येयः वर्येयः वर्षेयः वर्येयः वर्षेयः वर्षेयः वर्येयः वर्येय

मुन्य अअक्षयन्त्रेत्याम्बर्ध्यः हो श्रेयस्य मुन्यी स्ट्रिंत्य अर्देन्द्रः भुन्य अअक्षयस्य ने प्रति । दिन्य श्रेयस्य मुन्यी स्ट्रिंत्ये।

> स्रेयस्यम्भ्रीत्यादीःग्वित्वत्त्त्त्वःस्त्रीत्रा। यदःत्वार्ह्स्वास्यवेःग्वदःस्त्वाःवर्देत्।। स्टेसःस्त्री।

गढ़िकाया अर्दे दिस्क्षुराया दी।

नेप्तर्नेवियार्ग्यविव्यात्। यसुसप्तरमुस्यविव्यात्।

ग्रह्म याश्रासस्स्रश्राद्वे यादी।

दे.लट.स.चीश्चरःश्चित्यःश्ची। चीहेरःदट:देव:क्षेत्रःविश्वःचीत्रःश्चित्यः। हॅ:हे:दे:श्चेत्रःविश्वःचीत्रेत्रःन्।। सिदःचलित्रःवेर्द्रःस्तुःश्चेःसःश्चा। ४०

मुयार्थः अर्देन् न्द्राय्ययार्थः के॥ मुयाद्वर्त्वः स्वार्थेन् अदेः सुन्द्वत्वे॥ मुयाद्वर्त्वः सुन्देश्चेवः स्वय्यात्वेश्वा। स्वयादः वेश्वः स्वयं स्वयं

यक्ष्रिंगः त्यान्यकाचा विराधिकार्त्ते । विष्यक्ष्यात् । विराधिकार्त्ते विष्यक्ष्यात् । विराधिकार्त्ते विष्यक्षयाः विराधिकार्ये विषयक्षयः विषयक्षयः विराधिकार्ये विषयक्षयः विषयक्

न्दार्य पश्चितायर दिस्ति दी।

मुक्तियाद्यायाद्यास्य विद्यार्थि।

10 अर्देव हें जाब कुव की ब मक्द बूद केद बेंद बेंद बेंद

"""पदेव य इसका दर देश वेश कें।

गशुस्य य हेव दी

ब्रद्यासुब्रातार्सेवाबादमूवासक्र्यानास्या। वेबार्स्या।

वर्ष व श्र अध्य द्विष्य श्रूर वरि क्यु पश्य है।

यातेव र्षेट्या सुर्यो द्या प्राप्त । यया वे र्षेट्या सुर्ये व र्षेट्या प्राप्त ।

स्यदिन्त्री वह्नाय ह्युवास वी

श्चुनः स्ट्रन्द्रने वेश्वर्श्वा

नुगायास्त्रन्यम उत्रान्दायस्य विश्वस्त्राची

व्याप्त स्थान

र्षेव हव दुव दूर विश्व हो।

यतुत्र या इस यर प्राप्य सर्वेदा यहीं साया ग्री समाय है।

"अर्थेर प्यस्त्र प्र

युरुषी:यन्गःवेन्-वेश्वःयमः श्री वेशः श्री। वेशःवेशःयन्गःवेन्-वेशःयमः श्री।

यकुर्याष्ट्रर्यसर्तुर्वे वर्षेत्रयक्षेत्रयदी

५ श्रेग्रस्य प्रत्य देश्च स्थाय ५ द्र्या स्था ।

सुर् द्र्या से स्रस्य द्र्या स्था ।

सुर स्थ्र से स्था स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्र स्थ्य स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ

12

यक्षायान्त्राचित्यम्ब्रावित्यम्ब्रा| व्रवःक्ष्यायक्षेत्रःक्ष्यायक्षेत्रःयम्ब्रम् स्वरःप्रत्येत्रःक्ष्यायक्षेत्रःयम्ब्रम् स्वरःप्रत्येत्रःक्ष्यायक्षेत्रःय||

न्तेश पर्रेन्गी नुश्चेनशक्त्यके एडीट कुट नासुश्रादी।

न्भ्रेम्बर्यः भ्रेन्द्रम्यः स्वाधः स्

म्बिश्वासःस्यासः तर्रः तर्गेत् म्वसः चतः तर्मा स्था

म्बुस्यायान्त्रे स्त्रित्रे द्रीम्बाक्षम् स्वयः सुद्रायः स्त्रीयः स्त्रे माब्रुस्य द्री

मञ्जनशर्भेनम्बर्धः मन्यः दे द्वाः दे॥ दे भे दे चे द्वाः द्वाः देवाः विद्वाः स्व

दे:द्रमाम्बिमामी:स्टायविदाम्बिमा दे:क्षे:ह्रमार्सेम्बस्यस्क्षीमावस्था दे'क्स्यश्चदे'धे'द्वेंश्चर्यूद्वा दे'द्वा'ग्रेक्ष'में स्टायबिक्ष'ग्वेंक्षा १०

चवि'च'चर्चेर्'चये'न्भेग्रम्स्स्रास्ट्रायदीरस्रेग्रास्यादी।

मञ्जमश्रक्षमश्रक्षित्वेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत्।।
दे स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत्।।
दे त्वा क्षु स्त्रेत् स्त्र स्त्रुत् स्त्रेत्।।
द्वा त्वा त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रेत्।।

दे.ज्ञ.सक्त.सम्ब्राचहेत्र.तम्ब्री स्थान्त्रीय.पर्यंत्रीयस्था

७:दाः क्रें शासकें मानी दिश्या शास्त्र साम्बर्धाः स्वार

हैरःदद्देवःदेःधेःग्रेदःघःहेत्।। सरःक्रेंबःघःदरःक्वेंसःघःबद्।। ११

ग्रह्मअर्थे यत्र स्त्र र्वे वर्षे वर्षे

14 अर्देव हैंगब कुव कु ब यउन बूद कुन बुँ न बेंग

हिटायहेवात्त्रस्यायम् सेहिंगाय। देन्ध्रम्येस्यविदाक्तसम्बद्धाः कुटाद्रायविदाद्यकेवार्थाः धेव॥ १० वेद्यार्था।

तुन य अर्दे मुक्ष गुक्ष ग्रुट हैंग यक्ष्र य दी।

म्बिट्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिम्स्यः स्थान्त्रिस्य। म्बिट्ट्रिस्ट्र

देवे के के स्वरं में के से विकारी।

चर्व या अर्रे किस क्रीश पहुंव हूं वा चर्षेव ता थे।

स्याप्तायहण्यायिःहेत्राच्याः श्रीमा यह्याययत्स्यायाण्येयास्याय्त्रीयास्याय्त्रीयाः यह्याययत्स्यायाण्येयास्यायाः स्थित्याः स्याप्तायाः स्थित्याः स्थिति स्यापिति स्थिति स्याः स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थित

यमुद् यः लूटशायहेव प्रश्नेव या वी

बेशकाश्ची तर्वोदाय होता स्वाह्मी इ.स.च्या स्वाहण स्व देशी श्री सञ्ज्ञ द्विम्यार्थे र या। इस्राया गुत्र हिर्से प्रस्ति स्विम्या विद्यार्थे। विद्या वश्चुवाय स्विम्यार्थे स्वयं विद्यार्थे।

> र्हेन्यस्य धिन्ने के सिन्द्रम्य द्रा । महेन्द्र सिन्द्रम्य सिन्द्रम्य द्रा । दे द्रम् चित्रस्य स्र महिन्यस्य द्रा । स्र स्य स्र द्रम्य स्थाप द्रा । १४

ब्रॅ्चाय्यते ब्रॅंच्यं के के त्या के के त

र्केशन्तिः द्वीद्रश्चर्यान् वीद्रश्चर्याः द्वीद्रश्चर्याः देव्यक्षत्रः विद्रश्चर्याः विद्रश्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्ययः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्ययः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्ययः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्चर्याः विद्रश्ययः विद्ययः विद्रश्याः विद्ययः विद्रश्चर्यः विद्ययः विद्रश्चर्यः विद्ययः विद्ययः विद

क्याम्बुवायदे न्येग्रायायञ्जारेग्दी

न्द्रीम्बर्ध्यः क्रॅब्राङ्ग्यः स्वयः स देश्यः द्रवेशः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

चन्द्रम् स्वाप्तर्थः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

नुग याम्बुनायते केन्तुनायते |

क्षेत्रश्चर्त्वः त्युवः सर्केषः वृत्तः व्या स्रम्यः नम्प्रसः स्वीतः स्वादः स्व स्वादः स्वतः स्वादः स्वदः स्वादः स

पर्वेद्रायश्चित्रात्रायश्चित्र्यं। निर्द्याय्यं कार्यक्षेत्रप्रयोक्षय्ये प्रमुत्तायः वे विकास्त्र विकास्त्र विकास वितास विकास वितास विकास विकास

देन्याः संस्थान्य

क्यायात्र्वात्त्र्यायात्र्यायाय्येषा। र्वाक्त्रात्र्वात्यायात्र्यायाय्येषा। र्वाक्त्रात्र्वायायायाय्येषा। व्याक्त्रायायायायाय्येषा।

> यश्रम्भाष्ट्रम् व्याप्त्रम् स्त्रीतः स्त्रम् व्याप्तः स्त्रम् व्याप्तः स्त्रम् व्याप्तः स्त्रम् व्याप्तः स्त्रम् विष्यः स्त्रम् स्त्रम्

यहंग्रस्य धेव स्टम्स्य विश्व स्टम्स्य स्टम्य स्टम्स्य स्य स्टम्स्य स्य स्टम्य स्टम्स्य स्टम्स्य स्टम्स्य स्टम्स्य स्टम्

गश्यायः स्मानम्

यक्ते द्रम्भुवित्यार्थेष्यस्य द्वा। वित्रविक्षाः स्वीत्यायक्षेत्रः यक्ष्यायः द्वा। व्यवस्यायायक्षयः याद्यस्य द्वा। व्यवस्यायायक्षयः याद्यस्य द्वा। थि:मेशन्दाने पर्शेन् वस्त्रान्दा।

याकेव च स्वावास मान्य मा

रुभायात्वयायरानेबायराचे॥ ८५ खेबार्ख्या

यश्चित्यक्षेत्रः तर्त्। स्टान्त्रम् स्ट्रीत्यक्ष्म् प्रस्ति वर्षेत्रम् वर्षेत्रम्

५८ सं अ५८ संदे जिंदश क्रेंट पहुनी

स्त्रम् सुर्मे त्यात्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्तर्भ स्त्रम् स्त्रम

बह्बाक्चित्रः श्रुरः वर्षेत्रः प्रदेशः प्रदेशः वर्षेत्रः प्रदेशः प्

क्रिंबार्क्केव्रायः प्रस्पादेवायः स्थी। स्वाक्षेत्रः याद्यात्येव्यायः स्वित्यः स्वाधित्यः स्वित्यः स्वतः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वतः स्वतः

ग्रेश यदे यकुर्दी।

पक्कित्रसम्बद्धित्वास्यम्बद्धित्वास्यम्बद्धित्वाः म्याप्त्रम्भ्रेष्ट्वास्यसम्बद्धित्वाः म्याप्त्रम्भ्रेष्ट्वास्यसम्बद्धित्वाः स्वाप्तम्भ्रेष्ट्वास्यसम्बद्धित्वाः

बिश्चेत्र.तपु.र्फ.यू।

র্ষশ্বরার্থীর্মরান্তির্বান্ত্রীর্বান্তর্বা) ব্রহারিরের্মান্তর্বান্তর্বান্ত্রীর্বান্তর্বা) ব্রহাররার্থানির্বান্তর্

र्देश्चियःर्थेट् स्टेश्च्यःय। र्हेश्ययेट् यट्याकेट् देश्च्यःस्। बेश्च्या। विश्वयोग्य वग्रयाव्यादर्देन्सुरः स्वाप्त्रयान्या श्चीदसारायदाद्वाः क्रिंसायक्षेत्राद्वा ५० वश्चवायार्वेदश्रश्चाश्चीमहिंदान्दा। वर्नेन्याम्यस्यार्भेन्यान्ता। शुःद्वः १८५ बः ५८: याईषाः गुवः षार्हेटः॥ श्चे त्यायान्याकृता स्था देवा विष्

के.नपु.चरी

वर्देशन्दाष्ट्रियायाव्यक्षेत्रायान्दा वर् वहरम् शुराधवे मात्रकार्य हो। यन्ग् यर्द्धेन् ग्ववन यायक्षाय न्दा। श्रेन्वेदेख्याचीख्याच्युन्दा। ५५ र्हें अय्यक्ष विस्काद्द स्थित से विष् र्में प्याप्त के में के के किया के मार्थ वद्वार्थे वदि वे द्वारा श्वरका व।। श्रभृपादीयार्भिया । प्रश्ने

त्वायदे यञ्जानिकाती

ब्रुव-दर-कुल-व्रियस-पर्व-द्यान्य प्रमान्त्रकात्म प्रमान्य क्ष्यान्य क्ष्यान्य क्ष्यान्य क्ष्यान्य क्ष्यान्य क्षयान्य क्ष्यान्य क्षयान्य क्षयाच्य क्षयाच्य क्षयाच क्षयाच्य क्षयाच्य क्षयाच्य व्यवस्य व्यवस

त्रश्चरश्चरश्चेः त्व्यायर्देषाः यात्राष्ट्राः व्याप्तः स्वाप्तः स्वापतः स्

वतुब्र वदेश्वर घु है सु दी

प्तिनान्द्रक्षेश्वराह्मे । ५० व्यक्षान्द्रक्षे । ५० व्यक्षान्द्रक्षे । ४० व्यक्षान्द्रक्षे । ५० व्यक्षे । ५० व्यक्षान्द्रक्षे । ५० व्यक्षे ।

त्यश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त् द्रमृष्ट्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश द्रमःक्षान्त्रश्चान

वग्राग्वरायर्द्र्युसर्केग्निराद्र्या। श्चरकायायदान्याः क्रिंयायक्षेत्रान्तर्भेतान्तरा पश्चप्यार्थिदश्रश्चरश्चरश्चरिट प्रमा वर्रेर्प्य इस्रम्य वार्क्केर्प्य दर्गा शुःदवः वद्शः ददः यदेषः ग्रावः यदिदः॥ बी:बुयाय:दर:कृपायोद्या ५५ डेबार्बेग

कं.तपु.पश्ची

वर्देशन्दाष्ट्रियायावित्रायान्दा। दर्वस्याम् स्वरं मान्यान्य स्वरं प्रत्ये । यन्यायकून्याववायायक्षायान्ता। श्रेन्वेदेःवश्येुःवस्य यञ्जन्य । ५५

र्देशयम्बावेदमन्दर्धित्रः हैः वेषा त्त्रॅं प्रवाद्य के केंद्र नद्वःचॅ तदी वे क्या श्रद्धा वा। श्रस्यवेषारप्रायविष्या ५० देशस्त्रा

र्मायदे पश्चानिकानी

श्चैव-८८-र्स्य-विसम-पर्च-८-पर्स्व-८ श्चुम। र्स्य-स-८-द्वे-प्यक्ष-र्य-र्म्याक्स्य-स्या र्स्य-स-८-द्वे-प्यक्ष-र्य-स्याक्स्य-स्या र्म्य-स-८-द्वे-प्यक्ष-र्य-स्याम्

यत्व यदे श्वर मु र मु र वे ।

प्तमान्दरक्षेश्वरहत्त्वे प्राप्तराष्ट्रियाः प्रमा विकास स्त्रा स्त्र स्

तिस्रक्षाम्बद्धस्य द्वान्यक्ष्यत्यः स्वत्यक्ष्याः स्वत्यक्ष्यः स्वत्यक्ष्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्व द्वान्यक्ष्यः स्वत्यः स्वतः ब्रेंट्य हेर्य अर्डें द्याद्य ॥ दे-दरः तबायायते केश्वाया वै॥ कुंस्यरायाद्वराक्षराया दे: धेबा बावें पत्व पार्विमा ५१ डेबा बी।

न्न=चन्त्रेन्त्वी

इयाधरार्ड्स्य मुख्यानेबादा ५८॥ व्यान्यम् अस्य स्याप्य द्वार्षे द्वार्ष क्षेरहे दर्व के क्रियं से दर्दा र्केशयवयावेत्रप्राचेत्रप्राचेत्रप्राचेत्रा ५३

श्रिश्चेपाद्यावर्षेत्रक्षप्रदा क्रेंबाइयबाइयायाम्डिमानुर्झेव॥ हेंग य गुव ह तर्हे अकाय ५८॥ वर् नेशक्ष र्रेट्वें अर्था हिंदा।

वैगावसदेशयम् सेस्रस्य प्रमा क्ष्मा अर्धेट ता वे अपश्चाय प्रा बेसबर्यान्यान्यान्यस्य विग्राया सेन्यते खेले सन्दर्भा ५५ कवाशयते श्राधीव वार वर्दे द यर। विरागवन रुवे अनुअ वर्गे रुट्या गुन:हः यदगमी दें वें वे॥ क्रॅ्वयाकेट्रदरके सुद्या ५८ वेदासा।

वकुर्यवे वकुर्दी।

बेयबाउव गावाधी निबाधान हा। सर्वियम्भेषायस्य स्थान्ति। श्रदशःभिशःषुरःचबरःश्चियःयःर्दरः॥ ल्ट्याश्चरमहर्वाद्धिरः स्वर्वासुवायहेव॥ ५०

र्वट्यं मेशर्ट्यकुणवाळी विटार्श्वेटाश्चर्यास्त्रम्यावसन्दरा। यस्रस्यविदः श्रेन्यायेद्यान्त्। यश्रदेष्ट्रम्यायायदेश्यकुर्यम्

न्यु परे पर्यः पर्यः या के वा देश

र्बेव प्यमन्यादी सवद प्यमन्दा। सं.ज.स्वायानदात्रीर-चेयार्टा। ब्रेंचबायः सुर्चे कृतुन्दा सरवार् वहनायस्मिन्द्रवी। ५० 24 अर्देव हैंग्य कुव की य पठन बूद केन बेंव थे।

देग्बर्दर्भुग्वर्ष्ठाव्यद्भात्त्र्व।। देवर्व्युद्धत्वुद्ध्यःम्द्रियः

श्राचरुष्याचस्त्रवाचे

यद्वाराधीव्ययम्भिष्याच्याः व्या व्या विद्यासी व्याद्वात्राचीयम्भिष्याच्याः व्याद्वात्राः व्याद्वात्रः व्याद्वात्यः व्याद्वात्रः व्याद्वात्रः व्याद्वात्यः व्याद्य

कृत्य महेन चेते स्माना है।

युंदर्भ्यक्ष्म्याय्ये। मान्त्रेद्धर्भ्यस्य प्रतिक्ष्म्यम् विश्वस्याः क्षेत्रस्य स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धाः मान्त्रस्य स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धाः मान्त्रस्य स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

> केन्द्र्युःन्द्यक्यक्रिःन्द्रा। बेसबक्द्रिन्द्यन्यन्येन्द्रा।

श्रवतःजग्रत्रभागमः देशःववुदः दृरः॥ र्वेन परी सक्त के निर्माद वृत्त निर्मा थे १ इयायाध्यक्षक्रम्याध्यक्षेत्रक्षेत्रप्रमा त्रमाग्री:संताक्ष्य:देश:दव्दःह्री। इस्रायान्त्रमुन्नीयन्त्राकृत्वन्।

नेशन्याग्री यार्रे वातृ द्वीत परी अतारमानी पश्रुत पर्देश अर्देद पर र्हेन्नशयते:कुत्र्यी:क्षेन्यतेहरःगुरुप्यायस्त्रभूवसद्दर्वे ॥ ॥

द्यातविरःश्चितायात्त्रयात्रेयावि॥ वर विद्यास्।।

श्रूपश्यात्रेशया वस्त्रभ्या

मीधृश्रायात्मयाश्ची मिद्दीत्मया मेश्राया मिद्दी प्राया मिद्दी मिद्दी प्राया मिद्दी मिद्दी प्राया मिद्दी मिद यमान्दा न्द्रस्या । न्द्राचा यस नेस हो प्रदेश्यदायमा दी।

के.सम्बार्यराचर.चे.चयु.बुर्गी देन् ग्रीकार्सेन सेना सेना सेना सम्बद्धान्या। स्वारिकायान्द्राध्यायान्द्रा ररायबैदान्दादीने वीता विकासी। विवेशयात्वसानेशन्द्रभावावास्या ववार्ष्ट्रभान्या 26 अर्देव हैंग्य कुव की य पठन यूट केन क्वेंव की

चबुर्य हुरी डे.म्री चड्ट ती क्ष्म मक्ष्मी टिट.त्.जम.बी रट. चबुर्य ट्रेटी डे.म्री चड्ट ती क्ष्म मक्ष्मी टिट.त्.जम.बी रट.

> यम्भानिकान्तेन् ग्रीस्त्यायात्री। दस्यम्बान्धायदे यनेत्रायात्वेन् मामी इस्रायासीन्द्रीम्बार्झ्यात्रकात्री। इस्रायासीन्द्रीम्बार्स्यात्रम्

मानेश्वाय र्देन दी।

क्रूट्य केट्ट क्रिक्य क्ष्य क्

मह्याया है कें दी

पर्वियामर्बेर्यस्त्री

दे-जःह्रमान्यःस्मान्यःस्त्यःश्चीश्रा।

न्वस्यायन्त्रान्यस्य वर्षेत्रस्य देशस्य के.त.क्र्याशक्र्या.च्री

> बायकुन्यायबायस्थ्यावस्थावेशा श्रीःगव्यामुद्यायम्यम् क्रॅब्र'ग्री'अर्क्रेग'हु'त्शुर'यन् र'दे॥ **३**:ब्रे×लेव बरबा सुबा ग्रेबा। अधिव व बार्के बाह्म अबाया या हो न बाह्म हो। प वे बार्से।

बादुबायायर मुलायायेवी विवास्त्रान्य सिन्त्र स्थान्य सिन्त्र स्था क्रॅबर्स्या यमाग्रीर्द्ध्य क्रॅबर्यायम्बर्ध्यत्येत्रायक्ष्यायम् । १८८ व्यक्ष ब्र्बर्टाविट.तर.चक्रेच.त.ची

> रट:बुट:चर्ग'केर'र्हेग्बायदे'खेर। गवव मुंबायस्व यदाशे दर्गेशया। यश्र-स्पूर्वित्ये यो भीश्रावी॥ विष्याने त्रित्र विषया विषय

ग्रेशय श्रुत्रोद्ध मार्थे सर्थे व स्था दी। गटगटर्देव वे गटगटणा इ.के.इ.केर.थेच.उट्टेर.त्री

देने पर्देव देन दिन्दे ।। ब्रु. बेद गुरु देने क्षेत्र ब्रुट ।। वे वेश बें।।

म्बुयाय त्ययाची रे रे दे दे |

णहर्त्वहँग्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्य

चब्रीयार्ब्र्येत्रायसादेशायन्तेन्।चक्रुवायात्री

त्मीययाधेर्क्सन्त्र्यक्षायाधि॥ त्मीययाधेर्यम्॥ हेर्स्स्यायाधेर्यम्॥ हर्स्स्यायाधेर्यम्॥ हर्स्स्यायाधिरायाधेर्यम्॥ हर्स्स्यायाधिर

वदःक्षॅदःकेद्रःयःक्ष्मिश्रायःधिश्च। मञ्जमश्रक्षेम्श्रस्थः यदेवःश्चितः यञ्जेद्रःय।। मञ्जमश्रक्षेम्श्रस्थः योदः स्वम्श्रस्थः।। इत्रायः उवः वे स्वस्ति। १० डेस्स्स्याः।

चित्रमायान्त्रमा अर्थान्य स्थान्य स्था

यर क्व रदा वर्झेश त्यस स्ति । रद से सब्द त्यस विद यर क्व त मिन्ना अर्देराचक्षेत्र यात्रा मुकायराचन्तराय्री इट्टॉ अर्देर पहुन वै।

> यर्व'र्र्यदेव'यायर्बेर्'यार्रा। नेशयते सूर् उंग इस यवे धेशा यम्भेश वेदायाम्बर्धरावदीयम्। यवः विवायक्षायः यदीः यम् दिशा ११ । विवासी।

महिश्रयाः मुश्रयम् १ देश

ने प्रविद केर प्रमासम्बद्धाः यव र्ख्व हेव य हेव से र खेरा। इयाम्द्रश्यक्षात्रे सेव याद्रा केव में कंद या येद पठकाद्या ११

र्क्षन् योन्यान्यायवययोन्यन्या। देरः वाद्यस्य बुवासायः स्वासायः त्या। बदबाक्कबानेन्द्रिदेशवहेंबद्दा ब्रुट्येन्द्रिययेन्स्ग्रिन्हा। ११ नुस्रकात्यः स्वाकायः सूर्रेट केट्र ५५ ५

श्रदशः मुश्र हो देवे देवे दादा द्वा

इस.तर.विर.धीय.लूटश.चर्रंश.टेट.॥ वियादायाद्दावद्गीवासेवा। १० शुःदवःवन्श्रवदेवःवेःवेन्तिनः श्रदशःमुशः इश्रशः गुरायशुदः तः स्वाशा श्रिवाक्षेत्रविद्यायः स्विवस्य। इसायागुन्यविवार्द्धवात्यावी॥ १५ यन्गानिन्यवसानि सेससाउन् न्या वर्गेर्र्र्र्स् र्क्रवाश्वराष्ट्रियः विद्यस्य । वायानियाने द्या अपन्या १८ वेया स्था

महिकायायर्क्क्रियायायामहिक्षा वर्क्क्रियाययाची चेत्यात्रा चेत्या क्व क्ये चर्स्स्य त्यस्या । प्रत्यं चर्स्स्य त्यस क्ये क्ये प्रत्ये।

> गुन्द्रवाले प्रमानमा वर्त्र-दर्रेव संस्थायश मुयादर।।। गर्देर्पस्यम्स्य वित्रास्य स्थान व्यास्त्र प्रमानिक स्त्र के त्रा के स्त्र के त्रा के त्र के त्र के त्रा के त्र के त्र के त्र के त्र के त्र के त

महिस्या होत्या उत्पृत्य में स्वाप्य प्राप्य महिस्य विस्

बना से न दें। निरार्धी बन पर्वस पर्से सायसाय प्रवि है। स्थाप प्रसिस प दर। देःयः वर्ष्ट्रेन् वर्गुर वर्ष्ट्रवाका यः दरः। वर्ष्ट्रे व दरः। धिः रद वर्दे।। र्द्ध श्रेश च च क्षेत्र च की

> ब्रॅबयम्बर्मिन्द्रिन्दर्दि॥ रद्रमाब्द देव द्रमाब्द देव द्रमा इयागश्यामेशनु दे वदावी। सुर-प्रतिर-प्रतिस्तित्र में है।। १५

श्रेंश्चरम्ब्यायाम्बुयानुःवर्देन्॥ सुट-ह्रिरेसुट-श्रेंग्शन्त्रे:चःधेश्रा ने'यदाक्रुयाम्बुयाने'सूराव॥ इयायाने सुम्बतुन दुः वर्देन्॥ १० डेबार्स्या

विश्वायाने या वर्षे दायगुरावस्वाबाया दे।

मेश्रास्यायार्स्याद्वेदायाया। स्थानपुरम्बस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य न्गु र्क्षव ग्राह्म अधिक महिन्य निर्मा यगुरप्रप्रदेशमध्यक्षपरायर्दिन्॥ १० डेक्स्स्।

निश्चम्यायाम्भायायात्रुन्। द्वित्तात्रा इस्रायान्या सस्वाकितान्या वयबार्टर एवं जायार्टर। श्री अधिव विष्य श्वरायार्टर। रेवे या सव र्ज्ये 32 अर्देव हेंग्स कुव की स पठ र इस के र केंव भी

न्दः वरुष धर्मे | न्द्र में में दे

ऍ८अ:सु:चर्क्ट्रं:च:सुर्:यर:उत्।। दे:धे:सुर्:य:अर्क्ट्रंग:धेद:दें॥ देश:र्से॥

गरीय याद्रसायादी

नेवीन्त्रीम्बास्योन्द्रसम्बन्धाः ११ विकासी।

ग्राह्मस यासस्य केरादी

ब्रेवर्डियार्थेषायस्वरहेर्दि॥ डेश्रर्थे॥

चब्रे'य'बचबान्दरख्नेयायांद्री

श्रदशःमुशःहेशःशुःधैःयःस्ट्रा। ११ वेशःश्री। म्यशःयस्थःयर्भःयर्भःश्रीतःस्यःयःद्रा। स्यशःयस्थःयर्भःयर्भःयःयेतःयःद्रा।

र्भायाश्चीयार्म्भियात्री

[नस्रकाम्बुसार्ह्मन्यायासम्बद्धाः देश इनायान्त्रेयायदार्थेदान्यायसम्बद्धाः

कुर-प्रत्वेर-प्रकेष-विश्व

वर्षे:वःमल्वःवे:द्वयःमञ्जयःवै॥ पर्केर्वस्थ के त्युर पर्वा केर दें।। ११ डेस से।

यथे ताईश्राश्चार्णात्रर यादी।

वयश्रद्राधीर्यभग्राचर्ग्यां मेशा न्बो नदे स्वाधी रूट्या हेशकुषी महाधेत में दाया पर्झेम्यायेषुरायरायदीरायहेंद्राही। १६ वेशसी।

बिद्धेश्वाताञ्चवी अर् पर्वेश्वेशायशाया बिद्धेशायशा पर्वेश्वेशायशा पर्वेश्वेषा या दे.ज.श्रूबाश्चीश्ची द्रमान्यांची ।दरायायर्ह्ममाजमान्द्रसा पश्चियःयः दे।

> ने वी दें के ते ने अर्केषा के त्या रावि ता अर्देव चर तर् के है ।। क्रॅबाक्स्यबाद्यीग्बाक्षुःसेदायमञ्जी। गहिंदायर द्वेदाय देव केवा केदा। १५ डेबा बी।

ग्रेशयन्यान्यार्थश्रीश्राम्या

श्रदशः सुर्शः प्रदेशेव 'दर् श्रुवेव 'श्रेणश्र' दर।।। वयश्यास्त्रवश्याम् वर्षेत्रया

34 अर्देन हॅंग्य कुन की य नरु इंद केंद्र हेंद्र हेंद्र होंद्र होंद्र होंद्र होंद्र होंद्र होंद्र होंद्र

दर्नःत्यर्श्वेश्वयदेःकुःन्गःधेव।। क्रेंशःग्रीशःबेंदशःयदेःकुःन्गःवे॥ १५

म्बिश्यात्रक्षेत्रत्यक्षेत्

> सट्यः मैयः स्यायीयः सुवः शिया। ४७ जुद्यः सूरी। मैजः स्यायं प्रयायोः देवातः हो। वेषयः सुर्यः सुवः यायायः स्टिन्।। वृष्यं सूर्यः सुवः सुवः यायायायः सुवः सुवः स्था

मश्रुयाया वेगान्यत ग्री मेव हुन्याया दी।

शन्त्रात्यावी केवारी थी। क्रेव द्या त्या क्रिया का दी साथी। गलेव में हुर हते हुर हाया। र्श्वेमश्रायते त्याय देश हो। ५० वेश श्री।

चले य हो में के मी से में प्राप्त में में

दे'य'गुव'ग'श्चरस्य पंथेशा यमने पहला दरमान्या मुन्दा। अनुस्रायः ने द्रातीया निस्ययः मुश्रुसः मी । । सन्दर्भागान्त्रसः मुश्रुसः मिस्रायः मी । ।

विश्वास्याग्री:वार्सेतानुःध्वेदायदेःसदारम्गेनीयसृदायर्रेश्वासर्देदायसः ह्नेग्रचायते. क्रुवः क्रीः स्वाप्तेत्रः युक्षायः यक्षाः श्रूपका यक्षित्रः यक्षित्रः यक्षित्रः यक्षित्रः यक्षित

श्रम्य वास्त्राया गर्वः भेषा

🥦 विश्वयायायमञ्जीत्वयायार्ग्ययान्त्रायान्त्रस्य प्रमान मिन्द्रेशको न्द्रशन्दा अभिन्याम्बार्श्वराष्ट्री निर्द्यन्द्रिरायः विश्व है। विश्व के प्रति माने प्रति के नेशनी रदायबेद यायबे है। दें वें अवदाय विशासिय मित्राय । असंद 36 अर्देन हेंग्स हुन ही स यस् हुन ही र हुन भी

मानेब सूर्य । रिट सूर् सूर्य भवन भवन स्तान होत्या शुः मावन स्तान । स्तान भवन स्तान स

कुंर्रवायार्रवायववायाय्येत्।। देन्त्वायम्बद्धायात्वेद्वायम्बद्धम्। दुश्वस्थ्यस्यव्यायात्वेद्वियाद्वेम्। विश्वम्यायार्रवाद्वेद्वायम्बर्द्द्वा। १ डेश्वस्।

ग्रिशयास्त्रस्त्रस्य स्टित्त्र रियायी

देवे अर्क्ष्य अर द्येणवार्क्के व्या। वयवास्राधिव यवारेट या हे। वेदार्के।

गश्चित्रायाः वयश्यायात्रायाः ते । यात्री

यदःद्वाकुःयःकुट्-तुःचन्द्र॥ १ डेशःश्री।

ग्राचित्रक्ष्म्यास्त्रम्

तुश्रमाशुक्षार्द्वेषायाये केंश्राह्मस्राह्मरा श्चेव सेवाय प्राप्त स्थ्य स्थित सम्बाया र्श्वेन प्रति तर्ने सन्धा अध्य स्थित स्था १ वेस स्था मानेश यानेते मानेन याने।

श्चेव यार्शेग्याययम्म यहिव सेन्॥ मानव द्यादे त्यादर्द्द भेदा या ट्रे.व्रे.क्याश्रायद्राश्रवदःदर्ग्यायशा मुजायार्ज्ञम्बायारकम्बायाया । ८ वेशस्त्री चीश्वभारा प्रचित्राती ता अक्षेत्र पहेंत्र मिराचित्र प्रचेत्र प्रचेत

> क्रूबागी तामाने स्टायविन मीबा। न्वेव यदे ध्रीयव ने अव के ना

चले यामाने व संदि।

क्रेंबाक्रुयबान्द्राचिवाचिवाचन वे॥ नेश्चायशक्तवायाः ह्यूटाचा धेवा। ५ वेशा द्या।

कॅ.त.बच.तपु.स्याय्री

अव्दानायासँग्रामगामायायस॥ देवेद्भवयम्भवयम्भवत्। देवःस्। 38 शह्य हूं बाल मिय की सामकर झर होर झूँच श्री

र्वेग्नात्रम्यम् मुक्तम् वियाय द्री

न्त्रन्थयः श्रीष्ट्रवायः स्त्रीत्राष्ट्रीयः । देवीयस्थान्त्रीष्ट्रवायः स्त्रीत्। ५ देवार्स्य।

पर्वे.त.सहग्रापर्वे.प.वृ

ने क्षेत्र मुद्र क्षेत्र क्षे

रदा अवभाताकुरावर्ष्णभावत्। रिटाव्यार्याविवादी

मञ्ज्यस्थित्रः देशे हिमार्स्स्य स्टिस्स देश्यः स्वित्रः द्रद्रस्य स्टिस्स देश्यः स्वित्रः प्रदेशे देशे द्रिस्स स्वित्रः प्रत्यामा प्रदेशे स्वित्रः प्रदेशी स्वित्रं प्रत्यामा प्रदेशे स्वित्रं स्वित्रं स्वित्रं स्वित्रं स्व

गवव यः रगः यश्ये दः मदः ददः॥ ब्रूट्य इस यतुव में बा छे द्वी। वेश बी।

ग्रिश यास्त्रस्य यात्री पात्री

ग्रम्भायार्थेग्रायार्त्तेअअन्य। इस्रायविदेखास्त्रस्य स्थिति १० डेबार्स्या

विश्वयाय अर्देर त्ययाय विश्वति। विः नेश्वत्र्वर रेव या अर्देर प्रकृत रदा ह्रेंग्रायाक्त्रायरायम्दायं । रद्यां अर्दरायम्बावी

> र्म्या पर्मयाया स्वाधाय देवायाया क्रॅंब:वेब:हेब:बु:वेब:घ:५८:॥ वर्जेन् ने अञ्चन् उचेषा यन्षा केन् वर्षा वियाने वार्षियात्वा अर्थे द्वारा विवासी ११ वेदा सी।

मक्रिया द्विम्या या मुकाय र प्रमृत्या दी।

गञ्जग्राह्मायायव से हमा सेवा। अःश्रुक्षः अः दग्गग्रह्मः यः क्रिंग्रह्मः ५८ः॥ यानवःवर्क्षवाद्यान् स्थानः र् लूरशक्षियद्भय तथा ग्रीयाय दरा।

अर्देव हैं गब कुव की ब चठत बूद के ते ब्रेंव थे।

40

र्देन् केन् नी अन्तर्हेन् येन् न्द्रा। यादिस्य प्रेन्द्रिंद्य प्रहेन् प्राधिया। यात्रवासी क्षेत्र प्राधिया।

न्भेग्रायः भेन्यः स्वेन्यः न्हा। भेनः रुः इसः न्ग्यान्यः से व्यक्षः॥ स्वः र्वेदः स्वनः न्दः व्यवश्यः वे॥ सर्वेदः नुः स्वः से र्वेन्॥ १९

सक्त्यः प्रनिष्ट्यः स्वेषः प्रमा निष्यः स्त्रीः स्तर्भः स्त्री। निष्यः स्त्रीः स्त्रीः स्त्री। स्त्राचः स्त्रीः स्त्राचे।।

ग्रेशयास्त्रित्यम्ब्रुसम्ब्रीयस्यति।

ने भूर यहे न्हा स्वाद्य स्वाद

नेश्रास्याग्री सार्स्याष्ट्राष्ट्रीय प्रदेश स्वासी प्रमेष प्रमूच प्रस्थ सार्

हूं बाबातपुरमुन् मुन्ते मुक्ताये स्वर्धायाया स्वर्धायाया स्वर्धायाया

अपयावुता इयाईवयार्बेराया

पहित्रायर इत्ते वित्रायर वित्राय वि

> म्बिन्धस्यक्षेत्रे सम्बन्धस्य स्था इस्रायः बेश्च स्थान्त्र स्थान्

42 अर्देव हेंग्ब कुव श्री ब चडन बूद श्रेन ब्रेंव थे।

येन्यिद्वयायव्याव्यात्र्यः है।। येम्बित्यं स्थायित्यः प्रमा यदेव्यः संस्थायित्यः प्रमा ययायादे वेष्यस्थायित्यः प्रमा

विश्वादात्वम मेशानी द्वम द र्श् दुवादी

ग्रह्मरायात्र्यायात्र्वेत्यात्रीत्र्यायात्री

श्रेभःश्चित्रः त्रिक्षः श्वेद्यः त्रिक्षः श्वेद्यः त्रिक्षः स्वेद्यः त्रिक्षः स्वेद्यः त्रिक्षः स्वेद्यः त्रिक्षः स्वेद्यः स्वेदः स्वेदः

श्रुभाद्धः इ.र्मा.रमारु.यबेरा। ५ ड्रेशः श्री

ग्रेश य प्रह्मिंस सम्बित्र ग्राट वर्गा दे।

स्यामुक्षायम्भवात्रात्त्रात्त्रीत्त्राः विश्वास्याम् स्थान्यास्य स्थान्यास्य स्थान्य स्थान्य

ग्राह्म प्राप्तः

ग्राह्म व्याध्य व्याध

44 अर्देव हेंग्य कुव की यान्डन यूट केन केंव थे।

त्यरः तम्भवः स्त्रीः स्वाः केतः तर्माः देशः तमुद्रः तमः स्वतः स्त्रोतः तस्तरः त्राः ।।

व्यात्राक्षेत्राक्षेत्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र व्याद्यात्राक्ष्यात्राच्यात्यात्राच्य

देखेद्दं स्वयं सेह्मा दन्न स्वरं केव् क्षेत्र सेट्टं प्रतः॥ देवे द्वायः सक्यस्य द्वायक्षा ११ वेस्स्या

चित्र प्रकृत त्र्वित के साथा का सहता है। विद्या प्रकृत के वित्र प्रकृत के विद्या के स्वर प्रकृत के स्वर प्रकृत

गञ्जगशर्सेग्रासन्ये धी सर्द्व सान्दा।

स्याप्त्रम्यायस्य स्था विद्यास्य स्था

गविशयार्श्केष्

ट्रैंग हिन्द्रसम्बद्ध्यक्षसम् छ।। १२ वेसः स्।। इंग हिन्द्रसम्बद्धानिम् यनसम्।। ग्रुमः व्रुव्य य सक्ति हो।

निस्ति, अर्क्ष्य, हे. अस्त्य, हे. देश्या । स्रेश्चा, हे. त्यर में श्रा वा श्रेशा। स्रेश्चा, हे. त्यर हे. त्य हे।। स्रेश्चा, हे. त्यर हे. त्या हे।।

सक्त-कृत-पश्चन्तान्त्री।

स्यान्यकृत्व-पान्त्री

स्यान्यकृत्व-पान्त्री

स्यान्यकृत्व-पान्त्री

स्यान्यकृत्व-पान्त्री

स्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यान्यकृत्य-प्रम्यान्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यम्यकृत्व-प्रम्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्यकृत्य-प्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्रम्यकृत्य-प्

देन्द्रवेद्द्रम्भेगश्चर्यः द्युद्द्रम्पः द्वितः द्

6 अर्देव हैंग्य कुव कुष्य चरु यूट कुट केंद्र केंद्र

केवःचॅरःशुरःत्रःकंतःभेतःत्रः॥ इसःवेशःचश्रृवःतुःभेतःचःत्रः॥ १५

बेसबायक्षरासेन्द्रन्तेबायादे॥

मेलू.च.ज.झूर्यश्च नेश्च चे.चे.चे.च.वी

ने प्यक्षणावन प्यम् ने प्रविद्या १५

श्चयःयश्चरे यत्वेत् के नहिंगशह।

न्त्रवर्षायक्षेत्रयाक्षेत्रयः

चमन्द्र-भेदाराकुर-भेदादानी। १० ड्रेस-स्वी

गहिसायासेसाइसायसुर्वुगागीसायसासेसाग्रीसस्त्रातेत्रास्त्रायासी

क्रॅंट केन् सस्त्र सेन् पर काय न्या

र्श्चेत्रयाद्वयायम् स्थायस्य स

क्रॅंशक्तेन्द्रस्ययस्यमुग्सेन्न्राम् १५

२५:ब्रे:ब्रेन्:न्दःक्यःश्रेःक्व्या रुपःन्वे:सस्द्रःक्षेन्:ब्रेन्:व्या ययः नेशक्तिः ग्रेष्ट्रम्यश्चीश्वत्वी। नेशयदेः यद्वतः केत्येवः यस्यवित्।। १० डेशः स्वा

ग्रुमः मेश इस पर्दुः नुगागीश इसामित्र की सक्त की प्राम्य पर्दी।

गुनःहःदह्रम्'अञ्चिनःमदःधिनःद्रः।। अःअर्थेदःश्रृंदःधरःअर्द्रःधःद्रः॥ दहेगःहेनःश्रृंदःनेदःस्यःधःद्रः॥ पर्हेरःदरःभेषःअर्द्रःअर्द्वःश्रुयःअर्द्र॥ ११

पत्ने प्राप्त वित्र प्रमुख्य क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

गर्भश्यः मुश्रायमः चन्द्रायः दे।

द्रवा-वि-श्वद्राध्यान्यस्थान्यस्थान्यस्था। यद्यवास्य-त्यवाद-त्यस्य-स्य-स्वानस्य-स्वान व्यवस्य-स्य-त्यक्ष-स्य-स्वानस्य-स

स्वार्यः स्वरं स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वार्यः स्वरं स्वरं

सूय वेदःयदे सस्त नेद ने।

यवः प्रयोग्दरः श्रुवः यः प्रः॥ श्रेः इस्रश्रः श्रेः वेः श्रुवः श्रः प्रवः प्रः॥ यावश्रः प्रदेवः यः वेश्वः श्रुवः प्रः प्रः प्रशः स्राह्मेवः यः वेशः श्रुवः यः प्रः॥ १७

व्यक्षः सुन्यत्यः प्रदेशः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत स्त्रात्यः स्त्रात्यः स्त्रात्यः स्त्रीत्यः स्त्

इया य देवे दिवें केंद्र मी अर्बन केंद्र की

त्र्वार्धेर्द्याह्मण्याद्वार्ध्यस्य स्वार्धित्र स्वार्ध्य स्वार्थ्य स्वार्य स्वार्थ्य स्वार्य स

50 अर्देव हैं नवा कुव की बावन बूद के र बेंद बेंद की

म्बिस्यन् वर्षे येन् क्षे येन् न्या। १०

ने चलेक केन के से निर्माण

र्ह्स केन चरु कुष चन्य केना।

सर्क्ष्यं ने ने ने स्थान विकास स्थान विकास स्थान स

यदी प्रायम् स्टा सह्य विष्या विषय स्ट्रिंग यह स्टा स्ट्रिंग स्ट्र

स्त्रं स्त्र स्रायाः स्रायाः स्त्रं स्त्रं

मुद्रेश्राच कुश्राचर चन्द्राच दे।

क्रूबास्त्रयबास्यायाः वसवारु ५ दि॥

मेश्रायदे:मेश्राप्त्यार्द्धयार्द्ध्यार्थ्याः ह्रियाश्रायदे:मुद्दार्द्ध्यार्द्ध्यार्द्ध्यार्थ्याः स्वाश्रासुत्पार्ध्यार्द्ध्यार्द्ध्यार्थ्याः

मानेश्वाद्यात्वर अस्त्र अक्रमानी पार्श्व अप्तर्भ प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

र्दे त्यः इस्रश्चः गुः द्रिश्च व्यायः व्यद्देन्। इस्रायः उदः वस्रश्चः उदः विदः यन् वस्या दे द्वाः वेदः व्यः स्रम्भा इस्रायः द्वाः वे व्यक्ष्मः यन् द्वाः वस्य

हैरःशुरुरेग्विदायर्बेर्यायही॥ रूरम्बदाहेदारुदायरेदानेदायी र्बेदार्बेर्यादेदायेदायेदायहा द्वेदार्बेर्याद्वेदायेदायहा गलव रगरे या दर्गे र या दर्गे । ८०

ग्वन् ग्रीःहेन् उन् श्चीन् सँग्यान्दा।। व्यार्थितः द्वायद्दः सँग्राने ग्रेन्॥ व्यार्थितः द्वायद्दः सँग्राने श्ची।। इस्रायात्य द्वायात्रात्वायात्राः ५)

त्यक्षात्राच्यात्र्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्य स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्यानः स्थानः स्थान

यद्यामुक्षप्रमेश्वर्याः क्षेत्रप्रदेश्वर्याः क्षेत्रा ८० यश्चर्याः क्षेत्रप्रमेश्वर्याः द्वर्याः व यश्चर्याः क्षेत्रप्रमेश्वर्याः क्षेत्रप्रमा व यहाः क्षेत्रप्रमेश्वर्याः क्षेत्रप्रमा 54 अर्देव हें ग्रंब कुव की या वर्ड यूट के र क्षेत्र की

हम्बार्कः के सुनिन्न मिन्ना। र्देन न्दः से स्वर्धेन स्वरुधः प्रवर्धः न्दः ।। स्वरुधः स्वर्धेन स्वरुधः स्वरुधः

म्बुयायायर्वेदाययाग्चीःब्रियायीःस्वायतिःस्वायायस्यः द्वायायावित्रः।

मध्राताम्बरायम् द्री।

त्यून्यक्ष्म्यायः त्र्र्वेन्यः स्वायः स्व

हनारिःश्र्यस्थानसःश्रुरिःश्रेरःररा। वर्कें या इयायर द्वा के द्वारा

स्टार्सेग्साचरक्त्रचेत्रस्थसन्दा। क्षेत्रवादादादादाद्या विश्वादात्र विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्वादा विश्व यतियायग्रीर श्रम श्रे.या श्र्याश्राया र्श्वेर.रेट.ह्रा.ब्रे.ब्रेंर.य.ल्री ०५

ग्रद्भायः अस्त्रित्रः यग्राग्यः प्रदा क्रॅबर्वि:ह्यार्डब्राक्षेर्द्रश्रेष्ववारित्रा रदावी सायादेशया केद्रा। सःवश्चित्रः यात्रे वात्रसः यात्रः॥ ५०

कॅश ग्री देव दुः श्रेंग गर्ने र या। ने त्रिते श्रीन केषा पश्चित्र विश म्निं स्वायर्वेराचित्राय्याम्बद्धाचित्रा ब्रेन्से र्वेन प्रतिहन्म अन्य स्थित। ५० देस सी।

चबुन्यन्त्रङ्ग्रस्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्यसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानस विर्त्यर की माली रेवे या बारश सेर्त्य यक्षेत्र य से तमायाया वर्सेस यम्राश्ची खेराया व्यवस्याया स्राप्त हेराया निर्माण व्यवस्य वि वयः स्वायन्त्रीयः स्वायः केन्यम् वर्षे । निर्द्यः वर्षे स्वयः स्वी । स्व

56 अर्देव हॅग्य मुव श्रेय चठत ब्रूट श्रेत ब्र्येन ब्रे यम यस्त्र य वि।

र्बेश्वयिः यस विद्याने विद्या

देशतविद्यायम् प्रमान्य स्थान्य स्थान्

बाश्चुअ'य'र्नुचे'य'दी।

देशे कुत्र क्रम्याधित प्रति हो । ५० डेया स्था कुर दिरे कुर स्थाय प्रति प्रति स्थाय कुर प्रति कुत्र स्थाय प्रति स्थाय स्थाय

यदीयागुरक्षसेर्ययम्बर्ययासीयम्बर्यानि

न्द्रस्थित् त्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधि

गुनःहॅन:हुन्देश्वनश्यके प्रशा

यम्य च है।

न्द्रश्चार्यः मह्दिन्द्रश्चेन्द्रया। इस्रश्चार्यः न्द्रत्वे त्यवे व्यक्षे स्ट्रा। इस्रश्चार्यः न्द्रत्वे त्यवे व्यक्षे स्ट्रा। इस्रश्चार्यः विद्यक्षे व्यक्षे व्यक्षे विद्यक्षे विद्यक्षे

महिश्रायात्पव दी।

चुर्रुयः है 'क्षुं' दे 'यवेव 'तु। यदे 'वे 'यदे दे 'यवे 'दे व 'श्च्या चे दे।। चुर्रुय 'दे 'यवेव 'वेद 'यवंव 'वेद।। दे 'यद 'दे 'थे 'यवंव 'वेद 'यवंव 'वेद।। प्रश्रे के का का ।

तुवायत्वशस्यार्स्हेन्यन्वेन्यन्वे।

देवाबाचीवाची:अबाचादावी: वेबाबी। वेबाबी। बेबाबी:अबाचादावी: वेबाबी।

यनुवायायवान्येन्द्रयक्षयावी

58 अर्देव हेंग्ब कुव की बचकर बूद केर् बेंद सी

अर-अंदि-त्ये-धि-ह्याचीश्रही। बय-ॲदि-र्केश-वि-द्वयाय-यमुन्। ५५ डेश-श्री।

वकुर्यः वयः व्यः वकुर्ये : हण्यः हेर्ययः हर्यः व

श्चे यः प्रदेशस्यायाः यः प्रदः॥ दे यत्वेतः के प्रदेशस्य स्वाप्तः ।। वेश्वः प्रदःश्चेतः प्रदेशस्य स्वाप्तः के प्रदेशस्य । स्वयक्षः अविश्वः यः व्यव्यक्षः विश्वः स्वाप्तः के प्रदेशः स्वाप्तः स्वयः स्ययः स्वयः स्व

तर्त्। निराम् ब्रीन्स्य प्राप्ति स्था क्षेत्र स्था विद्या विद्या

त्वन्त्रे द्वे स्त्रीत्यम् त्यात्र स्त्री ५० देशः स्त्री। व्यवः स्रेत्रत्यः स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्याः व्यवः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्यः स्त्रीत्य स्त्रात्रे द्वे स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम् स्त्रीत्यम्

महेशयःबेदःद्वायवे क्वेंद्रःयःवे। श्रेश्रश्रस्य व्यवेषाःहेवःदेःयवेवःतु॥ श्रेंद्रःग्रीःवदेगाःहेवःश्रःद्वाया। दे.ज.र्वात्तरःश्चित्रः क्षेत्रा। ५० डेसःश्ची

विश्वभारा व्यवश्यावश्चर्यः र्स्त्रे माय दे।

सुवार्द्रम् स्थान्य स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स् अः मेश्यान्ते स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त् स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्यान्तः स्थान्तः स्थान्यः स्थान्तः स

र्म्बर्याये: क्विन्यं के कि

श्रेयश्चरण्या हे स्रेते र्श्वेराय

मिट्टी. ज्या मिट्ट्यमेडेय. संस्था मेड्या मेट्या मेड्या मेट्या मेट

त्रुं में के क्षेत्र तथा तर कर शेर तथ के श्रुं । रिटार्स हैं र तथ तथी । तहें र तथी वर्षे र तथी वर्षे

म्ने त्यायात्रमुक्तिक्षात्रम्यक्षात्रम्यक्षाः भ्रे त्यायात्रमुक्तित्रम्यक्ष्मित्रम्यक्षित्यम्यक्षित्रम्यक्यविष्

म्बेशया है र्से दे हैं से इस प्रमाय दिया में

यह्मास्त्रिःश्चीरः में श्चे चें हें द्वा। स्रम्भास्त्रित्रं स्रम्भा स्रम्भास्त्रं स्रम्भा स्रम्भास्त्रं स्रम्भा

म्बुयायायार्केन्यते हे से प्रमुक्ताया की

यह्रव्यालेक्षवे स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्धाः विश्व के क्ष्यं स्वर्धः स्वरं स्वर्धः स्वरं स्वरं स्वर्धः स्वरं स्वरं

यवे य केंब अकेंग में हे बेअब गुद्द हु मद्द्राय दे।

त्रीतः प्रति प्राप्त स्ट्रीतः प्रति प्रति । स्ट्रीतः प्रति सः प्रस्ति स्ट्रीयः प्रति । प्रस्ति । स्ट्रीयः स्ट्

म्बर्स्न्नायर्द्रत्यक्ष्वायाः क्षेत्रायः कष्टितः क्षेत्रायः कष्टितः क्षेत्रायः कष्टितः कष

यह्नायान्यत्वे क्ष्मायाय॥ म्बुद्धायत्वे क्ष्माक्षेत्रः क्ष्मायाय॥ द्वायीयान्याक्षेत्रः क्ष्मायाय॥ अवस्यत्याप्यान्याक्षेत्रः क्ष्मायाय॥

म्केशयायहेवहिंग्यर्देरप्रमुव्दी

बॅर्'बॅरे'ब्रें'चॅ'दयन्यन्चे'चया। बेसबड्द'स्यन्द्रच्नन्यस्येंन्'यम्॥ इसक्त्रंन्'दहेद'य'न्न'हु'दर्नेन्॥ देन्वार्क्षार्केम्प्रन्त्वायन्वाकृत्। ५ वेद्यार्क्षा

विश्वयायाम्बदायान्दायदेवायते देवायाची

म्याक्तिम्ब्रहार्देवादे प्रविवासित्। दे प्रवासित्य प्रविवासित्य प्रविद्यासित्। दे स्वासित्य प्रविवासित्य प्रविद्यासित्। दे स्वासित्य प्रविद्यासित्य स्वासित्य स्वासित

कुं हूं बं तः ने श्रीष्ट्रं विद्यां तह बं तह वे कुं हूं बं तः ने श्री विद्यां विद्यां

र्दे र्चे के न्द्रित् र रेग्बा र न्द्रित्वी। यथा वे प्यतः न्गा वश्च चः यः न्द्रिता न्द्रिता विकास वित

स्टम्बिस्हॅम्बर्न्ट्रन्तेत्यन्द्रम्। देन्धेय्यबर्ग्वदेख्न्बर्ग्वन्त्रम्। दह्म्पट्टेस्म्बर्ग्वन्त्रम्। इस्ट्रम्पट्टेन्द्रस्यन्त्रम्। मतिश्रायार्स्म यदे मञ्जू म न्सु दे।

श्रीत्रदर्वियम्भूद्रविर्धिम्। हेंग्रथयान्यवायाकेन्द्रत्यो। ळॅंदश्रश्रुवहेंद्रचा येदायाद्रा व्ययःग्रीः द्वयः यः यः संदः ५६ः ॥ १०

ग्वत् भी मुद्र भी सत्यों प्राप्ता क्रेन्-तु-चु-च-व्यंग्-घ-न्-।। के के च ५ ६ मुं के मुका के द्या गवश्रद्भायार्श्वेदश्रयाद्भा ११

इंश्रायायम् विश्वानुष्या इअहेंग'न्सु'धे'चन्ग'लेन'वन्।। क्ष्मायदे सुन्या श्री हेव उव है।। वेष.स्थाय.स्वायात्तरं तारविस्ता १४ प्रेयास्ता

न्त्रुयायाञ्जेकासाह्यायहेवानीहेनायान्त्रात्री

वहेव'य'न्दवे'वर्नेर'य'न्दा। थेर्'य'वेर्'र्राच्यश्चस्यश्वे॥ गश्चर्याद्याद्याद्याद्या 64

व्यवसार्यः अर्देवायमानेवायान्या। ११

क्रॅबःग्रीःन्द्रंबःचःचह्रम्बःचःन्दः॥ क्रम्बःचःन्दःवेःमहेषःचःन्दः॥ हेःक्ष्रःवर्देन्चवेषःवर्गेःहस्याः॥ वर्द्धवःचःन्दःचेरःवेषःचरःग्र॥ १८ वेषःस्॥

विदाः श्रुकासः वहनाकायदेवः ग्रीः हेना यः दशुः वि

ळेट्राचबेद्रादेशयम् श्रेष्ट्युराट्रा। ययायाययश्चेद्रादेशयद्देद्राट्टा। ययायाद्यस्यस्यदेश्चेयाद्द्रा ट्रिंशर्टेष्ट्राट्यस्यस्यत्रेश्चर्याट्टा। १५

मवसन्दर्भगश्चित्रयान्द्रम्। र्नेवन्तुम्बर्गन्दःकुःसेन्न्द्रम्। क्षेत्रःक्विय्यःविन्द्रसम्बर्ध्ययाम्। दर्भवन्यदेःक्वसःक्विम्बद्धःसेवन्वे॥ १५ वेद्यःसे॥

ग्रेशयः श्रुः प्रदेशः ग्रेग्राश्ती।

चुम्रुयःभगव्यक्ष्मृत्यः प्रमा देखेः क्वांदेखें स्थान्यम् देश्वितःत्रमः क्षद्धिर्यदेश्वु॥ বর্ষিত্রমধ্যমত্রির মর্ক্ষরণীত্ত বিশ্বর্জী।

चिश्रमाय तत्रश्र सि.चैराक्षेयाक्षेत्र सुन्त्री

द्देः सः चन्द्रन्दः से श्रेष्टुं प्रदेश से स्वेश्वाद्वनः स्वाद्वेशः चर्हेन्द्र्यः। चन्द्रसेन् श्रेष्टे से प्रदेशः प्रदेशः चर्हेन्द्र्या। व्याद्यसम्बद्धिः स्वेशः प्रदेशः विश्वाद्यस्य स्वार्थः। १५

तर्वेवायाये द्याये स्टायवेव त्या। अर्वेद्रावेश मुःयये त्याया ग्रीश वे॥ इयाय सर्हेवा सेवाया ग्रीश वेषा महा। क्षे सेदः इयाया है वेषा वर्वेया। १०

म्बित्यां के ब्रह्म क्ष्यां क

चले'य'क्रे'ऒंदे'चेद्र'यादी।

66 अर्देव हेंगश ज्ञुन श्री श यठ र श्रूट श्रेट श्रेंव श्री

यदीःस्यश्चायस्यान्तुःक्षःस्यम्याः म्वमाःस्यमःनुःसञ्चदः अद्याः स्यमःनिष्ठाः स्याःस्यमः स्याः स्यमःनिष्ठाः स्याःस्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः

लं.त.शर्बर.जश.डे.ह्येर.ट्.च्.डी

ब्रुवित्यः व्यार्थेन व्यवस्यः से स्वी। दे 'द्रवा व्यवस्थं व्यास्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व्यवस्थः व स्वत्यस्थः व्यवस्थः विष्णः व्यवस्थः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष

तुषाय देवे प्रश्लेशय दे।

सम्बन्धः सम सम्बन्धः सम सम्बन्धः सम

म्बिशन्त्रम् । निर्द्यम्बिश्चर्याम्बिश्चरम् । निर्द्यम्बिश्चर्याम्बिश्चरम् । निर्द्यम्बिश्चर्याम्बिश्चरम् ।

वर्वेष:न्दः पठकायते क्रेंअकावह्वान्युम्। इस्रायामिक्राश्चार्यर द्रमान्या। ह्यर्मितारी वु ख्रुंशकायह्याता। वर्देर्यमम्बिन्ययविद्वययम्बे स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थिति स्थितः स्थिति गर्डमान्द्रमानुबामानुसानविन्द्रमञ्जू विनान्द्रयत्वान्द्रयम् । वर्षोबायवेयम्द्रियेवहमंवर्षे। १५ देशस्त्री।

म्बेशनाश्चरानुः दश्देशहेंगायाम्बेशहे। म्बरहेंगार्या दहेदहेंगा म्। ८८.त्.मोबर.ध्रमालामध्याध्याधा प्रधीतातामोबर.ध्रमा.८८। र्ज्ञमाता ग्राहर्ने । १८ चे तह्यायमा स्टाहें वा दी।

> अर्रे र प्रश्रूष कुष ५८ र षर ष कुष ग्री। वर्ष्ट्राच्यार्क्यस्थास्थ्यः यञ्चरः दृरः || त्याग्रह्मार्वेद्यान्त्र्यं त्रम्यान्या येग्रन्थयदेःयम्बे द्वयम्बुम्या पञ्चर पति द्वय हिंग तदी गडिग है।। र्श्वेर प्रतिहम्म प्रतिश्वेर सिया उन्। विवासी।

68 अर्देव हैं नाम कुत की म यक द सूद के द सेंव में।

विश्वाय क्षेव यावा अद हैं व दी

विष्याः स्थायः स्ट्रास्त्रेयः स्ट्रास्य स्था तह्याः प्रदेशस्य स्ट्रास्य स्था

र्बें अन्दर्वे अन्य येद्राय दिन्त्री देन्द्रमा व्यवस्ति वर्जे मान्ते दिन्द्रमा देन्द्रमा व्यवस्त्रमा के स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

वन ग्री यह न मिन प्राप्त क्षेत्र हो। वह न मिन प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

बेशबाडवायहग्वाबायदिः ब्रुँदास्त्याद्दा। र्केबायहग्वाबायद्दाः क्रेंद्राश्चेवात्रेद्दा। क्रमबाद्दायविद्यायहोत् यद्वात्रेद्दाः। द्रेंबाय्याचेदाद्वायहास्त्राद्दा। १० स्वात्रः न्यात्रः स्वात्रः स्

महेब्रायायह्नम्यदेख्याउव ग्रीयहेव हेन्। त्यापहेब। अर्दे

महिकायाः मुकायमः यम् दः यादी।

यन्माकृतःहैःयविवःगुवःअख्वेवःवै॥ माश्रुअःग्रेःश्चेयःयःक्ष्यःमश्रुअःन्दः॥ विःयअःदेःयविवःकृतःश्चेमश्रुदः॥ अर्श्वदश्यमःस्वःन्दःश्चेःस्वःन्दः॥ ४४

क्षेत्रसम्बद्धमान्यस्थायःस्याक्षन्तः।। कृष्णसम्बद्धमानस्थानःस्याक्षन्तः।। 70 अर्देव हैंगब कुव की ब यठ द बूद के द बेंद बेंद बेंद

मृत्रेश्वास्त्रेत्रप्तः स्वात्राह्में द्रश्याया। इस्रायम्हें मृत्याधासम्बद्धाः १८ वेशक्षाः।

गश्चरायःहेदायः स्दाप्ति ।

कुःसर्कें के त्याकुं र्वे त्विवा। विश्वस्य स्ट्रिकें विश्वस्य स्वाधिका। विश्वस्य स्ट्रिकें विश्वस्य स्वाधिका। कुं सर्कें स्ट्रिकें स्वाधिका। कुं सर्कें के स्वाधिका।

चित्रयायम्ब्रिन्यायम्बर्धः संस्थान्यस्य प्रति । प्रतिस्थान्यस्य चित्रप्ति । प्रतिस्थान्यस्य चित्रस्य चित्रस्य

म्भूट्यास्त्रसङ्गुर्भेष्ठः व्यवस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रम् वर्षे चर्मेन्द्रदेश्केष्णस्यास्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्। चर्मेन्द्रप्रस्तरस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्। यर्केन्'त्रस्यस्यस्य केन्युं केन्युं

मित्रेश यः स्टार्स्मा द्राया स्टार्मा

यम्बन्धन्यते क्रिय्ये विष्या ने विष्ययाम्यात्र्यात्र सिन्द्री

विश्वयायान्त्रीवाश्वायायन्वार्यात्रस्यायसायस्वायात्री

यदे स्थाप्त स्थापा स्यापा स्थापा स्य

यरम्पर्मा विराधित्या विश्व विश्व

.....वर्ने यवी।

रवः हिश्चा इस विद्यास्य विद्यास्य

ग्रेशयः मुश्यस्य यस्त्रय

न्क्षेत्रश्चरः दबन्दन्ते भी है।। इ.स.च्हरः देशः चत्रुद्धः चत्रः ।। इसः गुत्रः सिव्हितः केतः सिः सिक्षः तृतः ।। त्रसः परे देवः तृतः गुत्रः हे यः तृतः ।। ०० श्चे तः तृतः तृत्वां त्रः सिक्षः यः तृतः ।। द्यसः युक्षः श्चयः यदे हे वृक्षः यः तृतः ।। श्चे वः ते व्यवः वे व्यवः युक्षः युक्ष

यक्ष्वःकृतःत्रःवैःक्ष्यःयःय।। श्चःयःह्मययःग्रीयःर्येषःह्मेषःय।। ह्यःयःगुवःयद्विवःकृतःहेवःठव।। ह्यःयःयद्वःदुषःत्वाःहृयवेत्।। ७१ डेयःर्से।।

ह्रेब्रयायते:कुर्वाकुर्वाचेत्रयः प्रदेशयः वायश्च स्वायः स्वायः विद्यायः विद्य

श्रूवशर्जुगय। अधरःग्रीशःश्रुरःय।

चीराजायहेब वस्ता चीरावचीयात्त्र्। निरास्ता त्यायहेब वस्त्रेश्च वस्त्रा विस्त्रा त्यायहेब वस्त्रा विस्त्रा विस्

ब्रुव्याम् अस्यायम् प्रमान्याम् विद्याल्याः व्यव्यास्य व्यास्य व्यव्यास्य व्यास्य व्यव्यास्य विद्यालयाः विद्यालयाः

यथ्रिश त.योट.पर्वीय.त द्री

अवरःग्रीशयःषी:वु:चरःचलेर्।। १ डेशःस्।।

क्रेबार्यते चुन्ने वार्क्षणात्रिरः विश्वायायश्च श्चितश्च्यायाय्। ॥ विश्वार्यते चुन्ने वार्क्षणात्रिरः विश्वायायश्च श्चितश्च्यायाय्। ॥

श्रूवश्यत्व,या श्रून्रचेग्यदे ह्यूं राया

मालेश्वायायम्बास्यस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थान

स्वित्रयायर्थित्रे से स्वय्य स्वा १ वेस स्वा स्वयः यदे स्

74 अर्देव हॅंगब कुव के बच्डित श्वर के र श्वेत शे। गुलेश याने लेन न्येश श्वानाय है।

> हे.क्षेत्रःश्चेशःत्रश्चें क्ष्यःश्चित्रः श्चित्रः श्चेशः स्थाः ह्रवाः वयवायः वाद्यवाः वीवाः वीवाः यञ्चेत्रः यः वा। वयवाद्यतः विवाः वीवाः यञ्चेत्रः यः विवाः श्चेशः श्चरः द्वेषाः विवाः वीवाः विवाः विवाः

ग्रेशयाद्ग्यायराञ्चीदायदेः स्नुन्देगायादी।

मदःकेंकेंबर्ग्यः घस्रव्यन्तः ग्री। स्टायनेवर्ग्यः स्यायः स्यायेव।। इस्रज्जेवर्केबर्ग्यः प्रवायः ज्ञीयः। देकेंज्ञ्चर्र्यं प्रियायेक्याः स्वायः ज्ञीयः। देकेंज्ज्ञद्वियायेक्याः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः

ग्रुयः पायस्य किन्योन् प्राये अन् उत्राय

ૹૄૢ૽ૺૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૺૡ૽ૹૻ૽ૹૣૹૻ ૹ૾ૼૹૹૢૹૹ૽ૹૹૹઌ૱૱ઌ ૹ૾ૼૹૹૹૹૹૹ૾૱ૹ૾૽ૺૢૹ૽૱ૹ૽૽ૺૺૹૹૣૹ

श्रु देना अने निर्वाची शर् हेन श्रा ७ वेश श्री

नवि'यः गृष्ठेश्वाशुः सेन् यादे श्रून् गृष्ठेग् सादे। क्रेप्यस्य न्यादे ने सर्वेद्य केन्।।

ग्रेशनी र्ख्यात् श्रेष्यर्भ सर्वेदाव्या क्रिंश इसमामित्र स्थाने प्राप्त स्थान देखेदःश्चदःचेयाःगचियाःगीयःअर्धेदः॥ ५ वेयःची।

नेब रयःग्रीःवःर्रेतःहुर्द्वेव यदेःसवःरगःगैःचस्वःयर्रेक्षःसर्देवःयरः र्ह्रेन्यस्यते मुन्द्रम् सेत्रस्य सेत्रस्य सेन्स्य वर्दे। ।।

सैयश्यमुर्या यत्रश्रह्शस्

्रिश्च । योश्चेत्रातायचेश्चात्रे.क्रें श्वाप्तात्रे हो। हे.च्.धेरी क्र्याटा। ज्राह्या र्बेंद्रम्बाद्यायाद्या ब्रुव्यायदे श्रुर्द्या क्रेंद्रश्रुदे सर्द्या द्वा द्वा द्वा द्वा वॅरें ने द्रा श्री श्रुवी

> व्यायदे दें चें के द श्रुवी। वनाया येदायदे केंबानाया द्वा व्यःश्रीम्प्रमायीयः स्थान्याः या ने न्या स्टायविव अळव के न उवा। १ वेश स्था

बाबुकायाक्क्याश्चाताद्वेव क्रिकाइसकाग्री:इसायायन्तराया नदाव्या ग्री कें दे अंदर्श या से दाया ताल हिंदा यह । क्रिया से से दे विकास हिंदा यह । बुव अयर प्रवासित स्था सारे स्था श्रीया वियास प्राप्त होते. वैं। । १८ वें केंश्रह्मश्राश्चीह्मश्रायम्मित्यवे।

ব্রদ্ধেন র্ব্রুলিষ মধ্রর র্ব্বদ্ মীদ্দেদ্য। ক্ষান্তম প্রমান্ত্র্বাদ্ধ মধ্যম গ্রীকারী।। র্ক্ষুমকা হের্লি দ্বাদ্ধি নিদ্দাদি প্রমান ব্রুলি নিদ্দাদি প্র

बिलाग्रीकामर्विवाद्यतः क्षुः सक्छेन् वि। रुवः हुः नृष्ठेः व्यक्षक्षः व्यक्तनः नृतः।। वृवः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः नृतः।। स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्वाद्यक्षः स्व

द्यायाः व्यवस्य प्रम्यायक्षेत्रम् । । द्यायक्षः द्रम्यत्रे स्त्रियः यक्षः द्रम् । । श्रे त्रदेशस्य यत्रे त्यत्रे त्यत्रे प्रम् । । स्रो त्यत्रे स्वयं स

5व्रायःक्षेत्रःमावमाद्वयःमाश्चयःत्रः॥ यक्षेत्यःयःश्चेःयद्वरःक्षेत्रःक्षःक्षेत्रःत्रः॥ यम्।कमाश्चयदःत्रम्यक्ष्यःयःत्रः॥ ५व्रोत्यःश्चयक्षःहःक्षेत्रःयःत्रः॥ ५ इत्राचित्र्वेश्यायद्ग्यास्य । प्रत्याचित्रा प्रत्याचित्रः विष्याचित्रः विष्याचित्रः विष्याचित्रः विष्याचित्रः विषयः विषयः विष्याचित्रः विषयः व

बिश्रेश्वर विवासी क्षेत्र स्ट्रिंग से स्थाप से द्वार प्रकारित तर प्रक्षेत्र तर है।

विश्वभाराः श्रुवःवश्वभाषान्त्रेवः परः वी

द्यात्रात्र्वात्र्व्यक्ष्यत्वेत्राय्यः यात्रेत्। द्वित्रः श्रीक्षः श्रीयः त्रात्रः स्वात्रः त्रात्रः त्राः । द्वित्रः श्रीकः श्रीयः त्रात्रः स्वात्रः त्रात्रः ।। द्वित्रः श्रीकः श्रीव्यक्षः स्वात्रः यात्रेत्।। ५ द्वेकः स्वा

यक्षेत्र स्वायम्बद्धायते हुवादी

बुद्धे व्यट्यस्थः श्चेत्रसुरः त्या। ग्रह्महत्यस्य ग्रह्महत्वी। 8 अर्देन हॅम्ब कुन के मान्डन सूट केन होन होन सी

न्द्रक्षं चुःचःबदः चुरःय॥ देःद्रदःदेः यःदेः बुरःदेः॥ ८ डेबःब्रा॥

केंत भर्दश्रन श्रर्भर मध्री

श्रैजायाः श्रेट्राच्याय चटाः श्रेः श्रेट्रा । ०० द्रसाः श्री स्ट्याः श्रीसाम् श्रम्याद्वे श्रीटः श्रीयः ग्रीटः ।। स्ट्यं श्रीः स्ट्रां श्रां जिद्द्द्द्रां स्ट्रिट्याः स्ट्रेट्रा। स्ट्रां श्रीयाद्व्याः स्ट्रां विद्याः श्रीयः ।।

तुगायाष्ट्रयायान्यान्यान्यतार्वे विवि

今では、今日では、日本のでは、

> सर्वत्ते स्था इ.स.चित्रस्य निकार स्था। निवासिक स्था स्थानिक स

विषाक्षेत्रक्षेत्रम्भूत्रसङ्ग्रीत्रिम्। श्रुपःचित्रःस्यार्भेत्रःस्यार्भेत्रःस्योत्।। ११ डेस्रःस्याः। विक्षयःसस्यःप्रमानिष्यः

द्यगःवित्रशःवित्रःवित्रस्वः स्वतः त्र्यः स्वतः वित्रस्यः स्वतः स्वत

र्बेर-क्रॅ-चेट-प्टाहेट-प्यटबाझु-क्रेन्ट-॥ व्यबादत्य-क्षेत्रक्ष्यंत्रेत्वन्तुत्वन्त्र्याः वेत्र-पाकेत्व-प्यदेश्वन्तुत्व-चित्र-सहेत्र्॥ सर्वेश्वराष्ट्री-स्वयःसुनुत्व-पदेःसकेत्॥ १५

यन्त्रःयान्त्रेरः अर्देन्ययान्यः स्थाः स्

यदे यार्चे श्रे ब्रेययार्चे अक्रॅग्यूटा। श्रुवे वु र्चे इ.स्टर्स्ट ब्रेटण्या। 82

म्राक्षित्रकारात्रम्बिवः विश्वावी। न्यान्द्रयार्वेवः भः छवः वेनः न्द्रा। शुःतुम्रायेदाद्वम्यायाद्वा विवार्त्वाध्यक्षयदेः श्रुविदादम्॥ १६ यव यग नेव हु इस य ने स दि । ग्रेवन्यःयःश्चेतः येदःदगःयःदरः॥ न्गु ब्रुय श्रम्मयश ध्रेव या हें दश दर।। मुस्देयद्राक्षेयद्री। १५ बय-दरम्पायशः ध्रिम्बार विवासः दिन्। गुव वश्यक्ष व द्वा य दिया गुवःर्श्वेदःगर्डरःदरःश्चःयःवै॥ श्चे यान्वम्यम् येदायाद्या १५ धुग्वे भेराययाः भूरायह्याद्रा धुग'रेब'अ८्टब'र्षेट्'बद'रेट'८्ट'।। वयाने ५उटा ही मेटा ५८॥ सक् वे ते झ क्षर दसर दरा। १७

स्वाश्यकेवः यः नृदः श्रवः यः नृदः॥ नश्चरः यज्ञेवः यह्यः नृदः श्रवेः यः श्रुधा। रूप्तरः यज्ञेवः यह्यः नृदः यक्षेः यः श्रुधा। रूप्तरः नृत्यः नृदः यज्ञ्यः यः नृदः॥ १५

चुक् चुक् स्थान्द्रः स्वद्याय व्यक्ति न्द्रः ॥ यक्ति मात्तुः न्या स्यान्द्रः वि॥ यक्ति स्थान्द्रः स्थाः स्थ्या। स्वतुः स्वत्याय स्वत्यः स्वत्

श्रेवास्त्रस्य स्टान्ट्य स्थाय प्रमानित्य स्थाय स्टान्य स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स

स्वाप्तायायेग्रस्य स्विस्य प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व प्राप्त स्वाप्त स्वाप 84 अर्देव हेंगश कुव ही अयउन सूद ही हर्सेव थे।

श्चित्रं दे त्रिंशः श्रुकः स्वी। वित् दे त्र्यं वा त्य र से देवा विता वित्रं त्य स्वा वित्रं त्य के वित्रं वित्रं

म्तरमीश्चित्यदेश्चित्यम्। वेश्वर्से।

ग्रेशयाग्रम्भी र्वेत्यार्द्रयात्री

यक्रमःतुःसद्दःपदिःश्चःदेवी। वेशःश्ची। यक्रमःतुःसद्दःपदिःश्चःदेवी। वेशःश्ची।

गश्चरायाः सुद्रात्री कर्याये हिंदा दी।

ह्यायते हुया हु हुव से तकत्।। ११ डेका स्।

सीयाः मैंत्रः मुन्यस्त्रः तः द्वी तो सुर्वः तम्बद्धः सी.स. तम्बद्धः तम्बद्धाः प्रदेशः तद्द्वाः । निर्द्धः तस्यः क.तः सूत्रः श्रीदः शह्ने रत्तद्वे तस्य निर्द्धाः तस्य । सिर्द्धाः तस्य । दे'यबैब'वर्षेम'यद्भिन्दिदि।। यश्चिकुत्रंभे'वकद'यम'वर्दि।। डेश्चार्थे।।

> गुन्न न्यार्ने न स्यान्य या या था। इस्राच्य र पुराचार्ने प्राया प्रता । इस्राच्य र पुराचार्ने प्रता प्रता । इस्राच्य र प्रता प्रता प्रता । इस्राच्य र प्रता प्रता ।

सदसः मुक्षाययः दर्ग्यत्वेदः श्रीक्षा। वहः दर्ग्यत्वेदान्यः येदः यः दरः॥ सक्षः उत्रः मुक्षः यः येदः यः दरः॥ स्थाः उत्रः मुक्षः यः येदः यः स्थीः व

चुरःकुवःश्रेयश्रद्धःयः प्रशः द्वी। चुरःकुवः श्रेयः प्रश्निवः विदः श्रुवः श्रेयः प्रशः विदः श्रियः श्रेयः प्रशः श्रेयः प्रश्चे श्रेयः प्रशः श्रेयः श्रेयः श्रेयः प्रशः श्रेयः प्रशः श्रेयः प्रशः श्रेयः प्रशः श्रेयः श्रेयः प्रशः श्रेयः प्रशः श्रेयः श्रेयः श्रेयः प्रशः श्रेयः श्रेय स्यान्त्रसम्बद्धित्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रसम्बद्धसम्यसम्बद्धसम्यसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम

ष्ठिवःकेः व्यवान्तेः श्वरस्यः यः दरः॥ देः वाविः स्रेदः यः देः स्वंतः दरः दे॥ इसः यः यः पुरः दरः स्वंत्वः दरः दे॥ वर्षः पुरुषः वर्षः सः सः पुरुषः यः व्या

मेश्यम्प्रीयः क्रियाः क्रियाः विश्वम्याः यथाः श्रीयश्वम्यक्त्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत् वर्षेत्रः वर्येतः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षे

मुद्रेश र्वेग.धे.प्तर्थर.ता मझ्य.धे.पर्झ.पर्ज्ञ। रिट.स्.चेंग.धे.पर्वर.त.स्.चें। मझ्य.त.सहमा.मु.स्या पर्झय.धे.पर्झ.पर्ज्ञ। रिट.स्.चेंग.धे.पर्वर.त.स्

> अर्कत्र केन्द्रेन थे क्वें रायान्द्र।। ने रायाने भी केंद्रिक अन्द्र।।

ने'सबद'ने'षे'क्स क्षेत्र'क्षेत्र'के।। र्नेव पश्चमानवर ने इस या दुना १ डेबा सी।

मिनेश्वायाम्बर्म मिश्रुयातु पश्चायाने ।

ल्यावीद्भयायाम्ब्रुयार्थाकु र्श्वेरः यः यत्ने व्ये यत्र व केतः त्रः॥ क्रूबाश्चाद्वेषात्राच्यास्य र्नेव पश्चमावव हे इस या मुख्या। १ डेबार्से।

दबग्रायः मेश्रास्याग्रीः वः र्रेताः हिः द्वीतः प्रदेश्यतः रम् ग्रीः यसूतः पर्छेश्रः शरूषेत्रस्र्रेप्रतपुरम्थियः विश्वाचित्रः हर्षेत्रः चिश्वश्वातः शर्वेष्यः स्राह्येत्रः स र्हेगश्रङ्गा ॥

क्चि.चं.ची.भाषय.च्.च्ये.चं.च.म.र.स. झे.रं.। बि.कुव.बी.ज्. व्.चव.झे. र्ययायक्रेषायाचीयायक्षिराक्षेत्रातुं वात्रात्रात्रा

श्चर्ग्रीशक्तुःग्रर्ग्रेश्वावदःदीर्प्यान्त्रीं श्चेर्यक्ते श्चेर्यास्य स्वावस्य प्रम् ઌ૾ૼૡ૽૱ઌ૽૽ૺૹ૽ૣૼઽૹ૽ૢૼૡ૱ઌૺૹઽઌઌ૽૿ૢૹઌૹૄૢ૿ૣૣ૾ૣ૱૱ઌૡૹઌ૽૽ઌૢઌ૱ઌૡઌ वर्गा ॥

> मिजालियात्राऱ्यात्त्रेयात्र्याविटः स्थायात्रीया मुजार्शकायात्रभारा जुरायमुद्र पुराया कुल'यदे'अर्दे'यदिव'अवसञ्ज्ञपाद्वअवाग्रीकान्त्री।

चॅर्-१८२ र.स्-४ प्रवास १८८ स्यापि अप्रसाहस्य स्थान स्

द्व-ग्राट-ज्य-ज्य-ज्य-न्व-विद्य-विद

सद्कें र्ह्ने त्यास्याहु ग्रम्थयाय सम्बद्धाः दे ख्री सत्यदे त्यार्थेश्वायाः क्रुं के सम्ब्रह्मा इस्रायम् द्राच्या ग्राटा तह्या यस ख्रेदा स्रोदा यशा स्राट्म हें या सम्बद्धाः स्रोदा स्र

लुश्री क्लिंग्र.स्यातिकाः अस्य देव दिन्त्र स्वी। श्रीयश्चातिका सुर्वेद स्वी त्या स्वाप्त स्वी स्वी स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

श्री विश्वास्याग्नी सः स्वातिष्येशः स्वी

क्री जि.सेट्टे.शुई.दूरी

पर्वसर्द्वःचेवःदेशःकुरःचनःची। विष्यस्यःषःद्वतःचीवःषःची। विष्यस्यःषःद्वतःचीवःषःची। स्वस्यःद्वःचेवःदेशःकुरःचनःची।

रे.लट.शर्ट्य.ह्र्यश्चित्र.स्त्रा।

नेशन्याधर्म्याधित्यावित्यावित्यावित्यावित्यावित्यावित्याधित्यावित

इसगुत्रसद्दाह्मण्यह्मण्यद्दा इस्ट्रिन्द्रस्यवर्ष्ण्यद्वा इस्ट्रिन्द्रस्यवर्ष्ण्यद्वा इसगुर्भुद्रस्यवर्ष्ण्यद्वा উষ দাধুনের মহা।

म्यायद्वान्त्रम् । प्रत्यं त्यद्वान्त्रम् विश्व विश्व

गविः मेश

म्बिन्न्यः मुश्रास्त्रः विद्या मुश्रास्त्रः मुश्रास्त्रः

१) मेश्र-क्विर-वी-यनेद-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा व्यक्ष्य-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-यन्द्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्षेत्र-य-प्रमा वर्य-प्रमा वर्य-प्रम

 या श्रीयःया द्रश्रायमः पद्मियः यात्।।

त्रक्षराची साम्रेगवान्त्रियान्त्रेत्राची वर्षेत्राची साम्रेगवान्त्रेत्राची वर्षेत्राची वर्षेत्राचित्राची वर्षेत्राची वर्षेत्राचित्राचित्राची वर्षेत्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्र

 मस्यावस्य मन्त्र प्राचित्रयाची मन्त्र प्राचित्रयाची प्राचि

- १) दे:वेश चेद 'ग्री क्वें'दी। यशद्द यें'पर्वः व्यायश्चात्र है।
- यक्ष्यत्वस्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्

म्बाबायति, देशका क्रियायम् वीत्त्व स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य

नेशव गवि वर्षेम यन्या ग्री केश वस्र शं उत्तर्मा पनेव पापवी

यक्ष्मा महिना स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य

এম-প্রা

१) दे.ज.ध्र्यकार्वश्चात्रक्षात्रक्ष्यं प्रवेश्चात्रक्ष्यः विष्यः विषयः विषयः

ने:यदःवासाने:वाश्वसान्तेवाकेत्वी:वादःववाःस्वायान्तेवाःवीःकुनःवार्येतः

वसाम्रमान्यक्रेत्यः प्रदान्ति विश्वास्ति स्वास्ति स्वासि स्

क्रॅन्स्त्राच्या महिनात्यार्क्षमात्यसाद्धे प्रदेश श्राप्त महिना महिना महिना स्थाप्त स्थापत स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्य स्थापत स्य

- १) नेशचेर में क्षेत्री चुर स्वा शेशश्राद्यतार्थे स्ट मी माने सेश रे भेता
- यानेश्वातिः द्रश्वस्यक्षः स्वेशः नेश्वात्वस्यः विश्वात्वरः विषयः विश्वातिः स्वयः स्

वारामेश्वर्तिः वृत्रः स्टायाः योदानेश्वरः व्यापिः विष्यापिः व्यापिः विष्यापिः विषयः विष

क्यायाष्ट्रेव।

पश्चायास्य अवित की अस्त्राक्ति क्यायास्य प्राप्त हिंग्यास्य प्राप्त हिंग्यास्य प्राप्त हिंग्यास्य प्राप्त हिंग्यास्य स्वाप्त हिंग्य स्वाप्

१) हॅ्बाबाक्कुरि:इस्रायावी नावी यरेवाय यवी त्याचित्रायावी सर्वेदायायी हना यात्याक्षेन्यायञ्जातुनात्द। वेना केवाची त्यस्य वेश्वास्था सर्वेदायस त्याचित्रस्य स्वासायञ्जातुनात्द। वेना केवाची त्यस्य यवी त्याचित्रस्य स्वासाय

ने त्यायदार् व त्यायदे मावका स्वावका श्री द्वयाय प्रविक्षा मावका स्वावका श्री द्वयाय विका

दे.लट्ट्र्ट्स्यं दे.चडुःदुग्द्या स्वागित्रेश्चरं लट्ट्र्य्याच्यात्र स्वाध्यात्र स्वाध्य स

यहार्त्वा त्वत्र विश्व विश्व त्या विश्व त्य

दे.जादर्स्य स्वापस्याची यदेव यदे स्निद्वेव सामित्वे खे.खास्य उत्ते

चन्त्राया केंद्राने व्यापित प्रमानित प्रमानित विकास मान्य प्रमानित प्रमानि

श्रीवृक्षायद्वराज्ञ्चर्याः वृक्षान्ते स्त्री। भूक्षायः नदः चित्यः य सर्भे वृक्षायः य स्वायः य स्वयः य स्वायः य स्वायः य स्वयः य स्

सद्वम् प्रच्यात्रस्य विश्वस्य स्वाप्त्रस्य स्वाप्त्रस्य

त्रुतः व्याप्त व्यक्षः त्रीः यदेवः यदेः यदे । त्रुवः ह्याः क्षेत्रः क्षेत्रः व्यवः विकासः विकासः विकासः विकास

र्वेव र्वेटकायते कुषीव विटायट द्वा यर व देवे कुर शुवाय सेद। र्सेकाय न्दान्यानर हिंग्रास्य दे तें ने य गुत्र वहुदानी नने दाया से सामे सामि वर्बेर्'यः देश बेर्।

यद ५ सूर्वे वन वरुका गुरस्ट यें तद केन वा वहेन नका हु वा ही अर्व जबार्ट्स्क्रें स्थ्राचा मुन्द्रित्य। यह द्वाराम व त्युह्र से त्युह्म व तुत्रदःश्रुचःयःसेन् र्श्वेश्वयः नदः न्त्रयः चरः हेंग्रश्यते र्त्ते दें ते यात्र त्युदः नी यदेव या वार्क्स से साय ते यो से सा देश हो या

षद-द-कृदि-चष्-चठकानी-सुद चें तदी-तेद-ता-चहेव-वकान्नी-च-सी-सदि-जबार्षेव स्ट्रां दा ता ख्रां वा बा स्वा प्यस्या राष्ट्र हो । वा द दवा र्हेग्रबायते ह्वें दे त्याग्_रवाद व्युटानी पदेवायात्य हेबा बु:वेबायते पर्वेदाया वेश बेरा

ષાદ-દ-ભૃતિ: ઋणः पठशः ग्री: खुद-'दीं ' तदी- लेद- श्ली: पा खी: या ते ' त्यक्ष ' दृद- लेव क्षॅटशय:५८। सूनायस्य:यःश्रंगशःत्रन्।यठशःग्री:सुट वें:पञ्जेद:यदेः क्रेंब खेब बेद खर द्वा प्यर व क्रेंब खेब क्रेंब मार दु खर शुद्ध या केद्र क्रिंब च-दर्मियानरार्द्रेग्रस्यदे र्म्ने दिन्ता त्रावाद्युर्द्धा विदेश च-देश स्थाने व यदेखे:मेशक्षाबेराहे। ने क्ष्राव त्युव त्युव वी यनेव यदे स्नून हेवास यवेद्॥

वर्षेन्।यदेवःमुःस्याउवः स्नुद्रिनाः सःयवे दी सुःदवः यश्यः वद्रश्यः चग् अन् इस पुर में खर दें ता कु तक न्द कें व सेंदर्भ या या मा हे हुदस तश्री रचश्रतिर्मेग्रीयर्भरा ही.सिट.सूरभायर्पेश्वरायमा में मेरश्रयमः

ह्म संक्ष्य निर्मा क्ष्य हो । यह निर्माण संक्ष्य निर्माण स्थान स्

यम्ह्रीत्यत्रम् त्रित्यात्रम् व वर्षेत्रायाः व्यक्षित्यत्ये वर्षेत्रावेश क्षेत्रायः विद्यायः विद्यायः

रक्ष्यान्तर् न्तरेष न्तर् हैं श्राक्ष क्षेत्र त्या क्षेत्र क्षेत्र व्या क्षेत्र क्षेत

वयानदेव.कु.लज्ञ क्व.ल्.नेब.श्लेट.कुव.यानकुवी वयानर.कुव.वर.

नेशक्री। सर्द्रम् यर व्यक्तित्य प्रमेत्र्याय या सेत्र्या विश्व प्रमेत्र्यः विश्व प्रमेत्र्यः विश्व प्रमेत्रः विश्व प्रमेत्

त्तरायदेव.ता. इंश्वश्च वेशत्तर कुर वेश्व वेश्व च्या प्रमायदेव.ता. क्या विश्व क्षा विश्व

ण्यम् अन्तर्भित्तः व्यक्ति विवयक्ति वि

चक्च दुन् स्वामानिक वर्षे । दुन दुन स्वामानिक वर्षे वर्षे द्वामे का वर्षे वर्

ध्रिन्द्ये पान्ते संभावत्र स्थाप्ते स्थाप्ता स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य स्थापत स्य स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत

वर्दे-वे-न्तु-स यदे खुण्याध्येव ययात्ययान्दार्यायय में यदे यदे हुन

देश व से श क्रिया में त्या मा क्षेत्र व ता है। स्वा स्व व ता स्व व प्रति के क्षेत्र प्रति क्षा क्षेत्र प्रति व ता क्षेत्र व ता स्व व त्य के क्षेत्र क्षेत्र

१) हॅन्ब हुन् ही त्रें दे स्रम्यन्त्र विष्केष हो वस ने बन् देन्

धेवा

द्र) म् द्रियम्बर्धायाद्दे स्वर्म म् त्रियम्बर्धायात्वे विषा केत्र मुं त्यायम् स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्वे स्वर्धायात्व स्वर्धाय स्वर्धायात्व स्वर्धायात्व स्वर्धायात्व स्वर्धायात्व स्वर्धायात्व स्वर्धायात्व स्वर्धाय स्वर्धाय स्वर्धाय स्वर्धाय स्वर्धाय स्वर्ये स्वर्धाय स्वर्धाय स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धाय स्वर्ये स्वर्ये स्वर्याय स्वर्ये स्वर्

स्पया अष्ठिव मा श्रुया ग्री श्रु देव।

न्देशया अर्द्धेव मु सु देव या ना सुरा यस

म्बिन्ध्रेश्व म्बिन्ध्रेर्त्त्रम्बिन्द्रम्यम्बिन्द्रम्यम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्बिन्द्रम्

यमनेश्वी वर्म्स्यावेश्वीम्यानेश्वी।

इसासिव दी। स्वाउद बीबास प्रमुखाय दे विकास की केंबाइस

Accession No.
Shartarakshita Library
Library Institute. Sarnath

102 শ্বৰ ব্ৰুণ্ গ্ৰী শ্ৰ্ৰ ধ্ৰা

त्र क्षेत्र द्रंश त्रवर लटा ने वात्र व क्षेत्र क्षेत्र

या १) रचे प्रत्रे दाय मृत्यमा १) रचे प्रति क्रा अविक प्राचित प्राच प्राच प्राचित प्राच

- त्र) विश्वभःदुःदव्वेदःयदेःश्चुः अर्द्धन्तः विश्ववः वि

यदःययः ने बादेः हित् स्राचन् प्यते व्यत् व्य इंग्रायदः द्वायदः व्यत् व्य व्यत् व

देशक्षात्रेव गृह्या यदे के आहेव महाया है। है। देशका धेव प्रकायका

वस्त्र मिन्न स्थान स्था

अविवागश्चान्त्रियानु स्वाप्ति देशायहेवाया

लट्यायम्। व्याम्बायम्भ। नट्याम्यायाद्वेष्याचित्रायाः सम्बाद्धः व्याम्बायम्भः नट्यायम् स्थायाद्वेषः या सम्बाद्धः व्याम्बाद्धः व्यामः वयामः वयामः

- १) अष्टिव-विश्वयःद्यःश्ची-अस्व-द्वेन्। इस्य-व-वस्य-दन्श्ची-व-सेन्-
- ४) हे.फे.च.शहेब.तपु.संश्वात्रश्चेत्रश्चेश्चर्थं क्षेश्चर्यः स्थात्रः क्षेश्चर्यः स्थात्रः स्थात्यः स्थात्रः स्थात्यः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्

104 শ্বশ্বলুব্লী শ্বিধ্ব

द्रभ दाय प्रसाद सद्दरश्रमान्द्रम्य य प्रेव स्वी। इस दाय प्रसाद सद्दरश्रमान्द्रम्य य प्रेव स्वी।

ने या अर्क्षव होन न्दार्थ या हान्य स्थान प्रविद्य स्थान स्य

त्र-विश्व त्रस्टु-श्रुंन्य-प्राक्षित्र-प्रदु-स्यामित्र-श्रेय-विन्ना व्यस्त-स्य मुक्त-स्यामित्र-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्र-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्य-स्यामित्य-

मिलेश्वायायाम् श्वायायायाम् । मिल्या स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया

- १) तम्रान्त्रस्यान्त्रीयस्य १९८१ तम्रान्त्रस्य १८३ तम्
- त्री हु.के.च.शविष्टातु.लक्ष.चे.च.च.। त्रीक्षित्र.च.पु.क्ष्ट्र्य.क्षेट्र.क्ष्ट्र्यं क्ष.च.च.न्द्रा

देःषः अर्द्धवः केन् न्द्रः चेते । छन् । चरान्छवः छन्नः चन्ना छन्। चरान् छन्।

सुन्द्री। सुन्द्री। सुन्द्रियायक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्ष स्वाद्यक्यक्यक्

त्या कुंक् कुंद्र्यायमाने वाक्ष्याया । वित्यम् क्ष्यायमाने वाक्ष्याया । वित्यम् क्ष्यायमाने वाक्ष्याया । वित्यम् क्ष्यायमाने वाक्ष्यायमाने वाक्ष्यायमाने वाक्ष्यायमाने वाक्ष्यायमाने वित्यम् क्ष्यायमाने वित्यम् विवयम् विवयम्यम् विवयम् विवयम्

विश्वाचराक्षे क्षेत्राचराक्षेत्र चार्यः स्थाने क्षात्राचराक्ष्यः स्थाने स्थाने

मृं श्वे मिलेश्वर्याण्यः र्हेन् यात्रः देशाय्यः सेश्वर्यः यात्रः स्वेत्रः यात्रः स्वेत्रः यात्रः स्वेत्रः यात्र स्वाव्याय्यः स्वाव्यायः द्वीयः स्वित्यः यात्रः स्वाव्यायः स्वाव्यः यात्रः यात्रः स्वाव्यः स्वयः स्वयः

ग्राबुरायाम्बि:मेशाययदासर्द्धन्तेन् मुीर्देशद्यायसःस्ट्रिंग्ट्र्स्यायहरः

कृत्यार्षित्त्त्री।

कृत्यार्षित्त्री।

कृत्यार्षित्त्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छी

कृत्यार्षित्राच्छा

कृत्यार्षित्राच्याः

कृत्याय्याः

कृत्यायः

कृत्यः

कृ

विश्वास्त्रम् विश्वास्त्यम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्यम्यस्त्रम्यस्त्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्यस्यस्त्रम्यस्त्रम्य

वयशर्बें रायायहै।

सक्त केट प्राचित्र क्रिंट प्राचन क्रिंट क्र

विश्व प्रत्ये स्थान्य स्थान्य

हु.कै.चतु.शविच.वाश्वरातर्वं बावसायर्थ्यात् है। शविच.वाश्वरातर्वं बावस्य स्थात् हें। शविच.वाश्वरातर्वं बावस्य अ शक्षरात्रः वाष्ट्रवात्रात्रं विश्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्रं श्वरात्र त्रात्तेश्वर्ष्णवी

व्रत्त्वाश्वर्ष्णवी

व्रत्वर्ष्णवे

व्रत्त्वर्ष्णवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्त्वर्षवे

व्रत्वर्षवे

व्यत्वर्षवे

व्यवस्वर्षवे

व्यवस्वर्यवे

विवयस्वर्यवे

विवयस्वयः

विवयस्वर्यवे

विवयस्वयः

विवयस्यवस्वयः

विवयस्वयः

विवयस्वयः

विवयस्वयः

विवयस्यः

विवयस्वयः

विवयस्यः

विवयस्वयः

विवयस्यवे

विवयस्यवे

विवयस्यवे

विवयस्यवे

व

देशवःगदःवन्यविग्योक्त्यः महिन्द्राः देशक्षियः महिन्द्राः महिन्द्राः महिन्द्राः महिन्द्राः महिन्द्राः महिन्द्रा

त्र-तिर्वि। वस्य-तिर्वि। वस्य-तिर्विभाष्ट्र त्रिन्द्र त्रिन्त्र त्रिन्द्र त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्र वस्य-तिर्विभाष्ट्र तिर्वि अद्याद्य त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्रात्ते त्र वस्य त्रात्ते त्रत्ते त्रत्ते त्रत्ते

म्बिसास्त्र हे. स्रुप्त ह्यू स्वायास्य स्वयास्य मिन्न स्वयास्य मिन्न स्वयास्य मिन्न स्वयास्य स्यास्य स्वयास्य स्वयास्य

तत्म्भूचान्त्र्यान्त्र्यान्त्रम्यत्रम्यत्यम्यम्यत्यम्यम्यत्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यस्यस्यम्यस्यस्यम्यस्

देशक्षेत्र प्रति विश्व विश्व

- र्वेट्ट्वर्याचित्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम्यः स्वात्त्रम् स्वात्त्रम्यः स्वात्त्रम् स्वात्त्रम्यस्वत्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात्त्रम् स्वात

याद्रा याद्राह्मित्राच्यक्ष्यत्यात्राह्मित्राच्यक्ष्यात्राह्मित्राच्यक्ष्यात्राह्मित्राच्यक्ष्यात्राह्मित्राच्य विश्वाह्मित्राच्यात्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्रच्यात्राच्यात्राच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्या यति देश वश्च हेश ह्या श्री ताथ नेश ताथ हिन । मिल नेश श्रा ने हें ने स्वा या के से ने या के से या के या के से या के य

क्ष्यः क्षेत्रः त्यक्षेत्राचे स्वात्ते स्वात्ते

म्बार्यायासवराष्ट्रीकायदे र्स्नु रायात्याययासक्त्र केन् रेष्टी स्वार्याय

कुँच दूश यश्य पश्चा इ.ज.जर चश्चेश ज्ञा

ব্দ র্য মধ্য গ্রীখ মত্ত শ্লীম্বান ক্ষা গ্রী মঙ্কর গ্রিব বী। মান্ত্রির শাধ্যম නු න දින නු න පණුන ප නි | දි ල දින නි න පණුන ලා තන දි | නිත ಹිද නි मार अम्। नहिम माले परेव य प्रलेख प्रसूच परे रार्वेर रार्वे की क्रेंब वसक उर यद रव यर व रद विवेद सेर। रीव हैं व हि हु स सर हैं व प्रमाश का क्रिया मी के या निवस के का निवस में निवस मह प्रमित्र के नि यम हेंबाबायते ह्वें वे वाबे नेब धेव या वाबे ने केन नम बेंग मरायबेव सेन् यर गहन वायवस व्यायर्स्स व्या ने रदाविवासेन्यर हेंग्या य दे ताया ने व कि दाविद। ताया ने व विं रद वी व विं रद रद दाविव से द यर मिन्द्र य स्वर्ध द्राव पर्देश यहा दे रूट विद्रासे यर गुत हैं यह हेंग्रस रंभाता वाले मेरा समायमा मेरा दे हैं है ही वाले परेन प्यापन र्षेन् पदि से हवा या वार्सेवा वा ग्री है स्ट्रेन् वेन् प्र न्मा वास्र साम विवा દે.હુંદ.તા.ભૂટ.તાલુક ક્યાનું શા કુંચ વર્શ્વર.તા શૂર્યાય શું લા નુંચ શું ક્યાવ કે. क्रेर्'र्सेर्'य रे'र्ग वस्र उर्'यर'र्ग'यर'क्'रर'यविव'सेर्'र्श्वेर्याय'वया गुन हें न हि श्रु स्तरमाधेन न देस्य स्तरमा स्थान दे ने ने ने निर्मा र्वायरत्रर्रायदेवस्त्री गुवर्ह्याष्ट्रश्चुः स्वर्राह्मवस्य यराग्नुस्वस र्वेदन्द्रशर्वेदन्तुःर्वेअप्यदेश्केदन्तुःवर्द्वेअप्ययःव्वेदन्यःधेद्र।

 यभी त चलुंच ट्रिशिविद्यां श्रीश दूश की श चर्सेश तर वेट्रित लुव ह्या। पत्र वार्ष की श्री की स्वार्थ की श्री की श्री वार्स की स्वार्थ की स्वार्

मेश्रिस प्र प्राप्ति स्वार्थित महिसान्ति स्वार्थित महिसान्ति स्वार्थित स्वार्येत स्वार्थित स्वार्थित स्वार्येत स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वा

स्यानश्चित्र श्री ह्याय ह्या परित्यवर्षेत्र प्राप्त स्थानश्चित्र स्थानश्चित्र प्राप्त स्थित्र स्थानश्चित्र स्थानश्च स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस

दुशःग्रीशः तश्चीयः तथः श्चीयः त्यायाव्यः वश्चियः वश्चयः वश्चियः वश्चयः वश्ययः वश्ययः वश्ययः वश्चयः वश्ययः वश्ययः वश

114 শ্লন্থ নলু দু গু শুন গুৰা

पति'च ब्रुट् डेन अरे ब्र्डेंट प यायट अर्ड्ड हेट् क्रें क्रेंड्र वर्ष रट क्रेंन् र्हेंसाचजुद प दूर। देश देनका क्रे अधुद बेल र्ड्ड मेंडिंड्र विवा

(मिछेश्वायः) अवस्य यन मानम् यदे श्री हैं से सदे श्री सहस्य स्वरं सहस्य

(ग्रह्म वित्र महिन क्षेत्र मिन्स क्षेत्र मिन्स क्षेत्र क्षेत्

याम्बद्धान्त्रस्य म्यास्य स्वतः स्वतः स्वतः स्वा स्वतः स्वत

ने द्वायशा गुराधायश क्षेत्र याय विदेश यहाराया धेवार्वे॥

क्र्यंश्रुःद्यायबुदःय।

म्बुरायार्केश्वाश्चार्यं प्राप्त स्थाय स्

चं है। अन्नित नाश्चित इस यम श्रीत य सबम श्री विश्व में से या नित्र या स्वित हैं। अन्नित ने स्वा या स्वी या सबम श्री या सित्र में से या नित्र या सित्र में स

मैश्रम् वर्ष मैंटे जा लूटे तर शिवें चार्शिश टी पश्चितात लुवे चूं।। स्थानपुरम्दे पालूटे तर्व शिवें चार्शिश विवास वर्षा श्रम् वर्षा श्रम् वर्षा श्रम् वर्षा श्रम् वर्षा श्रम् वर्षा श्रम् वर्षा वर्षा वर्षा श्रम् वर्षा श्रम वर्षा श्रम् वर्षा श्रम्य वर्षा श्रम् वर्षा श्रम्य वर्षा श्रम्य वर्षा श्रम्य वर्षा श्रम्य वर्षा श्रम्य वर्षा श्

र्देशचें प्रमुर्गी श्रास्त्रश्रा

यंत्र-दे! दे.सबर-धिवाक्त्र-की:श्रीद्र-सिवाक्त्र-तातु की र रू॥ ध्रम्भाविष्ठेश अटब-धिवाक्त्र-की:श्री-साक्त्र-की:यहिद-कीयाव्य-कर-क्ष्म-सिवाक्त्र-की:यहित्-ता श्री-साक्त्र-की:यहिद-की:यहित-सिवाक्त्र-की: व्यत्न-सिवाक्त्र-की:यहित-प्राचित-की:यहित-सिवाक्त्र-की:यहित-सिवाक्त-सिवाक्त्र-की:यहित-सिवाक्त्र-सिवाक्त-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त्र-सिवाक्त

गु देत्यसम्मान्त्रम् स्त्री वित्त्वत् संस्थान्त्रस्य स्त्रम् स्त्रम्

यहेद निविध्य के अव स्ट ने प्राप्त के स्ट ने स्ट के स्ट के

मिथेशताः ह्ये रापायवे शासस्यस्य मारायाः स्ति पायतरायवे त्यस्य

द्राच्यात्रस्यात्र्वात्रः स्वाक्षः द्राव्यात्रः व्याक्षः व्याः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्व स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः स्वाक्षः द्राव्यात्रः स्वाक्षः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकषः स्वाकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्यः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष्ठः स्वावकष् यथ्ये स्ट्रियं विश्व यश्चर्य स्ट्रियं स्ट्रियं

यम्बर्धाय है स्रुट्ध स्थान स्

र्श्वा अर्थेटः याचटा क्षेत्रः याच्या याच्या याच्या याच्या याच्या अर्थेटः याच्या व्या व्या याच्या या

118 শ্বৰ্বন্ত্ৰ গুৰ্হিন্ত্ৰ

यश्रक्कें मार्थे प्रश्निम प्रश्निम विश्वे विश्वे में। विश्वे में मार्थे प्रश्निम प्रश्निम विश्वे के स्त्री के स्त्री के स्वर्म की स्वर्म की स्वर्म की स्वर्म की स्वर

क्ष श्री शर्ष वर्ष क्ष्म वर विद क्ष्म च ता वह क्षेत्र च वह

भ्रद्राची भ्रुद्र ।। क्रिंभागी भ्रुद्र ।।।

ब्रेशःगश्चरश्चरश्चाय व्या

दे दिश्वका ग्रीक हैं राय यहित का अक्षेत्रका रहे व यहार या प्रीव हिं।।

म्बेश्वाचित्र त्रिश्व स्ट्रिंग च्यून स्ट्रिंग च्यून प्राचित्र ह्या । विश्वाचित्र विश्व स्ट्रिंग च्यून स्ट्रिंग स्ट्रिंग

इयायविवागीः केंबायहा

वश्राचा क्रम क्री क्षेत्र के देन चर्चे क्षेत्र कर चित्र चित्र क्षेत्र कर चित्र क्षेत्र कर चित्र क्षेत्र कर चित्र क्षेत्र कर चित्र क्षेत्र चित्र क्षेत्र चित्र क्षेत्र चित्र क्षेत्र चित्र चित्र क्षेत्र चित्र चित

लुव व्री जिश्राता ने व्रीत क्ष्मीश्वाता स्ट्रा श्रीया त्रा मा क्षित्र त्रा व्रीत क्ष्मीश्वाता क्ष्मी व्राप्ता क्ष्मी क्ष्

र्म्यायस्थान्त्रीः क्षेत्रस्यान्यस्य स्वात्त्रस्य स्वात्

तस्य पश्चीरः बेश विरः क्षेचः अष्रश्चारं प्रत्ये स्था प्रश्चीयः स्था विरः स्था विरः स्था विरः स्था विरः स्था विर स्था पश्चीयायः प्रेन्त्वा विर्वेतः प्रत्ये प् र्यंदे पश्चप व अवत र्वा पश्चरक्ष य विश्व भी के के। क्षित्र य विवर्ष

मुक्ता मान्या क्ष्र है स्वासान्या स्वासान्य

पश्चिमार्भेद्राचारी-देवो चार्याचेश्वाकोत् श्रीकार्णस्काक्षान्त्राचारी वहना स्वास्त्राच्या स्वास्त्राच स्वास्त्राच्या स्वास्त्

मानिस्य वासानी स्टाय प्राया स्वाप्य स्

चर्म मी स्था साम के से में मार्ट्स मी से में मार्ट्स मी स्था मार्ट्स मी से में मार्ट्स मी से मार्ट्स मी मार्ट्स मी से मार्ट्स मी मार्ट्स मी से मार्ट्स मी मार्ट्स मी से मार्ट्स मी से मार्ट्स मी म

त्यस्य स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान स्थान स्थान्य स्था

यश्चर्या केत्र व्यापश्चर्या अर्थन क्ष्या प्रश्चर क्ष्या विश्वर व्याप्त क्ष्या विश्वर व्याप्त क्ष्या विश्वर व्याप्त क्ष्या विश्वर व्याप्त क्ष्या विश्वर विश्वय विश्वर विश्वर विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्

प्रवित्यःश्रुपायः स्टावीः द्वार्षात्रवे त्यायवे त्याये द्वार्षा के विश्वयायये

सक्त हिन्। यर हीन दुना त्य में कित नर्जिस ही सिर्म की केन है यर हीन इन समस उन ही नेंन हुन्न निम्न सम्यास सम्यास ही सिर्म ही केन है यर हीन अर्जन होने वर हीन दुन हम कर नर हमस ही सिर्म हो केन है। बेमस सक्त हैन में निम्न स्थान

क्र-प्रवृष्ठ वेशका शे पुष्टा जाया हुंच त्यीका प्रक्रा ता ट्रेलूच। यी श्री प्रक्ष श्री पश्ची द्वा ता प्रक्षेत्र प्रक्षेत

चेत्राची, ट्रेने, च.ट्रा अ.सक्स्स्याचीवेष ट्रिक्साचर मेत्। चैचाक्ष्य स.चाबुंद ट्रिक्स्स्य झे.जुद्राचाता चाक्र्य त्वीं च चक्ष्याच ट्रे.लुद्री ट्रे झुट्राच च.सपुर ट्रेस्स्य, यहंत्राचा क्र्याच्या क्र्याचा क्र्याच हे.लुद्री ट्रेस्स्य झेव. क्रुद्राच् ट्रेस्स्य झे.च्येंचे तपुर चक्र्याच क्रयाच हे। या चिक्याच स्थाच से चित्राच स्थाच प्रतिहत्त्व द्वीं चाय प्रतिहत्त्व स्थाच स्थाच से चित्र चित्राच स्थाच से चित्र चित्राच से चित्र चित

यमः ने मः ग्रीः कें मानस्यान्येय

म्कृष यात्रास्त्रेकागुः र्क्षायञ्च म्विमार्याक्षे। त्यसः स्वानीः व्यवः त्यमः

त्तुः क्रमः त्रुः स्वाः त्याः क्ष्यां का त्युः द्वाः त्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्य द्वाः द्वाः त्युः स्वाः व्याः व्यः व्याः व्य श्रिय दिस्त्र य स्वि। स्वाया वित्र प्राप्त य स्वाया के त्या स्वाया के स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वया

मुन्नास्य क्ष्या मुन्ना स्वाप्त स्वाप

न्य वर्षेत्रात्मः विद्यक्षेत्र क्षेत्र व्यव्याः विद्यात्मः विद्या

न्दां अर्थेद ख्रान् विकासिक की विवाद के प्रत्या की स्थान विकाद की की विवाद की स्थान विकासिक की की विकाद की वित

क्ष क्री पश्चित्र त्यस्य त्यस्य प्यस्य प्यस्य वित्रस्य वि

द्रमश्रीय। विक्रांच त्यस्त्रीय त्यस्त्री स्रम्यस्त्राच्यस्त्र केन्द्री व्यक्षियः त्यस्त्रियः व्यक्षियः व्यवक्षियः व्यक्षियः विक्षियः विक्यविक्षियः विक्षियः विक्यतः विक्षियः विक्षियः विक्षियः विक्षियः विक्षियः विक्षियः विक्षिय

मिनेश्व पानित पानित्र क्षेत्र प्राप्त प्राप्त विश्व व्याप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप

महेन प्राचन स्थान स्यान स्थान स्थान

य मुक्तें की क्षेट रिक्ट पर्म मान्य के वर्त्तेट हिट न्या प्रमाय की होत् सम्मिन के की क्षेट रिक्ट प्रक्षित्र मान्य के वर्त्तेट हिट न्या प्रमाय की होत्

मानुकायः मीन् गुःइका न्यायक्ष्मिं स्वायक्ष्मिं स्वायक्षिम् स्वायक्यक्षिम् स्वायक्षिम् स्वायक्षिम् स्वायक्षिम् स्वायक्षिम् स्वायक्ष्मिन् स्वायक्षिम् स्वायक्षिम्

श्चीय य न्या यम चेन य श्रे। अनुस्र यत्या हु र्केश नेन श्रेंद्र य नेन हें या स्था यत्या हु र्केश नेन श्रेंद्र य नेन हें या स्था यत्या है या स्था या स

ग्रवि:वेशःग्री:केंशःद्रश्

त्याचित्राक्षेत्राचित्राच्याचित्राचित्राचित्राच्याचित्राचित

यह श्रेशक क्षेत्र की ट्रेंब होट य गहिन पह हैं है है है ये पह के हैं नह स्था विश्व की हैं। यह श्रेशक क्षेत्र का विश्व यह से हैंट में यह हैं है है विश्व प्रश्न श्रे हैं नह से हैं में श्रे हैं यह श्रेशक क्ष्म की ट्रेंब होट य गहिन पह हैं है है है वें प्रश्न श्रे हैं नह से हम

 यश्चरम् यते व्यम् अपम् य ८८ यञ्च यस त्यम सु सुअ देवे वयम

महास्र यानि के प्रति होता या विषय से सहात हिंगा होता या विषय से सहात हिंगा होता है होता या विषय से सहात हिंगा है होता स

त्त्रा त्या त्या स्वास्त्र के स्वास्त्र के

विष्यात्मा स्वात्त्र त्यात्र त्यात्मा स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्व स्वात्त्र स्व त्र.च.कुच लुच। ज्या प्रमें त्र हुँचे त्र.ज. हूंचे श्रम त्र हुँचे क्षेत्रश्च थेशश्च शे जुचे त्र हुँचे. हुंब हूंच थे श्रम ज म्ट.चलुंचे शुने तम श्री श जे धीम.चुंश तम हुंचे हुए। तप्र ज्यूम प्रमें श्रम विश्व वश्च श्रम तम विव प्रमें श तम हुंचे हुए। प्राचिव शुने तम हूंचेश वश्च वश्च वर्श्चेश तो। चील प्रनेष त प्र प्रविश्व प्रश्नेश मा चलुंचे शुने प्रमें हुंबेश वश्च वर्श्चेश तो। चील प्रनेष त प्र प्रविश्व प्रश्नेश

यद्यात जमारत्य वि पाल्लिय श्रम क्षेत्र स्वा प्रमुख्य वि पालिय। मुं ह्यें माना जमारत्य वि पालिय हो। वि वा क्षेत्र प्रस्था प्रमुख्य प्रस्थ वि प्रमुख्य प्रस्थ क्षेत्र प्रस्थ क्ष सक्ष्य हो हें माना प्रमुख्य प्रस्थ स्व प्रस्था प्रमुख्य प्रदेश प्रस्थ क्षेत्र क्षेत्र प्रस्थ क्षेत्र क्ष

तत विरःश्वानी की मार्च पर्य विश्वानी विष्य विराश्चित पर्य विराश्चानी विषय विराश्चानी की प्राप्त की की विराश्चान की की विश्वान की विश्वान की की विश्वान की विश्वान

ख्यात्री, खेशका सी. जुच चतु. श्रीं राया खेया श्रीं प्राप्ता विश्वा विश्

बिट्टाचि, लव. कट्टा स्ट्राच्या क्षेत्र अस्त्र न्या स्ट्राची स्ट्र

न्यव तु मानव वस ये सुद यर घेम केव य मार्डम यव कर माद मीस गुद यहुँ य यस केंगा

क्षेत्रः तह भारा त्या क्ष्री का क्ष्री क्षेत्रः क्ष्री क्षेत्रः त्या विद्या क्ष्रिक्षः क्ष्री क्ष्रा त्या क्ष्री क्ष्रा त्य क्ष्री क्ष्रा त्या क्ष्री क्ष्रा त्या क्ष्री क्ष्रा त्य क्ष्री क्ष्र त्य क्ष्री क्ष्र त्या क्ष्री क्ष्र त्य क्ष्री क्ष्र त

रे'सॅदे'र्केशयत्व।

क्षे : ब्रॅंबि: क्रेंब्य पत्त दी देंद 'ग्रीक्षे : ब्रॅंदर क्षे : ब्रॅंबिक्से : ब्रॅंदर वार्वेद

पर्श्व में प्रति वारायमा विश्व में में में प्रति के में प्रति वार्ष्य में में प्रति के में प्रत

त्रस्तान्य क्रिया व्याप्त क्षेत्र स्त्रस्त प्राप्त स्त्रस्य स्त्रस्य प्राप्त स्त्रस्य स्त्रस्य

चिरान्यक्षतः श्रूटः च्यात्राध्यक्ष्यः प्रवित् । त्रिः स्रित्यः चित्रः वित् । त्रिः स्रित्यः चित्रः वित् । त्रित्रः वित् । त्र

ये द्या या भी वा वा श्री के बिद्र | हे का विद्याति सावित माश्य की सावित सावित वा स्था की सावित सावित सावित सावित

भूत क्षेत्र पालव ग्रीमायम अर्केत्य प्रकेष परि अर्केट त्यम भ्रीमाय प्रकेष प्रके

यदेव त्र खेब त प झ्वाब त. श्रेब व प्रधाब द यह विद ततु. यह व हिं पर्वेच त्र खेब त प श्र्वाब त. श्रेब व प्रधाब द यह विद ततु. यह व हिं पर्वेच त्र खेब त प श्र्वाब त. श्रेब व प्रधाब द यह विद ततु. यह व हिं

(बाबीश ता.) पर्झेश जारा है सू जा बाधिश जारा। रेट तू पर्झेश जारा है र्भें ता नर्देश ही अर्द्धन हेन ही। क्रें अब तह्या ता न्वर हुन वहेंन वा क्रें अ श्रद्मी द्रम हेंग पति थे गहेद यें ग्रुर प है। हर पहेंस यस समाहिस य ता झूबां श क्रूंशका उद्देवा देवी ला. धुटाइ उद्देव ब्र्ट वं का. ब्र्टिंग टाक्रूंश. यश्र क्रिंश द्याश्रवा उत् रदः पति होत् यो दः स्वा या वीं या यो क्रिंस प्रा क्रिंस प्री वी हेश्चित्रिक्षावमश्चर श्रुसाक्षात्र वार्षिमश्चर निर्हे देश्चर भनेमार्ड्साम्नेशन्दरमा चया वया चुर्याय स्थित सामित्र स्था वर्षे सामित्र स्था वर्षे सामित्र सामित सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित सामित सामित्र सामित सामित्र सामित सामित ब्रिंदायबा पर्झेश्रात्मश्च हों संबुद्धायते स्नुप्तब दिन सुदानु ह्वा हिंग दूर चल ब्रिट्से हेंगाणे ने बाहे ग्रामा पर्दे हारा वर्षे साव हे सें सबर ही स तर्रः श्रीतश्रवर्तर श्रीतः विद्यार्ह्ण द्रान्य विदा श्री हे में खे से साम्राह्म वहा र्ब्रेअअ'८ह्ग्'न्श्दि'हेर'दे'८द्देव य'न्वर'र्वेच'धअ'दवन्र्हेय'अेन्'धर' क्षेत्र:ब्रांच:श्र ५व्ह्यूद:च:बाडेबा:लेत्रा

र्टा चेकाच महें बेबाता अवेश हं बाब्रेटात क्षेत्र खेंचा टि. क्षेट्टा प्राप्त क्षेत्र खेंचा स्त्र क्षेत्र क्षेत

यश तुश्र मानेश यम श्रम् सुश्र य त्य श्रम् मानेम मान्त्र श्रीश यम श्र हिंद य मानेम विम

প্রব-শ্রীখনে বৃ. জুখনে প্রনাধিপা

या सुर्वे प्राप्त के के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के क

त्यस मी मोनास सेत्य मिनेस सें।। त्यस मी मोनास सेत्य मिनेस सें।।

ज्ञवादिः दुश्वाश्यापः द्वा प्रमान श्रीव श्रीत प्रसान श्रीत प्रसान श्रीत प्रमान श्र

त्तर क्षित ब्रीक्ष क्षेत्रका क्षेत्र त महिना त्वित हे हुँ क्ष तक्ष क्षेत्र न्त्र क्षेत्र क्षे

महिन्य प्र मी मोमान ने क्या पति त्या प्र में से व्या वीत यःश्वरदायःयःग्वश्वरादी। नर्गेवःसर्केगःगश्वरःयःयन्वेवःवेवःश्वरदायःयेवः है। दे लट श्रुवशामवशादमाँव अर्केमामश्रम हेश शुर्व पारी अर्क्व हैर वै। र्नेव-न्यायमः प्रवायायेन प्राये स्थान की वास्त्रामुकान में वास्त्राम् वास्त्राम र्गे'न'र्रा शे'र्गे'न'र्रा खरारु'स'नक्ष्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र्रायक्ष्र १८। विरक्षिय श्रेश्वर्य प्रवाद्यविष्य वास्त्रिय विद्याने विद्या र्गोव सक्ता हे या शुर्व पा क्षेया पा है। यह रण पर व क्षुवया जवस र्म्ययः अकूर्याः वश्यः द्वरः स्त्र्यः लामः स्त्राचारः स्वयः स्त्राचारः स्वयः स्त्राचारः स्वयः स्त्राचारः स्वयः क्रिंटा हिं खेर दा से दार हिंता बी सासदस मुसाया क्रेंदा दा क्रेंसाया यस से क्ष्मायते नि तर्व निवासक्ष्माया व्यापक्षित् यते मुम्मा हिन्या धिव है। ट्रे.लट.क्युं.शटश.क्यं.ज कूर्य तर.पहुर्य.त.कूर्य.पविट.र्वे.ग्र.विटा.त.जा. ल्ट-कुबायद्याववाद्याविकाराक्षे वट्-स्मबाग्रीकायश्चित्राक्षेत्रा श्रे.चेर् देशव.कु.केर.बिक्य.तथ्र.च्यापर.चश्चित.क्षेत्र.त.रटा वच्य. क्षेत्रश्च विषय पर देने पर्या में क्षेत्रश्च त्या प्रमान में क्षेत्रश्च विषय पर देने पर्या में क्षेत्रश्च विषय पर देने पर्या में क्षेत्रश्च विषय पर के के के विषय प्रमान के विषय प्रमान के के विषय प्रमान के के विषय प्रमान के विषय प्रम के विषय प्रमान के विषय प्रमान के विषय प्रमान के विषय प्रमान के

स्ट्रिंट्य मुद्देन्य मुद्

त.क्री लट्टचात्तराव.क्ष्याम्चित्रकाचीत्वात्त्वाच्याचे चर्चेट्ची.क्ष्या तर्राच.चेच.ताज्ञटी.तातु क्ष्याम्चित्रकाचबीट्याट्टा म्चैच.ता.चोट्ट्रट्य मुट्टे त.ट्टा चोट्ट्रट्यामुच खे.ट्येत्त.चोठ्ठशलुच.छे। दुव्राप्तक्य.कुटा ट्र्येट्या चोठ्यात.त्यम् मु.चाव्येत्य.व्येत्य.चीट्याच्याचे। क्ष्याम्चित्रका.ह्याचीट्य ख़ेब श्रेट तट क्षेंज क्रीश केशश शे. जुब तर होटे. त लुब ह्यी। श्रीव श्रीय पट्यो श्रीव श्री जुब तर त्या श्रीश त वशश के रट पढ़िव ज़ श्रीय श्रीय पट्यो श्रीव श्री ज़ब त त्या श्रीश त वशश के रट पढ़िव ज़ श्रीय श्रीय पट्यो श्रीव श्री ज़ब त त्या श्रीश त वशश के रट पढ़िव ज़ श्रीय श्रीय प्राप्त केश के प्राप्त श्रीय पर प्राप्त श्रीय प्राप्त श्रीय श्रीय

पश्चिम्याम् क्ष्री स्वास्त्र विस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्

चित्राय्यसम्बद्धाः व्याप्यस्य विद्यस्य विद्यस्य

अद्भुद्र स्वा अदि रहें अपविश्

यत्वः य श्रूनः स्व यतः श्रीवः यते श्रूनः स्व वायः श्रीवः याः स्व विद्या स्व

ने पति यदायस् व र्योव मन के व सर्वे मन के व स्व मन के वा साम के वा

प्राचित्रस्य प्राच्चेत्राचित्र।

प्राचित्रस्य प्राच्चेत्रस्य प्राचित्रप्रस्य स्थान्य स्थान्य

यम्ह्र्यकात्मान्त्रियात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षाः विद्यात्वर्षः विद्यात्वरः विद्यात्वर्षः विद्यात्वरः विद्यत्वरः विद्यात्वरः विद्यत्वरः विद्यत्वरः

सान्यान् क्षान्यान् स्वान्त्र स्वान

144 প্রবশ্বরূ গ্রী সুঁহ ধ্রা

न्त्रेरः येन् केर हें न्यास्त्र्या श्री क्षे व्या केंन प्या है प्रते प्रते की हिस्या हा

क्रिंशः सुदिः सर्वतः हेर्।

पक्षत्र द्व रशत्रात्र श्रीतरा भीतर्ह्या की स्त्र श्रीत श्री । प्रत्य श्रीतरा क्ष्य की श्रीतरा की स्वासी स्वासी । प्रत्य श्रीतरा की स्वासी । प्रत्य श्रीतरा स्वासी । प्रत्य स्वास

न्दः संदेश के न्यू ते अर्धन के निष्य विश्व के निष्य के न

प्रश्नित्राचारित्रेश्वाचार्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान

पन्ना क्षे.श्च्रीयात्राज्ञेश श्रुत्रश्च क्षे.श्च्रीय्यात्राक्षेत्राच्यात्रेश श्च्रीयात्राक्षेत्र श्च्रीयात्राक्षेत्र श्च्रीयात्राक्षेत्र श्च्रीयात्राक्षेत्र श्चर्यात्र श्च्रीयात्राक्षेत्र श्चर्यात्र श्चर्यात्य श्चर्यात्र श्चर्यात्य श्चर्यात्र श्चर्यात्र श्चर्यात्र श्चर्यात्

> द्यायर मुंत्य प्रते स्वाक केव स्वा | विकास स्वरक क्वा | स्वा स्व क्षा स्वरक क्वा | स्व क्षा स्व क्षा स्व क्षा स स्व क्षा स स्व क्षा स्व

चीत्रेश्र यार्क्साची सुति सर्वे न त्री वित्र यात्रा ह्रित्य वित्र या चीत्र त्रा स्त्र त्री वित्र या क्षेत्र या चीत्र त्रा स्त्र त्रा स्त्र त्रा स्त्र त्रा स्त्र त्रा स्त्र त्रा स्त्र त्र त्र स्त्र त्र त्र स्त्र त्र त्र स्त्र त्र स्त्र त्र स्त्र त्र स्त्र त्र स्त्र स्त्र त्र स्त्र स्त्र

त्रमिक्षेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत् त्रमध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत् त्रमध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्रात्मध्रेत्

> ¥अ.चर्र्बेश.क्ष्यंश.बी.चक्टं.ता.लुश्री मैज.तीश.क्ष्र्यंतपुरमीश.चर्चंत्राचीं

146 প্রব্যবস্তুর্ গুর্ব্র্রা

क्रेंद बुद पश्चय महाय होत वदी। वर्षे पते देंद तु वश्चय यम र्नेगा क्रेंच क्रेंद्र केंद्र से स्वर्ध यदी यदी।

७ | किंबाग्री द्वीरबाश प्रस्ति ।

पर्केर माँ जलबाब न जहरा रनज बाब्ध कि मी मन मार्थ प्रा

याद लिया गुत्र दु अ केश वा । श्रेन य याश्य दु इस वर्षे र या । श्रेस उन गुनु तारे व पान व परी । किंवा गु न्वीर व य धुप वर्जय वर्ता । पार बुवारवर्ष्ट्रति क्रूर शुराय। दि केर ह्यूर य वुष य यथ। दिव य दे केर शुःदवःयन्त्रा व्रिक् ग्रीःश्रुःषादः ने हेन द्वा वि सूरः व्रःसः नद यदेश यशा । अर ग्री क्षेर में से स्वा दि पतिव केंब से रह कर दर वहेंब पता विस्थ ग्री रिवीदमायाद श्रास्त्र हिं भूर देश इस ह्या ह्या ह्या ह्या हिं भीर ही है हिंदि टु.शर्-एक्टिरा रि.पथुय.धूय.शूर्यात्रमास्रीत्यातमा क्रिमार्टिट्याचुय. रिंदी:श्रेन्त्वीरा हि.केर.श्रर.श्राविशावर वाववा विर वृवा बैटावर श्र त्रशुराय। दि पतिव रहें दार्शे द्रास्य स्मावरा प्रवाद । विकारी द्रीरा ग्राप्त से अर्वेट्ट्री ब्रिंग्यन्त्रे याट्ट्रयाट्ट्याट्ट्यां वस्य विस्य च स्या चर्हे शुरूर्या। दे'न्दर्दे'भे भुँग्राक्षित्रकृत्वया विंद्'ग्री महायविव तसुरायमा तसुमा विषय क्रें हैर दिंद हैं हैं धैबा दियाय दे दे पठना शुराया दि के दे दे दे दस मानदःषी | सम्बर्धना परान् सूरापरानुन्। |केंबाग्री न्वीरवादी स्त्री सा लुवी विभालर प्यापा तर प्रश्निर पा भीता विभासमा गीव दि भूव भूरमा श्रेन्। विवासायमासवमाद्वीसावाया वित्रुमामेन स्वास्त्रेन हिना । द्वा इस्रभारावि दुर्दिन वाकायायाना हिं भी वराव वावका शुरावा हि भी दिन वे

म्बायाय भिन् । दि प्रतिन क्रिं क्रिंग्स ग्रीय प्रश्लीप्र प्रति। क्रिंस द्वीद्रस नेव:हुदे:सेद:यदम। विकॅम:यम वेद वे:गायव स धवा ।स म्वःवन्यः ब.पूर्य चीबाजा पर्कीय। विषय बालूर व व जब चेब तथा विष ज श्रिश रेव अर्ह्यर प्रमा विश्व से हे त्या मुक्त वा विश्व में प्रमा दिया पश्चेर्यस्य बर्। हि स्रम श्वेष्यावश्च वर्षिय श्वेष्य त्या वर्ष स्यः श्री वर्देन त्यूरा | दे प्रविद हें व श्रेंदश ग्रीश मार्थे मार्थ | दे वे श्रेंदश मुकालेकारी पहना हिल्हर सूर्व यायकार्येय वा विद्यकारी सूरायर वर्ष्युराचात्र्रम् । दे प्वतेव कुँव र्योदशायश मुलाव। । क्रिंश मी श्रु के दारा हा म्बर्या । हु निरःश्वेरःचें सेन्रें लेखा । यहेमाहेव व वे नये र होन् गुरा।। दे.लु.प्टाबारी श्रेट.चू धुटी विषट्य.चू ब.चर.चुटे.त क्षेटी श्रिट.चू श्रेट. त्रतः त्र्रेर तायमा वित्र र्यास्य मानेय नराम्या शुर त्रा वि रे पी रि पी रे पी <u>श्रदशः कुशः हेत्। विश्वः ठवः शुक्रः चीः यत्तुः र त्याः । देः यत्वेदः शः यंदः ।</u> वश्रमान्द्र-तम् वि:र्टरद्र-यद्यः दव्यः त्यव्यः विदः। वि:र्युवः श्रेर्टः यदः उत्तरास्ट्रिया विश्वास्वानात्वीयात्वीय वरावुया वि व्वास्तुया विस्तर दे हिंदी क्रिका अस शिव ही हेव दे तर्देरी दिस ही का ही दे हा तर है श्रुरायात्वर्षा । बरबासुबार्ची तबदार्चेच यर तश्रुरा । दि से द है सा ह्या । यदा श्चित्र-प्राप्तिमान्तर्तुःच-प्रदा श्चित्रम्बद्धन्यःप्रार्द्धन्यःयःस्विन्। । ଞ୍ଜ୍ରିପ'ସ'ନ୍'ଭିଷ'ପଞ୍ଜ୍ରିପଷ'ସ×'ସ୍ଥୁ ୪| |ଦ୍ର'ପର୍ଜ୍ଞର'ହିଁଦ୍ର'ସାଷୟ'ସ'ଭି'ଶିକ୍ଷା | वर्देन्-न्दः मर्वेद् स्थेयशये वर्षः न्द्र। वर्षेद्रः य न्द्रः वे स्थ्रं स्थ्रे। श्चितः यः वर्षः लुश्राचर्स्येपश्चात्रम् विस्तिम् युग्याच्या विश्वास्त्रम् । विस्तिम् विस्तिम् विस्तिम् विस्तिम् विस्तिम् विस्तिम्

दे चलेत दें न् नामय च प्ये सेसमा विदें द कन्म या संग्रादे स उन् । प्ये नेब में भी के केंद्र में द्वारा में केंद्र केंद्र मुक्या में भी केंद्र म विद्वेश्व यदे अर्दे। । कुयायस हे क्षेत् वास्यस्य वाद। । दे द्वाराम मुंशर्त्र र्येट्य र्येन । विसस ने नसस्य मर मुंद स लेवा । सली नमील वर लूर तपुर्धी दि.भ.भूर.तर्मधन त.क्षेत्री विष्यं सूरकायराय ल.सुस. गुर। दि'यवेन दे अ'से द्रायमान्या किंसा द्वीदस नदा ब्रीमायद्वास लुषा विर भूर.स.लुष. श्रुब्य.चयर भूषा विश्वर च.पीष.जबाईस ग्रुज. य। हि.क्षेत्र.यर्वा.कुब.यक्ष्व.तत्र.वी ।क्ष्वाब्य.त श्रुर.तपु क्रूब.र्याय.पा । यद्मार श्रुक यन्त्रीम्बारा धेव। विद्निःकम्ब ग्रीकार्क्रेटकाम्द्रियानुतेः हुरा विर भरे क्षेत्राय लेकारय यहेवा विशह मार्थ यह या हूं राय बेबा वि.च.चाश्रुमार्च्याश्रमशर्श्वेदावेदा विस्तृतार्थिया वे श्वेदावेदा चत्। क्रिंशके मराचलेव सेराय धेवा हि सुमा ह्वा सदे से वाहा विर गुरः अर्वेदः चः अप्षेत्रः य। दिः चलेत्रः र्वेदः अप्रैत्रः गुरुषः गर्षेषात्रायदे। व्रित्रः ग्रे'न्द्रीटर्सग्ग्रद अर्वेदः अःषीत्। विन्न'न्दः वन्न ने'द्रसः हेन्न'न्दः। अिदः मु.पर्ट.चेल मैं.शक्ष्य.मुला विशाह्में चलु.स्.पवीट.च.लटा विवीट.ट्ट. त्वैर.जशःग्रीर.तशःस्। ।अरशःग्रीशःस्त्रशःग्रीःस्र्रेवःजशःलरः। ।स्रेरःचः श्रेन्डिन्सर्वन्द्रेन्स्येन्। विंश्वेन्स्निन्द्रेन्स्वन्द्रेन्। विद्यास्त्रवा हनायदे केंश के न क्वा | दे सुर रे वेंद अर्गे खे र् | विहन् श्वा पि केंदि श्रेन्यःक्ष्म ।नेःपविदःर्क्षश्रह्मश्रद्धश्रह्मश्रद्धः ग्रुम्। ।पह्रण्यायः विन्नेः **ଊୖ୕**୳୷୴ଵୣ୲ୣ୲ଌ୳୕ୣୣୣୣ୷୷ୠୖ୷ୖ୕୷ଊ୕୶୲ୣୣ୲ୢୠ୷ୠ୲୷୷୷୴ୡୄ୲୲ है क्षेर क्रिंव प्रविव क्षेत्र दे प्रविव | दि त्य है विवायहवा यर हा | यहेव

वश्च त्वीरः पर व्याप्त । पिहेन वश्च त्यायाः पर व्याप्तः पर्याचा । मुडिन गुर लॅंद्र स्य बेंद्र दा विश्व यह स्थ्र हेंन यर वेदा दि वेद व म्नार-इधि नदीय। हि सूर यने मिनेवाय केंग्र इसया हैन। निख्या हैन हैं भ्रूप यर होता हि सूर हे त भ्रूर यदे ग्रुग्या । न्रायदे र्रेन् हे हु दर री विश्ववाद्यानस्य अर्ह्य वर्षेत्र व स्त्री अस्त्र हेर् ह्वायायदर हे न्दः वर्षा विवास वरः न्दस्य वर्षा वा विश्व व सेन् केनः वह्न व धी । वादः विवादे सुर चन्वा सेन् धवर। । है सूर चन्वा नरः चन्वा वीर यहमा हि:सूर क्रेंमिट हुंस क्रुं हा दिंद बेस है हें दार होता हि हैन चरायदे तुंबा खुवी । चर दें लेबा वे यहूँ न प्याचे । विंव ब्रांट्स या वा मर्षिम्बर्यान्ते। बिस्नबर्धन बिस्नन्ते पर्हेन्यमः ह्या । ने केन् केन्सेम्बर चलाक्रिमः व । अरबाक्यिया बेबा वे राम्हें राम है। । श्रेषा प्र पाईषाबाया चहेब बर्म ही दि संसे प्रति स्वराय वर्षुरा क्षि से प्रति वर्षायाय से प्रति है जना क्रिंगमी रेम्रेट्स है रच है नेवा मि रट है न व व नहें न वहा दिया यर-द्यान्यदे नेबान्यामुखा । अस्त्र केद्र क्षेत्र नदे स्वानी निवान न्दायक्रमायमञ्जूमा मुस्ति न्दानी स्थापने व व सम्ब्री । दिवी याञ्चयान श्रायेन प्रति । विष्या । विष्या विषय स्था विषय । विष्या विषय । विषय । विषय । विषय । विषय । न्द्वीदशायार्हेगायम्द्रीत्। भ्रिःषीम्यरायवित्रःह्रेंद्रयानेत्। मिंसीम्यशा ग्रम्पर्वेद्रायान्त्रे। व्रिक्ष ग्रीप्रविद्रकाग्रीम्प्रिं विद्रायान्त्रेद्रायान्त्रेद्रायान्त्रेद्रायान्त्रेद् श्रेन्य। निवायदेख्याधीर्देवंन्ना निवायदेख्ये भी सक्ताकी निवायदेख्या मुद्र-द्रमात्यक्षः वृत्यं युद्र-या विक्राग्री-द्रमुद्रकालेका यहूर्न्य राम् विद्रा बाद्धराश्चरायते हिंबान्दरायम् । विकार्तरायस्यायस्य स्वरं

इसब रदाविव सेर्य हेर्। किंब ही रहीरब ख्वार्स्स यर हा। सर्वेद र्ट्यूशर्ट्यक्रिश्चत्रं तर्टा शिंद्धर्ट्यात्तर क्रियत्र तर्टा क्रिश इसब हे. केर इस उर्हेर तथा विशव प्रक्ष्य हेर हूं में या महा विश्व में न्द्र प श्रुर्वान्द्र। भ्रिन्द खुब न्द ने चलेव धेना भ्रि अकेन हुवा व इस-न्याया । यदि केन दे केन अर्डन केन दें। । बेसब केन इस या या के बड़ अर्वेदः। दि सुर यहेग हेव यहेग हेव यहशा विद्य हु यहेवः त्यसः ल्किं म है। विकें कें रेष व दे कि दें। विदेंद कवा बद मब हु म् पर्मा वि.रूप पृष्ठे श्वा चर पर्टा दि द्वा दवावान प नटन मुन खिबादरै केराया वसवा उर दे। | ररावी इसायर हैंवा यवा परेटबा | वर्षा हेर सेश्व मुंक वर्षा वर रख्या विद स्व रेट सेव हे व सेवा विम् श्रेव र्दर प्राया भीवा बीटा। विवास दिया मानेय मुद्रा पदी हिना । विर्मेद प्रा दर्वे अ अर्वेर धेवा विकारय अर भे पावकावका । अर्केग हु ले यर क्रुर-य-धिका | प्रद्या-य-प्रह्माका-यक महका-युक्ता | अर्दे सेते स्वी जबाबीस्य त.जबाबा क्लिंचबाचर्षेतुः क्लेंचब ग्रीबाचीब त.स्थाबा विवेद. म्चनमाञ्चायाळेबाय प्रविद्या । वित्र स्वाया स्वर मुक्ता । वि पवित्रमनिग्न पारी सर्वे पार्टि । हि सूर थे प्रमुख्य समाग्री सर्वे । क्रि सर्वे श्रमभायम्भायम् । दि पतिवासी नियम् क्रिअस्रअस दे सेन् पर पहनासा | न्यद न्य वर्ष न्यस न्यद पर त्या पर्देशकिय.पर्यं ग्रीशन्द्र, पश्चीर अप्रथा । हि. क्षेर. र में शत्र्र प्राचा तारी । देव'क्रेब'मक्र्या'वे'मब्या'म'यद्। विश्वमान्व'मब्यं न्याम नुमान्यम

व्या विंद ग्रीम नामाय बिद दयय स्व यदी । श्रुस र इ निकेस सस्व वयर या । बादका कुका दे थी आतुव व गवका । अर्थोव में दे थी गानुगाक ही श्रुवा | निश्मेल च अट. तूर पर्वेच श्रवश्च मेटा | विरित्त विश्वश्च विरित्त चयु.ब्रिम् । रिव्वेट्स वेर व रर् शुर च यम्बा । स्रेससःग्री ख्य दे देस हॅम्बारावया |देरावे क्षय वह्या यर शुरा | वे वे रार्ट रेग इसादग व। । शन्त्रस्थाने भी प्रमानित महस्य। । न्यम् धुन केव येथे महस्य सकेन ५८। विंव क्षेत्रकेर देख्या अहंका । विकाय मास्रुक वें मिर्डवा केर दें। वर्देशस्य म्यूरायाचन्त्र श्रुर्वे । विश्वास्तरे वराव व्यवस्थ अविवादरा । तसवासायित्वत्व स्थार्सेवासानेत्। । नियत् सुवा स्रेवा से त्यवा सेत्। । न्यम् द्वाम् द्वाम् विकासम् विकासम् विकासम् त्यकास्य भे वर्षान्य । व्रिट्य भेरायते हो यग मेका । विकारय र्ने हा रवःरुःवह्व । चुदःस्व रेदवरःश्चे वस्रमः द्वेदः। । देःवरः यदः देःवस्रमः श्चे द्या सित्य द्वा स्ट्रेट त्य सेट त्य रही सिट द्वा है प्यतिय देवा हुर सिंह क्षेत्र दि: सान्दर वर्षे अस्ति । ब्रिंद गार्डिया व विदेश मानवार विदेश । यह्म हो देवा । हि वे अप्येव दे प्रवेव मान्या । दे प्रवेव के अप्येव हो स मार्क्षमाश्राम् । वि:मेश्रास्थायदीरःमान्नेमामानश्रामः। । इत्यादर्द्धेरायः धिकायोः मेकायोव। । श्रेः मेकायादीः वर्दे राय राष्ट्रीत्। । यत्वान्दरायन्वाचीः बेबायदेव यथ। हि.बीर ही रेंपाइयायहगाय या । यर्ग येर इयाया बाकुश्रास्त्रहरूत। श्चिन्यते सार्वेद्वारवावा तमः तश्चम। विदासी मान्यस

मुखास दव पर्वा । वाद्राय हवा य र्वो यदे वाली । वार सुराविश दे वुकायकायहर्मका दि भ महिक ये द्वारा रव्हें म मदका दिमार ह्यें द्वार क्ष्यां अ.सेंचे त.रेट.। व्हिल.विशवाश्रयात्रव ट्रेंच.केंरे.रेटा विशयत्रव. लय. मुर्ने. पञ्चरे. त है। विश्विया सुर् पर्देश है विश्वश्वासीया एक श्वासीया इस्रम् गुवि त पर्हे व त्यु म दर् | | प्रम्य पात्र व पा सेस्रम् दह्या य दर् स्वारि:चेश्रास्यायक्षेत्र त ही विद्रालयःचिर क्याचीरालुदी वियशः र्दायक्षायते मेब रयार्द्र । ब्रिवायस्य स्थायर ब्रुट्य यार्द्र। । क्रूंचबायादेब बबालाचेबाहे। विश्वबाधिबादीटानदाक्रूबानबुद्र। विदा क्षिया:श्रेशक सिवा:श्रु.चि.खेका विश्वायात्रव तत्रःश्रुप्य हे। वितः स्वियः श्रेशकाः नियतः सामुद्रान्य । क्रिंबाग्रीः भ्रावीः रामुद्रास्थित। वित्र विदाकार्येवः साम् बादा । वि.र.श्वरायरायर्देरायारेका । विराविदाक्षांच्याकेरायरावी । विराय रविरायर रखीर शालुवी विराविर शास्त्र वारात बर्श वंशा विरायर मवर्श्वन्यक्ष्यायायाया वि.रश्चायाराज्यायात्रभवाती दि.पद्मा रविर.चर.पर्वीर.च.क्षेत्र। विर.क्षेत्रश्रश्रश्च, रच.चर्बिरक्ष.वंश्वा वि.चर. विषयः विष्यः प्रत्या । विष्यः पर्वे अभिवः हिवा साम्यान्यः सम्याना । ट्रे.जबःश्चे.कुट.पविट.चर.पवित्र। हि.केर.बे.जेप्ट.बा त्र्य.श्र्वाया विट. पश्रम्भायम् विदायात्रम् । दिःपतिवानेवाः अर्हेवाः स्राम्यस्य स्वरम् । उर्देव.त.र्यश्वराग्रीश्वरित्तरःश्वर्ति ।हि.क्षेत्रःश्वरःहूपुःचर्थःवर्षुःजा ।श्च. पार्श्वराबद्गार्थदायात्रेम |देग्विदाव्यवास्र्र्वास्र्याद्यसार्यदा | अरबाम्बिबाश्चात्रे,वेटाचराअर्घरा। हि.केराष्ट्रबातपुः श्चाताल। श्रिराक्षेत्रा श्नैर-दुर्ग-मुकायर-अर्द्दर। रिप्तवेद-व्यायात्वित्राक्ष्यक्षायाता रिकामीका

रुष ग्रीश्व पत्रेया पर अर्हेरः। | है स्रेर लर ट्रेंट पर्डे से या । 🖺 प हूँ मुश यर त्रीर प केरी दि पर्वय श ल शवर ध्या थी। क्रिश ही श्री लट ह्रिया श निर गर्या । अरस मुस केंस ८८ ५मे यतुत या । हम ह सेंस य यहत र्दे लिखा । श्रेसकारे यर नगः श्रेन दुव वका । ध्रिस् से व्यंग यस यर यर त्युदा विया येंदे माबे दे स्टब ह्यदब द्या | दियान येंदे माबे दे नयः यञ्चर यथा । ने कें ने वे देश हें ग्रथा। । नगत य लेश वे अर्देव यर यहूरी विट्रें र.क्यांश व्य झ्यांश स्र क्ष्यांश चती दि अश्व स्या हु दे अ उत्ता द्वे अभेदः यमः विषय । द्विः अभेदः छेश यहूँ दः य थेव। । १५ में स्थः दः यः रवः त्यायाका वक्षा । देः भेदः वेकः रवः रव याकाय वक्षा । स्द भेदः वाकी स्वायान्य विवायमान्त्रीन्यसार्देन न्वेन्यद्री हिया हिन्यायदे र्वेन यांचा विर्यु तिहें द्वरायर श्रुर्य य ही वि से वि दें र श्री कारत यहूँ र नवा विन्ते दिन वर्षे उव तु वर्देन। दिन न ह्यु इय नर्के नवका गुवा। मबायानाह्न द्वयायाञ्चाळेन वित्रा वित्राया मेन हा श्रुट द्वारायका । इसायर मुलायका सुराप्तार तर्देत्। विरास्त्य सम या मुख्याचे प्रा । स्व स्या स्वा मान स्वा विकास स्वा अर्देव-दु-त्यु-प्र-पर्देन्। विवेद-विवेद्यम् द्यान्त्र-स्यान्त्र-त्यां द्र-यी द चर्त्रा सुरान्दा विर्विराचिरामध्ये भी त्रिया स्वापाचर्या विरापा सेटा दुः सिंदा <u> जुनाची जिस्सामुनाग्रीमारेसारदे पत्रहत्ते । प्रि.चेनामुर्जन</u>्त्वामा च.रेट.। विचर.श्रर.क्षेत्र.कष् मर्षेश्वयद्। ब्रिंबें व्यटः नमः रेगः गुत्रः वा ब्रिंबः क्रेंतः चः वेः वदोवः चरेः योथे विष्यत्व्रिम्यान्त्रे सवम्ब्रिम्या विष्ये ज्यान

वर्देन । वि नेस रद वर्तिन वर्दे वि ह्या । दि सेद नम समय दरस्यन्य या। बादम मुन इसन ग्री वहेंद्र य ताना विक्र ग्री हीत दे गुन द वर्ष । शरम मैंस प्रमा ग्री.कूरा ग्री.वोषशा विश्वेर.तपु पर्तम वी लूरम पहुंच गी। वायकान्ते ल्रांच श्री कर्म ता है। विक्रम क्री श्री खेश यहूँ दें या लेव। विवा क्रमांच त्यमार्चेत्य यम्भ भ्राष्ट्रिय। तिर्वेर यदे यम क्रम्मायम्भ र वेंद्र। विंद्रिन्देः र्गीय.री.चन्ना शुः भिष्य विश्व हिंद व चुन्न तर संभा रिया में हैं रिसीय. र्गीय त्यन पर्नमा नियर में र्गीय की हीं र्नीय श्रेया विर्ये की स्था र्ह्रे वार्च वि.या वियर त्यार प्रदेश स्वीता तक्ष्या यहूँ दी विरुध की वार्ष विवास है. जीवारा हेर क्रीया विस्या मेय स्या है स्था है स ल.चेब ग्रेश क्रिंथ धेर हूर तायहर ग्रीमवर्ग विर हे अभय है मन पर्योश तथा विक्रिय पर्यः बोज्ञायः प्रशास्त्र साधीयः वशा विश्वः क्षेत्रः प्राप्तः प्रया चबुव ही। क्षिव ता दे हे रच बावश वहीं वा विर्यः अर्ड केव दे अंदर र्देन्। विर्नेन् यर मु नवे बे विद्यु क्वा | वर्ष्म मु म विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या र्वे लूटबाझे. पश्चें न । क्रिंपबाय है त्रा. लुबालू दबा खा. बा. वा. वि. वह वा वा. लुबाचीदःरेचा दूशका विचलाः सुधिवः तपुः अदकाः मुकाः कुना विश्वेकः सुर इसब.जब.धेमब.मु.मद्रा जिवाब.तर हीर.तपु.जम.वीय हीबा । पर्स्र-विश्वसायाः विश्वास्यायायायी । व्यापानिकाया व्याप्तिया । ल्व्र-रि.क्रम.त.वीय.ब्रीयातर्श्वेम विषय्याम्बरासिया.ब्री.क्रे.म.रीम द्रि.सर. द्रव.क्षव.एवम:श्रुप: श्रिम ग्रु:शु त्रम: द्वार:वश्चम: वन। दिवद:वश्चम: यात्रीतात्रात्राहुम्या । इत्यावर्ष्धिमः क्षेत्र यात्रात्रात्रयात्रात्यात्रात्रयात्रात्रयात्रात्रयात्रात्रयात्र त्तरु.पहुवा.मुब.ऋश्वश्रा विद्यात्मक्ता.ग्रीश्वायोष्ट्रस्य दहवादाताता विहासी.

मून सिह्न चबुच थी। प्रकाशंत्रश्वास्त्र स्वास्त्री । विकास स्वास्त्र सिह्न चबुच थी। प्रकाशंत्र स्वास्त्र स

चैजानश्चर्मी ॥ विग्नाम् की शावनाम् तुष्टिः तृष्टे छ द्रा में स्वान्त्रं ता स्वान्य स

का रियःमःक्ष्यःरिवेरशःपक्षेरःसदेः इसःसरःयन्द्रःसःयनुग्रसः

तक्ष्य जूर्गि त्रि.श.रेट.बटब मैबर्टट वेट.क्ष्य झ्रश्च.रेटव वश्च.कर्य ज तैव

> स्रेयस्त्रम् स्वाधितः स्वाधित स्वाधितः स्व

म्भुतःक्षेदःचेदेःव्यक्षःयःध्वनःवक्षयःवक्षा। सन्दर्भःक्षेद्रःसद्दरःवयक्षःयःध्वनःहःस्व।। सद्दर्भःक्षेद्रःसद्दरःवयक्षःयःध्वनःहःस्व।। स्रुवःमःक्षेद्रःसद्दरःवयक्षःयःध्वनः।।

क्वॅन्'स्याधेव'स्याध्येय'य'केर'क्नेश्व'हे॥ क्वॅंन्'चेटकाचर्क्ट्र्न्य'इट बन्'क्वंयपर'न्डे॥

ध्येषः हु स्र-रि.वैट्टा अट्टा व्याप्तः स्याप्तः स्यापतः स्याप्तः स्यापतः स्

त क्रम्भान्न प्रमास्त्रमा स्रमान्त प्राप्त होते प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान

नै'स्यर तहेन हेन तहेनाहेन त्याय प्रत्याय तिर्देन त्यु प्राप्य हेन्या हिन त्या प्रत्याय प्रत्य प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्य प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्याय प्रत्य प्रत्याय प्रत्य प्य

यर्केंट्रेन्। यसम्बन्धाय यह्मान्यत्व मृत्यं क्षेत्र स्व त्यास्त्र प्रक्रिया व्यक्ष्यात्व व्यवस्य व्यक्ष्यात्व व्यवस्य व्यक्ष्यात्व व्यक्ष्यात्व व्यवस्य विषयः विषय

मदःविमागुन्दःद्वायःध्वमःवर्धयःविद्वा श्रेनःयःमञ्ज्यःतुःक्क्षःवर्वेकःयः।। श्रेभश्रञ्जःगुन्दःयःदेशःमन्त्रश्यःवदे॥ र्केशःग्रुःद्विदश्यःयःध्वमःवर्कयःवदुन्॥

 चहूर्या क्रुंच चर्ची द्वाराय ह्वा तर चुर्ता वा त्वा तर चुर्या त्वा विष्य वा क्ष्य चर्ची वा व्याप्त व्याप्त व्य रचूरात रेटा। डे क्षेत्र भिष्यात्वा चित्र चुर्त्य का तर चित्र चित्र चुलित इंचाय क्षित चर्ची प्रमाण चित्र चुर्त्य का तर चित्र चित्र चा क्ष्य चित्र चुलित इंचाय क्षित चर्ची वा चर चुर्त्य क्ष्य चित्र चुर्त्य का त्वा क्षय चित्र चित्र चा क्ष्य चित्र चित्र चा क्ष्य चित्र चित्र

ने देन प्रश्नेत पर्डेश य यहित प्राप्त विश्व है। देन स्थित स्थित प्रश्नेत प

मदःवेगःवर्षेत्रःचवरःकुरःशुरःय। देखेदःकुदःचःशुर्वाःवर्षाः द्याःचःदेखेदःशुरःवर्वे मदःवेगःवर्षेत्रःशुरःवर्वे।।

 ल्य ह्या ल्या व हो। सरमा मुम वसम उन् ग्री हिम ग्री ह्या पर ने हिन

पदी-तिर-क्रिय-ब्रेशका-र्यादा-ताका-स्वाद्ध्य विद्वाद्ध्य विद्याद्ध्य विद्वाद्ध्य विद्याद्ध्य विद्याद्ध्य विद्वाद्ध्य विद्याद्ध्य विद्याद्ध्य विद्याद्ध्य विद्याद्ध्य विद्याद्य विद्य विद्याद्य विद्य

म् की मैंट्र मिश्रात्मा विश्वास्त्र में स्थात्म स्थात

162 न्स् अर्केश न्दीत्श पर्सेन् परे इस पन्ना

क्रेंब व्यविद्या विद्या क्षेत्र स्वा विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र स्वा विद्या क्षेत्र स्वा विद्या क्षेत्र स्व स्वा व्यविद्य क्षेत्र व्या क्षेत्र स्व व्यविद्या क्षेत्र स्व व्यविद्या क्षेत्र स्व व्यविद्या क्षेत्र स्व व्यविद्या क्षेत्र व्या विद्या क्षेत्र स्व विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या विद्या

बेश माश्चरश याधित या

देव निकेत्यं स्था पर देन पर्व मु हेन पर्वे केंद्र केंद्र केंद्र पर्वे केंद्र केंद्र केंद्र पर्वे केंद्र केंद्र पर्वे केंद्र कें

न्याः सुः स्वा धरः स्वा धरा वि केन्।। स्वा

ड्रेब्र.चेर्ट्री

तर्ने: इस्रकार्त्रे स्वर्त्ते स्वर्त्त्र स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्त

सः रूपः सुव स्यक्ता सः स्व त्रात्म स्रुका। क्रमः त्यास्य सः स्व त्रात्म स्रुका।

क्षेट हें अ पश्चेंट च अ अर्थ्या क्षेट हें अ पश्चेंट च अंद्रिया अटला।

वेश माशुस्य श्री।

यदे.लार में.श त.क्य जू.दे.यदु रेथे शरु श्रीर.जू पर्श्वेशत ज्ञां होर् श्रिर चे.रेट बादुव जू.दं. प्रश्न वार. यथ्ये त.चेश तर. चेशूव. त हे शिर यदु श्रीयश्च श्रीश्चेयश हो। हे प्रश्न जी बोर जा शक्ष शर उहुव. त हे शिर यदु वीर श्रीय श्रीश्च रता जा त्रां रे प्रश्न शर प्रह्में त हे शिर यदु वीर श्रीय श्रीश्च रता जा त्रां रे यद्वेश त हो प्रश्न विश्व के प्रश्न विश्व विश्

> त्ववासन्त्र्रिस्य वास्त्य सहन्त्रः मुन्यस्य स्टिन्यः वास्त्रयः विद्यस्य स्टिन्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स् स्रु वार्ष्यः स्टिन्यः विद्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स्ट्री। स्टिन्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स्टिन्यः स्ट्री।

स्वान्त्रस्थात्रम् । नि.यानेश्वान्त्रः यानेश्वान्तः मिश्वान्तः स्वान्तः स्

164 न्त् अर्केश न्त्रीतश्चर्मेन धरी हुस चन्त्र

हेन डेट त्वेल त्वुट गट विन वा।

देने हें र प्र ने देन हैं र प्र ने देन हैं र प्र ने प

लेसहेदःहरत्वेयाचरत्वुराचास्येद्रायकेस्य हेर्ने। वासेद्राहेरायवाषायासेद्रायस्य व्यवस्य हेर्ने।।

चक्किर्न्स्ययाचरुः स्त्रीत्र । स्वायदे त्यन्त्रीत्र प्यायदेश्वर विश्वर स्वायत्य विश्वर स्वायत्य स्वयत्य स्वायत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत

यत् न्तेन्। त्यस्य प्रतः त्वाप्यस्य स्वाप्तः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः व

लेश गाशुस्य स्था

त्री व श्रुन्यते यने व त्री न्या स्त्री व श्रुन्य य के न्या व त्री न्या व त्या व त्री न्या व त्री न्य

न्यायते द्वाची यट्टे वास्त्र म्या व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व स्वाप्त स्व स्वा

म्द्रान्त्राचित्रः स्त्रान्ते काश्ची। इस्रान्ते इस्राचन्त्रः स्त्रे कायका। ने प्रमाक्ष्यका सुक्षाचका। वया स्त्रे से हिप्त इस्रास्त्रे क्षा

दायायहैनाहेन श्री ध्रीत के त्यामायाहैन सामायायहैन स्वास के मान्य स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के स

166 न्स् अर्केश न्वीदश मर्श्नेन परि इस मन्।

अर्बेर्य ग्रम्भेत यस है। दे ते दे द्वा कित य गुत हैं य हु यदेव य केत् भेत यस गुत हें य की यदेव य बेस हुर्दे।

तन् ने तस्त्वाश्च व व्यश्च वश्च केंश्व ने इस्य यम त्वेन यम।
याने श्व नि हे हिम्म सहित यम वहेंन य न्याय नि व्यश्च वित्त व्याय नि व्यः वित्त व्याय नि व्यः वित्त व्याय वित्र व्याय वित्त वि

बेश्र महित्र स प्राप्त महिमा है। व स्नुप्त मि अर्ड्स है प्राप्त स प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वा

है सुर ब्रूट य यदी विंत्र|| गुव क्रिय वालव वे वाडिवा क्रिया धिव।|

बेशयमून हैं॥

ब क्ष्रन ग्री अर्द्धन हिन् ब क्ष्रन ग्राम्यन निमा दिन निमाय स्वानन हिन

> मिडेन द्र दु: अ श्वर य थी। द्रिंश यें न्या थर के म्या के ही। अर्देव श्वर त्या व्या के वा अर्देव श्वर त्या व्या व्या व्या व्या व्या अर्थेव अ यह माश्वर अश्वर द्या व्या देवें न्या मीश्वर यामा विश्वर या देवें न्या मीश्वर यामा विश्वर या

बेशयम् १

यदी क्षेत्र रूपि निश्चान्य स्वाप्त स्व

खिर्य्यः स्ट्रिस्चर्ये अःस्व त्यत्या। वर्षेत्रः सः स्ट्रिस्चर्ये वास्येव।।

वेबानुःच वे व्यटबाह्यमुदायबाहे देव द्यायदे॥

क्षा-मेंद्र स्थान मान्य प्रते क्षेत्र निक्षा स्थान क्षा मान्य प्रते क्षेत्र निक्षा स्थान क्षा मान्य प्रते क्षेत्र निक्षा स्थान क्षेत्र क्षेत्

र्देव:दर क्षेंच दर:श्चुय यशकी। र्देव दशक्ष य मुख्य दु:चर्हेद्।। व्युक्तःसेद द्वेव:क्षेत्र यंगःय।। व्यक्ति:श्चुव:यक्ष्य यःमृत्रेश।।

म्बियास्तित्व स्वास्त्र म्वाम्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त

ग्रीश्वरश्चर्याः । विदे द्वस्याः ग्रीताः विदेशः स्थि। विदेशः विद्वर्थः विदेशः विद्वर्थः विदेशः विद्वर्थः विदेशः विद्वर्थः विदेशः विदेश

यहेगाहेब'य'दर'देगश्चायते'ग्वामश्चायते। गुदाईय'यदेब'यते चुः वनाहे। यदेग्य'दर्ग्दश्चनश्चा

> ॱॾॣॸॱतुॱढ़ॸॖॱॴॸॱॸॣॕॿॱॿॖॆॸॱॸॗॴ ॿॖॖॾॱज़ढ़ॱॿॖऀॸॱॸॸॱॸॣॕॿॱॿॖॆॸॱॸॗॴ

170 न्स्य केंच न्द्वेन्य वर्षेन् चये क्य वन्त।
यद न्या यद न्या य येव चये॥
या केंद्र के वे न्द्वे व द्वया।

> त्यक्षाम्ची त्य्यक्षास्य व्यक्ति स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप त्रि स्वाप्त स्व स्वाप्त स्व स्वाप्त स

वेशमञ्जूदशः र्से।

नेश ग्री क्ष्मीय प्राप्त के बिया प्राप्त के कि विश्व के कि वि

हुँ त दर द्वारा विश्वस्य पर्से दः त्वश्वस्य है।। स्वाब्य भेव ने सन्द्रा से ने स्व है।। मुख्य प्राप्त विश्वस्य प्राप्त है।। स्वाब्य भवत्व के स्वावित्वस्य मुगा

बेबन्न-१र्ने॥

तर्भ्यम् तम् तम् त्रात्म् स्विम् स्व

म् निस्त्रप्रमानिद्यम् स्वाचित्रप्रमानिक्ष्यः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्यः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्षः स्वाचित्रप्रमानिक्

तसूर्यः चेश्वश्चसूर्याचात्तस्य विदः तः क्षी। श्वरत्रः चेश्वश्चर्भयः क्षीः वाच्याचात्रस्थः तर्हा।

172 द्व अ केंच द्वीदच वर्क्ट्र परि इस वन्द्र

स्याम्य के विकास क्ष्मी मुल द्राले के स्माय पर्य पित्र्या। मुल द्राले के स्माय पर्य पित्र्या। स्माय के स्माय पर्य पित्र्या।

त. द्शाश्चा विद्नु दु दिश्वाशवदः जन्न क्षेत्रः । व्यान विद्या प्रमान क्षेत्रः विद्या प्रविद्या विद्या विद

> त्रः त्र्वाः अध्येतः त्रुवः ह्र्वाः वे॥ क्रेश्वः द्रवः अध्यः त्रुवः त्रुवः विश्वः देः त्रिः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः विश्वः। विश्वः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः ।। देः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः त्रुवः ।।

वेशमञ्जूदशःश्री।

ब्रिय संक्ष्य स्वर्त क्ष्य स्वर्त क्ष्य क्ष्य स्वर्त स्वर

कुट्ट-ब्रीम व नाबकाश्च क्युम्। नि-द्रना श्च-वेबःगुद्द-चह्ननाबःधम्। नि-द्रना श्च-वेबःगुद्द-चह्ननाबःधम्। सम्भित्ता

बुबारान्द्र। चुदासुवाक्षेत्रकाराष्ट्रीयायकाग्राद्रा।

त्तुव् प्यह्माश्चर्यः विश्वविष्ठः र्ययः र्यः । स्टिश्चः श्चायः य्यदे के रःवे॥ स्टिश्चः यद्मा के रःमाडेमा सःस्य॥ स्टिश्चे अश्चायः यद्मा श्वायः स्विष्ठा।

द्रवार्त्यक्षाश्चीयाताहुःक्षेत्रःश्चेश्चवातायहूर्दःकुवी

174 त्सु अ केंश त्वीदश वर्षेत् यदे इस वन्त्।

क्रेंब य यदग्'ने द अनुस य ने द्वा। बेसबा ने गर्दे द न्य स श्चेब हो। बदस सुब ग्रैब ने सर्दे यस्य ग्राह्म

वेश य न्द।

शु.वियासमायकूर्यात्मश्चीमात्रीक्षात्मात्मभ्यात्मात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ्यात्मभ् दिराश्चेश्वस्त्रस्यात्मभ्यात्भभ्यात्मभ्यात्

देशवाहेबाहियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमावियायमाविय

द्वी श्रांश्चित्रं श्री स्वामा स्वामा स्वामा मानवात् हें मान्य स्वामा स

वर्षेत्र यते ग्रह्मात्याकार्येत्र म्ह्ना ग्रह्मा ग्रह्मात्य वर्षेत्र यते ग्रह्मात्य वर्षेत्र यते ग्रह्मात्य वर्षेत्र म्ह्रा प्रत्य प्रत्य

176 द्व अर्केश द्वीदश वर्शेद धरि इस वन्।

स्वास सं प्रकृत पा पा प्रकृत है। प्रचा स्था की प्रोस केंस की प्रीत्स से स्थाप प्रमा स्थाप प्रकृत से स्वास सं प्रमा प्रमा प्रमा स्थाप स्था

स्वा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्व क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत् स्व क्षेत्र क

स्यः हुः तश्चिदः ह्रा श्चिः श्चर्यायः श्चर्या स्वादः त्री स्वादः स्व

बेबार्क्रेट वाश्वयाद्र स्थाना केवार्य दे दिया मुकाय रामाश्वर कार्य।

देवे धेरा

हे.केंट.प्र.मंभशःश्रीटशःतकीं। शरःग्रीःश्रेट.प्र.टे.श्रट्यकीं शरःग्रीःश्रेट.प्र.टे.श्रट्यकीं इश्चेटशःप्रमाश्रीटशःप्रशी इश्चेटशःप्रमाश्रीटशःप्रशी

वैदःच श्रात्त्रेयं वि चर्वाद्याविष्ठः द्याविष्ठः व श्राप्त्रे के स्वरं विष्ठः व स्वरं व स्वरं

यक्ष्यायम् । बद्ध मुख्य यो प्रत्ये क्षेत्र विकास्त्र विकास्त विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विका

इर:वेग:ब्रुट:घर:श्रे:वशुर:घर॥

बेशनु यन्त्रे न्ये यहूँ न्यर्देश

दे.चब्रेब.क्रॅब.ज्ञ्स्य.च्याच्याचरःव॥ क्र्याची:दव्वेर्याचरःश्रेयक्र्यःद्या।

वेशर्नेव नहुव है।

178 द्व अर्केश द्वीदश वर्शेद धरे हुअ चन्द्र

यदी याम हैन केंब नहीं म्ह य दिश हैंद य मुद्द हैं निश्च यम श्चित है हि स कि है। यदिम है हि यदि हि है दि यदि के मेंब महिब माय केंब मी नहीं दब हैं निश्च की | यदिवेदे देख यही।

सर्मित्र व विषा सेन्द्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र

तक्षतान्त्रभ्रम् वर्षः भ्रम्यस्य मृत्रस्य स्ति।

तक्षतान्त्रभ्रम् वर्षः स्ति स्त्रम् वर्षः स्त्रम् स्त्रम्

र्ष्वेनश्चन्त्राम्यः द्वान्यः द्वान्यः

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

पायबुद्धा।

प्रमायवुद्धा।

बर्बा मुबा ग्री यात्र व श्रूपवा दी।

यार कें हिर तहें व हैं है खेश। इस यारे है दायक वा शुराय। दे कें दे वे वस सम्बद्धिया। सम महावा यार है कें दार से वा

द्युत्तप्तरेत्र्यापरःमेशयतेत्य्यापत्त्व्यापरःग्रुतःपतेत्रेत्रःम् स्राप्तःमित्रः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्र प्रमा व्याप्तरुषः व्याप्तः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्रापतः स्रापतः स्राप्तः स्रापतः स् 180 रख्य केंब न्दीत्य वर्षेन् यदे इस वन्।

निस्त्रम्य प्रति से स्वाप्त स्वीत्र स्वाप्त स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व

इं हे से विद्याने में प्राप्त वसका कर महिन प्राप्त वसका कर सि वसका कर सि वसका कर सि वसका कर महिन प्राप्त वसका कर सि वसक

ब्रेबायर्रे से मुद्दायाया गुराम् स्टब्स् या धिदार्दे॥

म्रीतित्वर ध्री.व.शुर्गात्र्व्या

योश्चर-दिश्चे,त्यर-दिश्चेर-रश-श्रेशतपुः ज्यं हूं यो तश्यतपुः श्चेर। श्चेतश्च श्चेशः श्चे, श्चिर-तर श्चेर-त्यः तश्च। ज्यं अत्रः प्रश्चेशः व श्वेशः यश्चेशः व श्वेशः व

> क्र्याची:न्दीन्याने:श्री:याणेन॥ न्यायम्ययान्यान:एक्न्यायम्यान्यान्य क्रियाम्यायम्यान:एक्न्यायम्यान्य क्रियाच्यायम्यायम्यायम्यायम्या

विश्व महित्य है। क्रिंश में दिश्व प्रति हित्र मिन्न प्रति है में मिन्न प्रति है मिन्न प्रति

(श) श्रान्ते व त्या व ति व त्या व त्

यदेव.त.पश्चिर,ध्र्यं शतम्बरम्यम् । वर्षे स्वाचना स्वत्माचना । वर्षे स्वाचना स्वत्माचना स

182 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्षेन् परि इस वन्त्र

मर्डर यदम यदे दरःहमः केंद्र शी। वित्र हत व रेंच धुन यदे दड़का।

वेश य न्द्र

दे स्मार्थ्य वर्षेत्र ध्रेश ने वर्षेत्र॥ वश्चर व येन वर्षे र्केश केन में॥

वुश्रक्तिर में शर गर्शरश्र्री

दे। क्ष्मिश्चा प्रमान विश्व प्रमान क्ष्मित्त प्रमान क्ष्मित्त क्ष्मित्त क्ष्मित क्ष्म

बिश्वाम्बद्धस्याने। वैद्धिःकेवार्यार्थित्त्राः। वार्त्वात्त्राः नर्वाश्वादर्त्तः
श्वेतायम्बद्धस्याने। वैद्धिःकेवार्यार्थित्त्राः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्यायमः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्यायमः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्बद्धाः विद्यायम्यवद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः विद्यायमः वि

दे'यिवेव'र्केव'र्केदशाम्बिश्च श्चीय'यदी। र्केब'द्वीदब'र्दे'स'सेद'यददः।। द्विस्यस्थिदंदिवे'ग्वब्यस्थासिव।।

ब्रैट्स.त.शवर ब्रैव त जब बैट बुट.बंसज पठु.ब्रैर। लस.तस.ब्रैय.पटु द्वेर। क्र्स ग्रै ट्वेटसट्रे शस ट्र्म ज श म्स ग्रेट श ब्रिस वा लूप पेय.टेट पत्त्रिय.जस ग्री.जूट ग्रेट श बासज.जू। विचट.ब्री क्र ब्रिस ब्रिस हो। अशस स्थ ग्री ट्वेटस ट्रे शस ट्रम्म तप्त श्रीतस ग्रेट श ब्रिस ब्रिस हो। अशस स्थ ग्री ट्वेटस ट्रे शस ट्रम स्थ

शुःरवः तर्शवः तर्रः वर्षाः वर्षः वर्षः

र्यात्तर्वीर.धे। यी.स्थात्तरश्च सूर्यात्तरश्च सूर्यात्तर्वश्चर्यात्वश्चर्यात्वश्चर्यात्वश्चर्यात्वश्चर्यात्वश्चर

त्रमाश्चरकार्श्व। सक्त-सन्तर्भ निकान्तरम् स्थान्तर्भ स्थान्त्रभ स्थान्तर्भ स्थान्त्रभ स्थान्तर्भ स्थान्तर्भ स्थान्तर्भ स्थान्तर्भ स्थान्तर्भ स्थान्त्रभ स्यान्त्रभ स्थान्त्रभ स्थान्त्य स्थान्त्रभ स्थान्त्रभ स्थान्त्रभ स्थान्त्रभ स्थान्त्रभ स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्य स्थान

गुःश्वेटाहे क्षेत्राच्येत्राचर्यं यश्चाच्या स्थान्या स्या स्थान्या स्थान्य स्थान

184 न्तु अ केंब न्दीन्ब नक्षेन् चरी हुअ नम्ना

य पामसम देवे दें वें माने म मी द्वेन यन् प दी।

ga:शूर्यात्वादाव्यक्षी:वर:बर्॥ विश्वश्चाद्यःवर्षःवश्चाद्यःव्यःव्यः श.जु:श्वेश:द्याःश्वेरःवर:वश्चःव्यः॥ विश्वशःलूटं:वशःवुःजशःवशःवशः॥ विश्वशःलूटं:वशःवुःजशःवशःवशः॥

> दह्माहेदाय दे दे प्रविद्यामिया। स्यास्य स्थान्य स्थान

वेशमञ्जूदशःश्र्रा

त्रुवायायत्र्वसःस्वात्तीः द्वेशक्षेत्रात्तीः श्रुप्त्रुवायायः विष्यात्रीः विषयात्रीः वि

इ.जेर.ब्रिथ.वश्चात्र्यात्त्र्यक्ष्यी इ.जेर.ब्रिथ.वश्चात्त्र्यक्ष्या

वृश् श्रुव प्रमा

दे.चबुब.कुंब.झ्यस्य.ग्रीयःचाळ्चायःचया। दे.चे.स्ट्याक्चयःबेश्चरीयःच्या

ख्रार्ट्यकाः ह्या विद्या ह्या विद्या ह्या क्षा विद्या ह्या विद्या ह

दे.क्षेत्र.लट.ब्रुश्च.भीच.च्या.क्ष्य.युच.शूट्या.ततु.ब्रुट्य.क्ष्या.युच. त.चषु.टट.। त्र.पट्ट्या.तपु.क्ष्य.युट्च.युच्च.युच्च.युच्च.युच्च.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यूच्य.युच्च.यु 186 ५ नु अ कें अ ५ नु ६ स वर्कें ५ यदे हु स य १५।

र्याय वर्षेट मी अर्देर माश्चरक मिट | दिस अवव यह ग्राट | विहा

वित्र हे केंद्र क्षेंद्र है स स्युर्गा वित्र हे के वस्त्र हिंद्य हिंद्य हिंद्य है स वित्र है के वस्त्र हिंद्य है स स्युर्गा वित्र है केंद्र केंद्र है स्वर्ग है स्वर्ग है स

हूं बाबा तर. चेंत्। कूब. ग्री. ट्वीटब. जुंबा चे च। शुट. बी. ईश वीटबा हे मेंबा तर. मेंटेंट. ये वा जब. जुंबा बोबीटब. तब शुश्य. क्षे की विश्व तर्दा है वा जी श्रीट. तुं. दें।

> हु:बिरःब्रेरःचॅं येदःर्दे खेश। दहेषाःहेवःवःवेद्येरःचेदःग्रुरः॥ देखेःदब्यदाःब्रेरःचॅं केद॥ दर्द्येरःबःवरःचेदःधःक्री।

वेश पश्च वशा देंव वी

ब्रेट्ट में अद्यति त्य के स्वाप्त क्षा क्ष्य के स्वाप्त क्ष्य के स्वाप्त क्ष्य के स्वाप्त क्ष्य के स्वाप्त क्ष

৻ঀয়৽ঽঀ৾৾৽য়ৢ৽য়ৼয়৽য়ৢয়৽ৡ৾ঀ॥ ৻ঀয়৽ঽঀ৽য়ৢঀ৽য়ৢ৽য়৻ৢঀৼয়

पन्ना

प

स्यान्त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्या क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त स्याप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र स्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

ड्रेस.पर्कीर.स्। विज्ञानश्चिराच क्षेत्र.स्था तार ह्यां ता व्री.श्चीर.हो। अश्चश्च स्थान.क्षेत्र. ता.क्षेत्र.श्चरायप्त.टे. ताय पडियान.प्रांत्र. ता व्रेश.वि. क्षे। प्रेप. श्चिर.स्था.ता. प्रेश. वि. त्यां त्यां त्यां त्यां त्यां व्यां व्यां त्यां त्या वि. त्यां त्यां

दे.क्षेत्राचायद्गेल्यास्य स्थान्त्रीक्षः स्थान्य स्थान्त्रीक्षः स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त त्रिक्ष्याचायद्गेल्यास्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान स्वीतः तत्र स्वीतः त्र स्वायः स्वयः स्वयः

सर्दर्भ प्रत्रा क्ष्रवायक्षाण्ची तिरस्य दिन्न स्थान स्थान स्थित प्रत्रा विश्व प्रत्र विश्व प्रत्रा विश्व प्रत्रा विश्व प्रत्र विश्व प्रत्य विश्व

पत्रम्भ स्म प्रमुव, प्राये, मुक्त विकास प्रमुव, प्राये, मुक्त प्रमुव, प्राये, प्रमुव, प्राये, मुक्त प्रायं, मुक्त

नेशक्त्रमार्वेद्गः स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्रम

वेशमञ्चन हैं।

वर्तः त्याच्यं वयस्य स्वान्य स्वान्य

री.की. ता लुच चूं।। क्रिश्च में प्रचेष प्रच

देवैः नाले द्रायं देवे स्वयं स्वयं

म्यूष्टिं स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित म्यूष्टिं स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर

देश्-याद्रःश्चेत्र-पर्वः द्व्यायम् नेषायाः शार्त्वः वयस्य स्त्रः प्रायम् । सार्वदः विद्यायम् श्चेत्रः प्रायम् श्चेत्रः प्रायम् स्त्रः स्त्रः प्रायम् स्त्रः स्त्

192 न्त् अर्केश न्त्रीत्स वर्शेन् परि हुस वन्।

येत् यम गुम य त्र। इस य वस्रव उत् तृ श्वरक य धिव वें। विव

नेश व केंश ही नहीं दश ने केंन या हु न्द हो व ही व ह्रन् यह व

केशमाश्चरमाहि। स्वायास्त्रेन यदे व्यव ह्वास्त्रम् उत्ती हेव। क्रें स्वास्त्रे व्यव हिन्द्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्

ने दिन्न स्तर्म विश्व स्तर्भ स्तर्भ विश्व स्तर्भ स्तर्य स्तर्

ह् स्वर्यः क्ष्यीयः तप्तः क्षुः विद्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यायः अर्थेदः तः त्वः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्याः

दे प्यवित्रः श्रुः माने श्रः श्रीय येद धदे।। श्रीयः प्रायम्भवः प्यदेः द्यदः देवः त्या। त्रायः योदः प्यदेः प्यदः प्रवः द्या। श्रीः या भीः वेः श्रुः भीवः विता। वेश गशुस्य श्री

क्रेय में क्रिया में ब्रिय स्थाय प्रस्ति यदे स्थित प्रस्ति स्थाय में स्थाय स्

श्रदशःभिशःग्र्रारतरःत्र्यःतरःत्यीर।। दुशःग्रीशःश्रीरश्रतरःग्रीरःतःज्ञा।

वश्व क्ष. क्षेत्र वार्षण क्षेत्र वार्षण वार्षण वार्षण क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वार्षण क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वार्षण क्षेत्र क्षेत्

तर्नः त्यायक्षय चुः के बाद से द्या पत्या प्याप्तः चुः प्याप्तः द्याः से द्याः प्याप्तः प्याप्तः प्याप्तः प्याप्तः प्राप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्था प्याप्तः स्थापत्यः स

194 न्स् अर्केश न्वित्स वर्क्षेन् परि इस वर्ना

क्षेयाबास्य यस्त्र यदि विवेश है। दे याबा ग्राम्स विवास सम्प्ती है। द्या यदि बोसबार्देन सक्षेत्र यदि द्वीम।

है भेर है या त्रु पण्या

बेश य है ही ने मह महिन श्रीश वेंद्र माश्य बिहा अह य व श्रेनाश यदे हीय य दह सूत्र माडिम हिंशे मात्रश्य प्रेत श्रुहा और महिन है श्रूह मदे में सुर श्रेड ही या महित पदे ही मा

> श्चैत्र-दःरु-वास्त्र-द्वीतःयरःदशुरा। श्च-वाठवःवार्देर-दरःहुव्यःवःश्वावा। श्चेतःयःस्योधेतःयरःदशुरा।

वेशयह्रवर्डेटा र्नेव वी

दे'चलैक'र्देद'ग्रम्थय'च'धी'श्रेस्य।। वर्देद'द्र'ग्वेद्देद'श्रेस्य'ये'र्ये'द्र्द्र'।। र्मेद्र'य'द्र्र्द्र'वे'र्सेस्य'हे।। श्चीव'य'यु'धीश'वश्चीव'यर'व्युर्ट्।।

बेश्चम्बर्यान्तरम्भेत्रावित्रम्भेत्राक्ष्यस्य विश्वस्यम् स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर् स्वर्धः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर् स्वर्धः पश्चित तक हूं बीक तर वि व तक पर्ने अव कर ज़ीक हूं व तर शहर व वश्चित व क्षेत्र व क्षेत्र व कर व क्षेत्र व

त्री विश्व में श्री में प्रत्य किया की प्रत्य प्रत्य की स्था प्रत्य की स्था में स्था मे स्था में स्था

दे.केर.श्रा.तश्च्याःश्चर्याः श्र.क्ष्यांश्चरःश्चरःश्चरः ह.केर.श्चरःश्चरःश्चरःश्चरः ह.केर.श्चरःश्चरःश्चरःश्चरः ह.कर्ण्याःश्चरःश्चरःश्चरः ह.कर्ण्याःश्चरःश्चरः ह.कर्ण्याःश्चरःश्चरः ह.कर्ण्याःश्चरःश्चरः ह.कर्ण्याःश्चरः

वक्षक्षः अःक्षेत्रः दूर्याव्यवात्त्रः दश्चित्रः दूर्याः वक्षकः श्रीक्षः वृक्षः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्र विकान्त्रः विकान्त्रं विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः विकान्त्रः व 196 न्स् अर्केश न्दीत्श वर्सेन् परि इस वन्त्र

ने'मबेब'रु'र्नेब वे।

दे प्रविद्यार्थे द्रिया व्याप्त प्राप्त स्था व्याप्त प्राप्त स्था व्याप्त प्राप्त स्था व्याप्त प्राप्त प्राप्त स्था व्याप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क

हूं बाबान्तर क्षिर हो। दे हु, जु, हु का हुर हा। विषया कुर वा विषया विषया

म्बद्धान्तर्भः स्त्रीत्त्रेत्त्रः स्त्रीत्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रः स्त्

लूट्-मी घर-ट्रि.बाढ़ेब.चूर्यु.हूंबा.व यघर घर बीर हे। बाढ़ेबा.बाख़ घडा सूट्-

> क्रॅंट्राय केट्र वे क्रॅंब्य यदि अर्दे॥ कुष्य यश्च हे क्रेट्र याश्च्य या दे॥ हे ट्र्या सुद्र श्रीय श्रेट्य क्रंच्या विस्रवादे कुस्य यस्ति हे सम्बद्धिया

198 द्वा अर्केश द्वीदश पार्श्व पारी इस प्रमुद्

हिन् अन् यर प्रमुद्ध यश्चरम्य अन् यहिश हेंग्रश्च यर द्युर यश न्वेंशः यह ने भेवन्वें।

> वन्नान्द्र वन्नाः भेन् वन्नाः भेनः हि॥ सं संदे क्रुः वस्याः क्ष्माः व्यने न्द्रः स्वाः वस्याः क्ष्माः वने न्द्रः स्वाः वस्याः क्षेत्रः वः स्वाः। क्षेत्रः संद्रसः स्थसः न्द्रः मृत्यः कृषाः

*बेशनाश्चरश्चनःदर। देवाशचः*दुवाञ्चनःयश्चग्रहः।

र्षित् यश्चस्त्रयःयम्ब्रीः श्चित्यः है।। अदःयश्चिदःयः वदेः त्यः अद्या। द्रस्यः दृदः दृद्दस्य अदः व्यव्यः विश्वःयश। यद्गः हैदः स्त्रेत्र यें स्त्रयःयमः श्चित्य।

> बाधी:नृतीत्यावार्व्यन्यतीःह्या। द्वी:सास्रोन्यमःगव्यव्यायाःस्ट्रम्।

क्रेंब्रॉड्याव्याव्याये मेंब्रागुटा। देविव्याद्याये स्वायाया

वेशमाश्चरशःश्री।

यद्धेन्य स्थित् क्षेत्र स्थित्। मुश्चार्यका न्द्रस्य स्थित क्षेत्र स्थित स्थि र्केशन्द्रीहर्सम्बद्धिरः यन्त्वास्य भेव॥ यह्नः सेन् सम्बद्धेश्वर्स्य स्वाधित्रः सेन्॥ यह्नः यः गुक्तः यश्वर्स्य मुँ यः य॥ केः सुरः यन्त्वा केश्वर्म्य यः यः यः

दे.क्षेत्रः व. श्रुश्चा स्व. पर्चे. स्व. पर्चे. स्व. प्रत्ये स्व. प्र

क्ष्णबायायेद्रायते केंब्रागुवाया। स्दायेद्राक्षेत्रायाद्येग्वायायीव।।

यद्भाश्यात्मार्थेव श्रूच्यात्मार्थिव श्रीक्षात्मार्थेव स्त्रा श्री श्रीत स्त्री स्त्रा प्रत्य स्त्री स्त्रा स्त्री स्त्रा प्रत्य स्त्री स्त्रा स्त्री स्त्री स्त्रा स्त्री स्त्र

क्षेत्रः त्रि क्ष्यः त्राक्ष्यः त्रात्रः विश्वः त्रात्रः विश्वः व्यव्यव्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यवक्षः व्यक्षः विष्यः विषयः विषयः

तर्ने नः क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्रा। स्ति स्त्रेत्रा क्षेत्राचा क्षेत्रा।

विश्वात्त्रव्ह्त्याची श्वात्त्रव्ह्र्ण्या हिल्ला प्रस्ति स्वर्ण्या स्वर्णा स्वर्ण्या स्वर्णे स्वर्यं स्

ची.य.चीश्रंभा.यर्क्स.श्रंभ्यःस्त्रेंट्र.ची.ची

202 न्तु अर्केश न्त्री दश पर्देन परि इस पन्ना

सर्केषाः हुः स्रोधसात्रे स्ट्वेंदः द्येदः प्रदे॥ केंस्रात्रे : स्टायत्रेवः सेदः प्रायः प्रवा।

त्रक्षां व्यक्षां व्यवक्षां व्यवक्षां व्यक्षां व्यवक्षां व्यवक

दरः। क्र्याक्षत्रमान्तुःक्र्यान्तुन्तुन्तुन्यायः नेन्नुन्यायः सरमाज्ञिमाक्षमान्त्रमान्त्रेन्,नुन्नुन्यायः नेन्नुन्यायः

वेशमाश्चरवार्श्व।

 त्वुराव दर। र्षेद्र श्रृ शुवापति हुंयादरा दे ह्याय ग्री देव पश्च पर्दा।

हे'ॡर'ब्रुक्षअये'क्लॅं'व'स्।। ऍ५'गुट'अर्वेट'ट'अ'धेव'य।।

बेश्च य वे द्येश यश्च्य यंधिय त्या दे यविव दुःर्देव वे। दे यविव र्वेद स्माग्रीश वार्षिवाश यशा। र्केश ग्री द्वीदश ग्राम सर्वेद स्माधिवा।

विश्व महित्याही हिंदा तरी है दे प्रविद्या मिन्न वार्य है दारि अर्दे त्यस

हे.केर.र्धियाश्चां अर्थे में अर्थे के या के यह में स्ट्रिस्ट के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्र के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्र के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्र के यह में स्ट्रिस के यह में स्ट्र के यह

बेशम्ब्रुदशयःषेत्रव्धि। देखाङ्गीयःयरःग्रेदःयःयङ्गतःयःदी

> यन्यान्द्रःयन्यायीः क्र्याहेंयाः न्दः॥ अद्योग्दर्ने संक्रुः सक्त्रः ग्रीस्॥

204 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्शेन् यदे इस वन्त्

स्वार्थात्वर्थात्वर्थात्वर्था।

स्वार्थात्वर्थात्वर्थात्वर्थाः विद्यान्तर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थात्वर्थाः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्

ल.चेबार्ह्रवाबायदे खुल है। क्रेंगबाशु पठन पार्विवा है।

য়ৼয়৾৾য়ৢয়য়য়য়৾ঀৣ৾৾৽য়ৄ৾য়৾৻য়য়৻য়ৼ৻॥ য়ৼ৻য়য়৾ঀ৾৻য়ৼয়য়য়৾ঀ৾৽ঀৢ৾ঀ৻য়য়৻য়ৼ৻॥

द्रा दे.ज.प्ट्यात्म्अअ.मु.जअ.न्टा वर्ग्यात्मात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्मस्यात्म

> र्सः स्टान्स्याः ह्याः स्वान्त्रेत्रः स्वान्त्रेत्।। स्टर्भा क्यान्त्रयाः स्वान्त्रेत्रः स्वान्त्रेत्।।

क्षेत्रः अर्ट् कृष्ठित् कर् अर्ट् प्रति हिंगाय क्षेत्र मान्य विष्य क्षेत्र मान्य कष्ट मान्य कष्य मान्य कष्ट म

शुःगशुःसः दगानी सदस कुरा छै॥ शुःगशुःसः दगानी सदस कुरा छै॥ र्त्व वित्ते हैव द्वारा स्वारी ने त्यून स्वाप्त त्युन विदेश से स्वाप्त स्वाप

ख़ॱॸय़ॱॾॣॴॹॖऀॱॸॕॱक़ॕॱॺऀॺऻ। ॹ॒ॸॱॺऀॱॸॖॱॺॸॱॺॕॸॖॱऒॺऀढ़ऻ।

है। चैटालाक्र्योकाटालट्ट्रेलेराउटाचर्न्नेट्ट्रा टेह्रेचकाज्ञट्रश्चार्यः है। चैटालाक्र्योकाटालट्ट्रेलेराउटाचराक्षेट्राचराक्षेत्रः विकालाट्ट्र्यां विकालाट्ट्र्

ग्रीय जन्नायिकाता जन्म। श्रीय जन्म विश्वास श्रीयः विश्वास श्रीयः विश्वास विश

> ড়৸য়৽য়ৣ৾য়ৣ৾ৼ৽য়৾য়ৢ৽৻য়য়৽৻ঽ॥ য়ৣ৽য়ৣৼ৺য়ৼয়য়য়ৢয়৴৻য়৽৴ৼ৻॥ য়৽য়ৼ৺য়ৼয়য়য়য়ৢঀ৻য়৽ঽ৻য় ড়৾ঀয়৽য়৾ঀৣৼ৽য়৽য়ৢ৽৻য়য়৽৻য় ড়ঀয়৽য়

षेत्राचु यात्रार्श्ववात्रायात्रास्तु वात्रुद्रशार्श्वा

क्यानेश्वत् गुवायहण्यति क्षेत्र विकासम्बद्धः विकासम्वदः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्यत् विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्यतः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्यतः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्यतः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्बद्धः विकासम्य

हे स्ट्रिम् क्रॅव प्रतिवास्य प्रतिवा। दे त्या के लेगा पहना प्रमाना

लेबाक्रॅवायाक्रीबायाक्रीक्रुत्याक्रीबायावीक्रीबायवित्रीक्रियाक्रीक्रुत्वा

अन्ति त्वीत्र प्राची क्षेत्र प्रम्य प्रम् प्रम्य प्रम्य

देन्य हेव केट त्र्ये वायर त्युट प्रमायक्ष्य पाने केवा महाप्त है।

हेव.वश्व.पवीय.तम.पवीम.पश्ची। हेव.वश्व.पवीम.तम.पवीम.पश्ची।

त्याचान्नुत्रः त्याचान्यः श्रीः मान्याच्याः भी नियः त्याचान्नुत्रः त्याचान्नुत्रः त्याचान्नुत्रः त्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याचान्नुत्रः व्याच्यः व्याचान्नुत्रः व्याच्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याचान्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्

वशकाक्ष्यकाराय हेन कुट पत्तेया यह श्रीया श्री श्रीट हूं। दि.क्षेत्र क्रूशः श्रीट या यह त्या प्राप्त प्राप्त हुन कुट पत्तेया यह श्रीया श्री श्रीट हूं। दि.क्षेत्र क्रूशः श्रीट या यह त्या प्राप्त प्रा

व्यक्षत्रम्थः । विश्वस्यक्षः स्टेस्ट्रिक्यः स्ट्रिक्यः स्ट्रिक्यः

त्यः मुद्देन् त्यः कृषे श्रृंदश्यत्यः मुद्देन्यः प्रवरः यहेष्वः त्यः यम् स्वितः यश्चेतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्

नुबाव इंस्या श्री दबारा सुरात्ती

रैॱवॅदःयःत्रुदःरुधेःद्वेश्व। हैॱक्षुरःयदेरःवविषयःक्षेश्वस्यश्वेद।। द्वःसःवेदःदुयक्षुयःयरःग्वेद।।

क्षेत्र रिश्व श्रवाद त्या श्रीत्। यत्र प्रमुद्द त्या है जी त्या है जिन्न प्रमुद्द या है न हि या है न हि या है न हि या है न है या ह

> बः८८:पः८८:पश्चिषाःसबयः८८:।। सः क्षेषाश्चकः व्यव्याः विश्वःगः८८:।। षाटः व्यषः क्षेत्रः यः क्षेषः यदिष्यः प्रदः।। स्रुटः यदेवस्य सबयः विश्वः यदिसः यदिसः प्रदः।।

च इत्तर्द्धवात्त्रः त्युवाकुँ वार्धेद्या। इस्रायसः द्वरात्यायाकु बात्तीः स्वया। इस्रायसः ह्वरात्यायाकु बात्तीः स्वया। देवे इस्रायायहुवाहुः तर्देत्।।

न्द्र्यार्थिन् न्द्र्याय्यन् विष्ठान्तः॥ विष्ठेन् श्च्रम् छाने त्यायद्देगा चञ्चरान्द्रायद्देवान्द्रायदान्याय्येव॥ व्यमान्य वेन्द्रान्द्राय्येव॥

212 न्तु अर्केश न्दी दश नर्सेन् यदे हुअ नन्त्।

क्केुं च येद दरःयदय दर दुर्या। क्रुयःचरः हेंग चःगदेशःग्री यद्यता।

बेशमाश्चरश्चराधिव र्वे॥

पद्भार्या में साम्यायस्त्र क्षेत्र व्यक्तिस्य स्त्री | द्रियत्यस्त्र साम्यायस्त्र स्त्री स्त्र स

मुड्डम्'र्स् अन्यायः चर्च्चे अन्ते द्वार्यः विश्व देः द्वार्यम् वाष्ट्रस्यः द्वार्यः विश्व सुड्यः स्वर्यः चर्चे अन्ते अन्ति स्वर्यः विश्व

वेशयाश्चरम स्।।

पत्र। व्याप्तर्भश्चायायिः स्वाप्तः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वयाप

म्बन्धानक्ष्यः अर्थन्त्रम् । पुन्द्यान्तिः क्ष्र्न्यः स्त्रीः क्षुत्रमः त्याः स्त्रम् ।। स्त्रम् स्तर्भः स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् ।।

वेशनु यात्री सूराया स्टायविव सेनायाः सूराया केना ग्री नया सवसासा सूरा याकेनायार्सेनायार्सेनायार्थेनायार्थेनायार्थेनायां स्टाया

अर्कव् केन् पहेंन् पतर ने न्राय

बुश्रामक्षेत्र.हे। रटामी ट्राम्याया हूं मामानेशा श्रीक्षा स्थाना तिवा मा स्थित

> वशनः २८ धः ञ्च ते धर बाजुबानः तन थ्री। भ्रित्य तन बाट रेबा शिःट्य पर्देश त शिया।

खेशचाय झ्योशत मि कुर योश्वरक झ्री | रूपोशत टीयो. श्रे च जरा ग्रीट |

ऄ.चस.चीलूच्चास्ये.उत्स्ची.शु.उद्धीर्मी कूर्य.ग्री.शचर.लु द्वी.शपु.शचर्री।

म्दःद्वाःवीश्वत्रेःत्दुश्चश्चस्यश्चा श्चेःद्वःत्वावाःचर्क्त्वाःचेदःच॥ देन्द्वःत्वेदःत्वेदःत्वेश्वश्च॥ दर्वेःचःविदःहृश्चःवेश्वःश्च॥

देन्द्रिक्ष्याद्यस्य स्ट्रिक्षेक्ष्यादेश्वरम्ब्रीका। देविश्चेक्ष्यादेश्वरम्ब्रीका। कुःवन्द्रमधेश्चेश्वरवि॥

214 न्तु अर्केश न्वीरश वर्शेन् यदे हुस वन्।

बद बेश अर्देश यम यहें द्राय है।। महायदित श्री श्री वाद अ बदा। देशे बद सेश के स्थम यहें द्रा। देशेम वाद प्याद हो। कार प्याद यम यहें द्रा।

क्रीस्तर्रत्वे प्रम्पत्तिकाते। देशवा क्रीस्त्रियः वे स्यास्त्रियः स्थान्ति स्थानि स्थान्ति स्थानि स्थानि

> र्वेन्'अ'यर'द्र'अधर'द्ने'य। यक्षु'य'येद्'छेट'ह्न्न्'य'थे।। न्द्रःवेन्'दे'छुर'यद्न्य'येद'य।। दे'छूर'यद्न्'द्र्र्यद्न्य्वेर'यह्न्।।

तत्रः त्राम्भः स्वित्वामः स्वाधः स्व

में प्रमास्त्रिक्ष मान्याक्ष यम प्रिया प्राप्ति । हिंग प्रकायहम्यायम प्राप्ता क्षेत्र वि। |ने स्ट्रिम त्यमुम पासेन् केट स्रीतः के सार्येगाय दे दिन मीका व्यवस्था हा मुप्ता प्रमायक्षेत्र पाप्ति वि।।

दे दिश्व की दूर पर्के या हु। कु विश्व की साथ पर प्राप्त की साथ की क

म्राम्बर्धसम्बर्धः सुन्तः सुन्त

क्र्यः मुक्षः देशः देशः मुक्ष्याश्चाः द्या। स्रोत्रसः क्रयः देशः देशः मुक्षः स्वा। देश्वेदः क्र्यः देशः देशः मुक्षः स्व।। स्वाः मुक्षः देशः देशः मुक्षः स्व।।

त्यः मेर्ट् | ट्रिंब त्दे ने | अप्रमान्त्र स्थान स्था

इस-न्द्रिम:परुष:परि:सस्त्र-निषा। र्क्को:सम्मन्त्र-विकास-क्रिम्-विकास

216 न्तु अर्केश न्तु दश पर्श्नेन परि हु स पन्नि

इस न्वेर सेन्यिय सक्त हैन्डिन्। इस न्वेर सेंस ग्रीकार्स्ट्रिंग्य सेन्।।

त्यस्त्रम् स्वर्धन्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यम्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वयः स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वयः स्वयः

र्नेत्र-त्यायः क्रेंट्र यः केट्र ग्री-वो केश येट्र ये क्षेत्र या केट्र या

देःचित्रवित्वाविवाशयिःश्वेदःचित्रे थेःवेश्वःदेःदेःचित्रवित्वाविवाशः वानिवाशयिःश्वेदःचःकितःग्वेःथःनेश्वःथेदःवा दे चित्रेद वानिवाशयिःश्वेदःचःखदः। वदःव्यःच्दः। स्टःश्वदशःक्वशः व्यक्षश्चरःग्वेश्वःश्वरःयःश्वेदःशःहेवाश्वयःवित्वाविवाशः

त्रश्रम्भ्। ने भ्रम्भ्यात्राह्म्यायात्र्यः स्वाप्ताय्यः स्वाप्तायः स्वापत्तः स्वापत

श्रुवान्तरमञ्ज्ञास्य य पहेंद्रावस ह्यास स्वाप्तर प्राप्त पहेंद्राय प्रमुद्राय विश्व स्वाप्त स

भ्रेम:८८:मञ्जूमश्राय:यहेव:वश्रःद्वी। ट्रे:म:मे८:यदे:श्रूट:य:द्युट:॥ श्ले:भे८:दम्माय:य:से८:हे८:यश्रा र्केश:ग्रे:८वेट्सदे:४य:हु:वेश्रा

यश्चित्रायम विद्।। यहना कि निवास विद्।। यहना कि निवास विद्।।

चे.क्षे अस्त्रः क्षेत्रः त्यात्रः त्या स्ट्रः त्यात्रः त्यात्यः त्यात्रः त्यात्यः त्यात्रः त्यात्रः त्यात्रः त्यात्रः त्यात्यः त्याः त्यात्यः त्याः त्यात्यः त्यात्य

व्यस्त्रश्चेत्रात्तर्वितात्तरः वेद्द्री।

व्यस्त्रश्चेत्रात्तर्वितात्तरः वेद्द्री।

व्यस्त्रश्चेत्रात्तरः विद्यस्तरः विद्यस्तयः विद्यस्तरः विद्यस्तयः विद्यस्तरः विद्यस्तरः विद्यस्तयः विद्यस्तयः विद्यस्तयः विद्यस्तयः विद्यस्तयः विद्यस्तयः विद

चेश्राचम त्रश्चिम्म् । विश्वास्त्रम् त्रश्च व्यवस्त्रम् यदिन्त्रम् । विश्वास्त्रम् त्रश्च व्यवस्त्रम् यदिन्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम्

दे.क्षेत्रःश्च लटःचक्षेत्रःचरुःख्चेत्र।

हेब.ट्ट.चक्क.त.ड्र्ब.तर.प्रीर्मा सम्बन्ध.प्रट.चन्या.तप्र.क्ष्य.ग्री.ट्रीट्या सम्बन्ध.प्रट.चन्या.तप्र.क्ष्य.ग्री.ट्रीट्या सम्बन्ध.प्रट.चन्या.तप्रस्था

यदः श्री. श्री. व्याप्तः स्त्री श्री. व्याप्तः स्त्राः स्त

यद्भायम् विश्वायम् हृत्यायम् हृत्यायम् वृत् । श्विष्यायश्च विश्वायस्य विश्वा

ने सुरादे वायहेव यायद।

য়्र'न्ट्ने'य'यहेव'वशक्ष्य।। ने'वे'म्ब्रम्ब'श्रेव'यदे'न्ये॥ ने'यवेव'श्रं'भे'ह्य'वश्रं'ग्रेश। क्रिंच'ग्रे'न्वेट्ब'श्रं'हॅम्'यरचेन्॥

पास्त्राम् स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

ने'मबैव'तु'र्रे'यर'मध्रव'य'वे।

क्रुं त्वी प्रसम्बन्धाः स्ट्री स्ट्र

क्रॅबःग्री:५न्डी८बःग्री:र्दे:चॅ:धेबा। इय्रायम:वेबाय:ग्वब्बःये५:यर्दे।

त्र्मी क्षात्तराने काता क्षेत्र त्यावा वावका वाक्ष्या तर स्वाका त्या क्ष्या विद्री क्षात्तरा ने क्ष्या विद्रा विद

रे.केर.र्गा.चै लट.चक्षेत्र तपु.ब्रिर

त्रवास्त्रक्षः त्रिः त्रम् वृद्।।

त्रवास्त्रक्षः त्रिः त्रम् वृद्।।

त्रवास्त्रक्षः त्रिः त्रम् वृद्धः वृद्धः त्रिः त्रम् वृत्वः वृत्रक्षः त्रिः त्रम् वृत्रः वृत्रक्षः त्रम् वृत्रः वृत्रक्षः त्रम् वृत्रः वृत्रक्षः त्रम् वृत्रः वृत्रक्षः त्रम् वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृत्यः वृ

न्द्रीयःयः यष्ट्रवः यद्रीयः यमः क्षेत्रः यदे । यक्षेत्रः यः यष्ट्रवः यद्रीयः यमः क्षेत्रः यदे ।

> क्ष्याची: न्दीत्यास्य क्ष्यास्य स्थान्य । ह्या न्द्राय स्याप्त स्थान्य स्थान्य स्थान्य । स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य । स्थान्य स्थान्य

स्थाना स्वतः की स्वतः द्वा विश्वान मिल्या म

र्थर-तर्र-प्र-स्थान्त्र क्ष्रिंशकारह्याःक्षे चिन्न-तर्भः चिन्न-तर्भः क्ष्रिं चिन्न-तर्भः विन्न-तर्भः क्ष्रिं चिन्न-तर्भः चिन्न-तर्भः विन्न-तर्भः विन्

श्रीयश्वात्वात्त्री श्री श्री श्री श्री त्यात्रा । विद्यात्त्रात्त्री श्री श्री श्री त्यात्रा विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्य विद्यात

बीत्-ग्रीःह्मस्य सेश्वरस्य स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व

224 न्तु अर्केश न्तु दश वर्शेन् यदे इस वन्।

क्रुँ अश्र यम यहुना य इस निवेश पर ।। क्षेत्रकारोप निवेद पर यक्किय स निर्देगका।

वेश ग्रुट्श श्री

म्बन्ध शुर्राय विषय मित्र मित

द्वम द्वारयामा स समान्य भी। इस केस महासेत समान्य भी।

तक्षियायत्वीर्या । व्यव्यावायाय्ये स्वावयाय्ये स्वावयय्ये स्वयय्ये स्वययय्ये स्वयय्ये स्वययय्ये स्वयय्ये स्वयय्ये स्वयय्ये स्वयय्ये

श्चित्रास्त्र तद्देशायी द्राया सम्बद्धाः हो। द्रायते स्व केत्र स्व विकाय हो द

स्याःशिक्षेत्राचर् । निःक्षेत्राचरः। स्याःशिक्षेत्राचर् । निःक्षेत्राचरः। स्वाःसाःश्वेद् । विदेःत्वेद् । विदेःत्वेद । विदेःत्वेद । विदेःत्वेद । विद्वाः विद्वाः विदेःत्वेद । विदे । विदेःत्वेद । विदे । विदे

> यहनाहेब-दमान-मेश-स्याध्य-स्याधिन-मान्य-पर्मे॥ मेश-स्याह्म-स्य-स्याधिन-स्याधिन-स्याधिन-स्याधिन मान-स्राधिक-स्य

प्रीयम् । विकासम् । विकास

226 त्स् अर्केश न्दीरश वर्श्नेन् यदि इस यन्त्।

स्टर्माय अधि वर्षा मुद्दी। यदेशी स्टर्मा यदे वसस स्टर्म स

लु-सेश्वातात्वियातालु हो। विश्वायस्योश्वात्विश्वश्वायश्वास्याश्ची प्रते। विश्वादी-स्वेश्वात्वात्वित्वे प्रतिन्द्वितास्यम्य नियत्वे स्थायमःश्वीहित्वाःस्या

म्दान्यक्षतार्क्षेतार् हें न्यायायि स्थानि। स्थान्य स्यान्य न्यान्य नियानी

सेब्रान्द्रस्थान्द्रयास्यान्द्रः।। स्वार्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रः।। स्वार्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रस्था। स्वार्थान्यस्यस्यस्य

विश्वामश्चर्य है। वरामी श्चे अकेन दुमा गुरायर करामी हैं विश्वास्था प्रदी श्चेराया स्था वरामी श्चे अकेन दुमा गुरायर क्षेत्र वर्षा श्चेराया स्था वर्षा श्चेराया अकेन हैं ने प्रदी श्चेराया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाय

यत्त्र: त्र क्वा: त्र हुँ पृश्च यद्ध: आ यद: द्या: अर्थें द्र त्र दें 'के द्या

वेशमञ्जूदशःश्री।

> क्षेत्रकात्र्वेत्।क्षेत्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रकात्त्रक विकासम्बद्धाः

यन्ग्राहुःदद्देव्यस्याद्यें स्याङ्गे॥ संस्थितः सेग्वादाने छेन्द्री।

त्युं त्रः क्ष्मां अव्याः अव्याः क्ष्यः व्याः व्या त्रे त्याः त्यायाः य्याः व्याः व त्रे त्याः त्यायाः व्याः व

वीयः त्रश्चेटः तथार विस्तित्व स्थान् स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त स्थान्य स्थान्य

> सेसस्य निष्मित्रस्य स्थानित्रस्य है।। क्ष्मित्रस्य स्थानित्रस्य स्थान

सेश्रस है से कैंग्स स्टूर यात्र ॥ इस य स्टूर हेंग्स उत्र त्र व्हुग्। दे य स्टूर दे लेंद्र द्र सेत्॥ दे हुर हेंस गुस्स स लेक्ट्री।

ष्ट्रम मास्ट्रमार्स्

म्बन्धारी भुदे र्व यस्र यात्री

च्रमाक्ष्यं क्ष्यं क्ष

स्त्मी स्था ह्रें वाची तक्ष्य प्रकार विकास क्षेत्र क्षेत्र स्व क्

230 दस् अर्केश द्वीदश पर्श्ने पारे इस पन्।

मु तिहु है मुक्षयम वेषायम्ब्रायम्। त्युमर्मे । विदे है मुक्षयम वेषायम्बर्धायम।

वेश वीश्वरशःश्री।

वुर द्धव ग्री र्वे वस्तर यात्री

नेश्व । हिन्द यम रहें व र्श्वेम्स यथे प्राचा हैन । यो स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स

वस्रक उर् र्र विय वर्षे | रे.केर क्र्र थ्रेर वर्षे व विव क्र व म ब्र्रेस य.

र्ट्स या से प्रमान कर मह प्रमानिक की मानिक की मानिक विकास कर मह प्रमानिक की मानिक मानिक की मानिक मानिक मानिक की मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानि

ष्रायशिष्ट्याञ्जा

सर्देव देव प्रमुव पानी

वश्वश्वर्त्तात्त्री वर्त्तः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याचित्रः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याचः व्याचः

क्ष्रेय तर.वुर.तसरे.वर्ड्र तर.वेर्र्। ज विषय वशा ल चुंश की बैंद.व में कुंग.श्रे बुंद.शर्ट्य रे कींर तप क्षेत

> য়ৢ৾য়য়য়য়ৢ৻ৼয়ৢ৾য়য়য়ৢয়ড়ৢয়য়য়য়ৄয়য়ৠ ড়ৢ৾য়য়য়য়য়ৣয়ড়য়য়য়য়য়ড়য় ড়ৢ৾য়য়য়য়য়ৣয়ড়য়য়য়য়য়ড়য়ড়ৢয়ৠ ঢ়ৢ৾য়য়য়য়ড়য়ড়ৢয়য়য়য়য়য়য় ঢ়ৢ৾য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়

सहस्त्रान्त्रभ्यः विकान्त्रम् विकान्त्रभ्यः विकान्त्रभ्यः विकान्त्रम् विकान्त्रभ्यः विकान्यः विकान्त्रभ्यः विकान्यः विकान्त्रभ्यः विकान्यः विकान्यः विकान्यः विकान्त्रभ्य

वात्रादे प्रतित प्रतिष्य प्रति प्रतिष्य प्रति प्रतिष्य प्रति विषय प्रति विषय

हि.क्षेत्र क्षेत्र.श्रेंच्यक्ष क्षेत्र.श्रेंच्या च्रे.चतुत्र.श्रेशकाक्ष क्षेत्र.श्रेंच्या। दे.चतुत्र.श्रेशकाक्ष क्षेत्र.श्रेंच्या। स्टर्शकाक्ष्यक्ष क्षेत्र.श्रेंच्या।

षुश्र.विश्वशतपु.षेताक्रं.वेश.वीट.वीश्वटशःसूरी

यस्यामुक्षान्त्रीः अर्थेदः चतिः स्तुत्व है। स्त्रीयः यस्यामुक्षान्त्र विद्यान्ति । स्त्रीयः स्त्रीयः

है'सेर.लु.टेब्बंश्ड्रशब्य.कुरा भे.पंड्र.चं.रेबंश्डराय.फेर्टी

प्रवित्रः त्वा व्यक्तं क्षेत्रः त्वा का क्षेत्रः व्यक्तं त्वा व्यक्तं त्वा व्यक्तं त्वा व्यक्तं व्यक्तं व्यक्त भ्रीतः त्वश्च स्वा क्षेत्रं क्षेत्रः त्वा क्षेत्रः त्वा क्षेत्रः त्वा क्षेत्रः त्वा व्यक्तं त्वा व्यक्तं त्वा व्यक्तं व्यक्

द्र'चलेव'श्रे'नेब'यब'चर्श्वेचब'यबा।

दे क्षेत्र वायम श्रीयमायायम अर्धेट यः मेवामाम् वे वा अर्धेट वा से हिमा विवायम्

> २अव:२८:यर्शेर:वअव:२अव:य:या। यर्डेअ:खेव:४८१व:ग्रीव:डे:यग्री:अक्टेब्रा। डे:खेर:२अव:य्रेंट:याग:य:स्र। रेव:क्रेव:अर्केग:वे:यवग:य:४५।

त्तक्षेत्री कुल्तरःशुःखवःश्चर्यन्यः वेर्यः त्यक्षिः स्वी त्यक्षिः व्यक्षिः व्यक्षिः व्यक्षः विष्णः विषणः विष्णः विष्

अवस्त्रियायदेख्यायदेख्यायदेख्यायन्। अर्द्यायस्त्रिक्षे प्रायस्त्रियायदेख्यायदे

श्रम्भ द्वान्यस्य व्यवस्य व्य

द्रियाः ब्रीच्यायक्ष्यः त्राध्यः व्यक्षः व्यवक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यवक्षः विवक्षः विवक्

स्राम्भी स्रामा स्रुप्त स्राम्य स्राम स्राम स्राम स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्र

श्री.यु.रु.प्रत्यकात्राक्षयात्राचावात्रात्रस्यः स्टा। विष्यवादाः योश्वरः अर्टूचाः विषयात्रः स्टाः स्टाः।

236 न्स् अ कॅंस न्वित्स वर्सेन् परि इस वन्।

श्चित्र देश्वर प्रवेद श्चित्र श्चित्य श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्य श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्र श्चित्य श्चित्र श्चित्य श्चित्य श्चित्य श्चित्य श्चित्र श्चित्य श्चित्र श्चित्र श्चित्य

देश्वरः तस्ति अर्द्र स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र

> यर्ग्व-र्य-दे-त्री-मानुमाश्रानुश्रीश्रीशा मानुत्य-च-त्रम-र्य्य-प्रतिमानुत्य-प्रति-।। मानुत्य-च-त्रमश्री-मानुत्य-प्रति-धी-।। निव्य-क्षेत्रमश्री-मानुत्य-प्रति-धी-।।

पर्वीर-त-ट्रे-क्षेत्र-तर्धियाकात्रकायियित्व-स्टर-क्षेत्र-कष्टे

यदि खे में स्था तु झूट या कि शासु तहीं व पदे क सुट बट खें द प्यशहें सूट कूट केंद्र शी दें द पार्केश शी दिश्व स्था द द खेंद्र स्था में शास द द द शु श्री स्था से से स्था

देवि: धुना देव गाम भवाम भवाम वी।

श्रेश्वरात्तीःस्त्यात्तेःदेशःह्रॅग्वराद्वश्व। देरःदेःदेश्वराद्यरादह्वाःचरःद्वाःस् श्रॅं-श्रॅं-र्र्टर्याःक्ष्यःद्वाःचरःद्वाःस्। श्राक्षःस्टर्टर्याःक्षयःद्वाःदेशः

भवर विवातर स्थानी

न्यनः खुवा केव विते वावस्य अर्केषा न्या। विवासिक वितासिक स्थान

निश्रायाम्बुसार्याम्डिमान्त्रीर्द्धाः द्रेग्यमारस्युमायाम्बुर्द्धाः

प्राञ्चित्त्वत्त्रभ्वत् । याद्रमी स्वर्ध्वत्त्रभ्वत् । याद्रम् स्वर्ध्वत्या स्वर्ध्वत्य स्वर्यत्य स्वय्यत्य स्वय्यत्य स्वयः स्वर्यत्य स्वय्यत्य स्वयः स्वर्यत्य स्वयः स्वयत्य स्वयः स्वयत्यत्य स्वयः स्वयत्य स्वयः स्वर्यत्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वर

क्ष्याच्या स्थानिकाक्ष्याची क्षेत्राची क्षेत्राची क्षेत्राचात्त्र व्याप्त क्ष्याच्या क्ष्याच्या क्ष्याच्या क्ष्याच्या क्ष्याची क्ष्याच्या क्ष्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच क्ष्याच्याच्याच क्ष्याच्याच्याच्याच्याच्याच क्ष्याच्याच क्षयाच्याच क्ष्याच्याच्याच क्ष्याच्याच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच्याच क्षयाच क्षयाच क्षयाच क्षयाच क्षयाच्याच क्षयाच क्याच क्षयाच क्षयाच

दे.चब्वि:न्द्रःश्चित्रःद्वे:श्चेन्:स्वा न्द्रःश्चेश्चरःव्यक्ष्यःचःश्वी। स्टःश्चेश्चरःव्यक्ष्यःचःश्वी। स्टःश्चेश्चरःव्यक्ष्यःचःश्वी। स्टःश्चेश्चरःव्यक्ष्यःचःचःश्वी।

श्चिम्ब्रास्यक्रक्षायस्यक्षाःश्चरः।। ब्रिप्ततःक्ष्यंत्रेःमब्रस्ययः स्रिप्ततःक्ष्यंत्रेःमब्रस्ययः प्रकृष्णं

दे-अर्ह्स्-वसःग्रस्-वर्त्न्-वर्ता। अस्-राम्बे-अन्द्रसःक्षेत्रः चरः वश्चुर्गा। अस्-राम्बे-अन्द्रसः क्षेत्रः चरः वश्चुर्गा। क्षेत्रस्वतः क्षेत्रः वर्त्ने

240 त्तु अ केंश द्वीदश वर्शेंद्र यदे इस वन्त्।

बदबाक्कबानेन डेबानवार्श्वेनिनि। ने कु वर नग नुस्य वया वै॥ वर्नेन् यदे में व्यन्भवर्षेय यम् नुन्। ब्रूट्य दे वे के व ह वटा। हॅमा सेन मणें य सेन य केना। दे सुन्द वर वहिषा हेव वा। र्देव केव यंबावे के यम गवबा। दर्ने वे मदा बेस मुदाय वेशा। श्राम्ब्रिक्षे विश्वास्त्री ने स्वाय प्राया स्वाया का अर्थे द है।। दे दग या वे देव में द त्यु मा रेश ग्रीश दे अर्घर या पहेव वश्रा

वेग्-यः दर्ने त्यः गृत्रश्चः सुः वृ॥ वदः गैः ददः यः सुः वृ॥ यः वृश्वः श्चेग्-गैशः शर्वेदः यकः दशुः मा

बेशम्बास्यायान्दर्नेवासहवायाधिवार्वे॥

प्रश्नमञ्जी क्र्याः अराध्यक्षः अर्थः अतिकात्त्रः स्थितः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्य

तलवासायत्रः वटावः स्वास्त्रः स्वासान्ते ना। चुसायत्रः वटावः स्वास्त्रः स्वासान्ते ना।

> न्नतः खुग केत्र यें कें न्यम सेन्।। न्नतः खुग केत्र से खुग्न सेन्।।

त्रमणः निकायवृद्धः हो।

विकाया वे कायवृद्धः हो।

क्रि.स्याश्रमश्चर्यश्चरायश्ची। नियमान्त्रस्य स्थानस्य स्थानस्य

242 न्तु अर्केश न्दी दश नक्ष्र परि इस नन्त्

ब्रुःषद्ञीःबद्ययःग्रुःब्र्गा व्याप्तराधाःबद्याः

देवे बुरा

म्परम्बेशत्ब्रशत्यः श्रेष्यः स्वारम्ब्याः स्वरायः स्वेद्यस्यः स्वेषः स्वारम्ब्याः स्वरायः स्वारम्ब्यः स्वारम्ब्यः स्वारम्ब्यः स्वारम्ब्यः स्वारम्ब्यः स्व

 स.धुर.चक्षेत्र.धूरी स.भुर.त.पर्ट.भरूच.बीभारी.बीर.त.चु.कूथ.बी.र्चीट्य.चअभ.बीश.भु.व.अर्थ.व्याच्या.बीश.व्याच्या.बीश.व्याच.बीश.व्याच्या.बीश.व्याच.बीश.व्याच्या.बीश.व्याच.बीश

द्रवाद्यात.देवी श्व.त.जद्य.ग्रीट.।

श्चित्रयःगदःग्रीयःमेश्वरयःदे॥ श्चाद्यद्यःवद्यःक्षेत्रःयःह्यः श्चीत्रःयःददःक्षेश्चःद्यःवद्यः॥ श्चित्रःयःददःक्षेशःद्यःवद्यः॥ श्चित्रःयःवद्याः

वेशमञ्जूदशः श्री।

दे.क्षेत्रःक्ष्र्यं बादावानीरःक्ष्यःक्षेत्रःक्ष्यःवी

विरक्ष्यः रेट्या राज्यः ये स्वार्थः विराष्ट्र के या राज्यः विष्यः या स्वार्थः व्या विष्यः द्वार्षः स्वार्थः या स्वार्थः विष्याः विरक्ष्यः स्वार्थः स्व

नेशन्तर्यत्वाम् यन्त्रभुत्रस्य स्वाधिमायतः स्वाधिक्यः स्वाधिक्यः स्वाधिक्यः स्वाधिक्यः स्वाधिक्यः स्वाधिक्यः स त्रित्तर्वे स्वाधिक्यः स्वाधिकः स्व

डेबानु:पार्टा यर्दे:बे्नुवायबागुटा

बेशकात्पकात्ववद्गात्रीन्द्वीत्रकात्ववद्गा। ने वकाक्षेत्रकात्वात्ववद्गात्वित्रक्षात्व्याः च्लिंदिन्द्रकात्वकात्विकात्वात्वेद्शात्वक्षा। ने क्षेत्रकात्वक्षात्वेद्शात्वेद्शात्वक्षा।

क्ष्यान्त्राच्याच्यान्त्र्वित्राचित्रः चेत्रः त्रियाचित्रः विद्याच्याः विद्याः विद्याच्याः विद्याः विद्याच्याः विद्याचः विद्याचः विद्याच्याः विद्याचः वि

तम् मुप्ति स्वार्ति क्ष्या स्वार्ति । क्ष्या स्

246 न्तु स केंब न्दीन्ब नक्ष्न परि इस नन्त्।

मुःस्वाश्वास्त्रात्ते व्यस्त्रात्ते स्वास्त्रात्ते स्वासः स्वासः

ग्रेशयायिं रायदेगारेवार्ये प्रमुद्धायात्री

यन्षान्मय्यन्षाःषीःबेश्वःयद्वेषःयशा देःश्चेनःष्ठेःक्र्यःद्वःयहषाःयशा यन्षाःभेनःद्वयःयःषिक्षःभर्वेदःद्वशाः श्चेनःयदेःश्चर्वेदःद्वशाः

त्रभामार्ह्म् वासामार्थ्या स्थान्य स्

त्रस्तिः। वृक्षायद्वात्तर्भुत्तर्भाक्ष्यः व्यक्षात्रः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वा विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भवः विक्षायद्वात्तर्भुतः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवित्वः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्वात्तर्वत्वः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्भवितः विक्षायद्वात्तर्वत्वयः विक्षायद्वात्तर्वत्वयः विक्षायद्वात्तर्वत्वत्वयः विक्षायद्वात्तर्वत्वयः विक्षायद्वात्त्वयः विक्षायद्वत्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायद्वयः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः विक्षायः

248 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्सेन् यदे द्वा वन्त्।

येश्वरकाताःक्षेत्रः पूर्टः दिश्वरः तत्रः वित्।। इयाश्वरः तत्रः पूर्टः दिश्वरः तत्रः विद्।। इयाश्वरः तत्रः श्रुवाशः त्यशः श्रु हिरः

देवे:द्वा:हु:बे:चवे:अवस वर्चे:वाश्चर वर्वे:धुःस। अस्य:कुराधे र्ह्याः दर:ब्रेट:हे केव:च्याःय:वेश ग्री:श्लु:वश्चर वर्वे:वित्रः। अस्य:कुराधी र्ह्याः व्रेव हे। क्रिंयाग्री:द्वीरय:हेंग्य परासद्द पाणेव:व्याः।

देःवश्वाश्वस्यायः विष्यदेः गनेवः येः यक्ष्व यः वि।

यार ख्री र स्वरक्ष क्रुक्ष ख्रा र द्वी र या देवी। या र ख्री र या है का देवे र यो देवा या है या का या है या विकास देवे र या है का से देवे का या के या है या विकास देवे के स्वरक्ष के स्वरक्ष स

ने'यारामारामी'खीराले'व। वर्षिरायान्दासुम्द्रायकायन्द्रायामिका

म्याविष स्वरायक्षा देवः इत वर्षे माना निष्यं स्वर्धः वर्षे स्वर्धः वर्षे स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्

च्या विश्वान्त्रतात्विम् क्यां । विश्वान्त्रतात्विम् व्याः व्याः क्ष्याः विद्यान्यत्वे । व्याः क्ष्याः विद्यान्यत्वे । व्याः क्ष्याः विद्यान्यत्वे । व्याः क्ष्याः विद्यान्यत्वे । विद्यान्त्रत्वे । विद्यान्त्रत्व । विद्यान्त्रत्वे । विद्यान्यत्वे । विद्यान्त्रत्व । विद्यान्त्रत्व विद्यान्त्रत्वे । विद्यान्त्रत्व विद्यान्त्रत्व विद्यान्त्रत्व विद्यान्त्रत्व । विद्यान्त्रत्व विद्यान्त्यत्व विद्यत्व विद

वीत्र विश्वास्त्रस्य स्त्रिः सक्ष्य स्त्र स्त्र

दे क्षेत्राचक्षेत्राचायाचहेत्रत्रकार्क्षेत्राचार्छेद्राच्याक्षेत्राच्या

250 न्तु अर्केशन्विदश्यक्ष्रि धरे द्रुशन्त्रन्।

तर त्वीर है। देश अक्ष द्वा अक्ष विकास के क्षेत्र के त्वा क्षेत्र के त्वा के क्षेत्र के त्वा के क्षेत्र के के क्षेत्र के

द्रवाक्रवाक्षयाच्युतायाः व्यवित्रा। द्रवाक्ष्यः त्रव्यः त्र्यः त्रव्यः त्र्यः त्र्यः त्र्यः त्र्यः त्र्यः त्र् क्ष्यः स्वाक्ष्यः त्रवः त्रवः त्रव्यः त्रव्यः त्रव्यः ।। क्ष्यः स्वाक्षयः त्रव्यः त्रव्यः त्रव्यः व्यव्यः ।।

बुबायन्दरा देवायन्तुवाद्यायकाग्रुरा

इस्यायराद्येवार्देवासीयिक्षयर॥ विकायादस्यायायहृषासुदादेदासी ष्यादाद्यायकेदावस्यासीसुदायदे॥ क्रुक्षसासामायकेदावस्यायस्या

डेबाम्बुद्द्याचें।

तश्चिम् अस्याक्चित्रायर्थेदायद्येत्वेत्रायर्थन्त्राय्येत्रायः वित्रायः वित

बेबानाबुदबायायार्क्षनाबायते देवा क्वाकेराणेंदानीबार्बेबायार्क्रनामें । अद्राप्तक्ष्यायायार्क्षनाबायते देवा क्वाकेराणेंदानीबार्बेबायार्क्षनामें ।

र्वेत्र-श्रर-तानु-ता-नेश-ग्री-श्री-वेश-ग्री-न्ना क्र्य-श्री-तिन्न-त्री । रिश्यी । हेन-श्री-तानु-ता-नेश-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन्न-तिन-

नगरःश्चनः श्वः स्वीवाशःश्चेतः यः नदः॥

तःश्रद्राद्धाः विद्यक्ष्यात्ता विद्यक्ष्यात्रात्ते विद्यक्ष्यात्त्र विद्यक्ष्यात्त्र विद्यक्ष्यात्त्र विद्यक्षयात्त्र विद्यक्षयत्त्र विद्यक्यक्षयात्त्र विद्यक्षयत्त्य विद्यक्षयत्त्यक्षयत्त्र विद्यक्षयत्त्य

252 न्स म र्सेश न्दीन्स मह्मेंन् परि इस मन्।

कुंवाविस्रास्त्रस्य स्वारुव देव सूर्।।

वेशन्यः हो। निरः स्वार्था स्थान्य वितः स्थान्य वितः स्थान्य स

মাধ্যমান্ত্র দেব বি নিমধান্ত্রধার বিশ্ব

स्।।

हिमकालका विराद्या विकास है। विश्ववाका में दिनिया का में मान प्रति त्या है। दे कि मान विकास है। दे कि मान विकास है। दे कि मान विकास है। दे कि मान कि मान है। विकास है। है। के मान कि मान है। विकास है। व

क्रॅबन्ह्यस्य गुन्न क्रुप्त क्रुब्द त्युब्द द्या । द्या प्राप्त क्रिया क्रुब्द त्या क्रुष्टी द्या प्राप्त क्रुब्द त्या क्रुष्ट्री द्या प्राप्त क्रुब्द क्रुब्द त्या क्रुष्ट्री द्या प्राप्त क्रुब्द क्रुब्द क्रुब्द त्या क्रुष्ट्री

त्वीक्राग्रीक्राण्य्याध्याये व्यक्तियाय विश्वास्य विश्य

> ब्रुव-८८-द्ध्यः विस्तरायक्ष्यः वस्त्रायः है॥ व्यक्षस्य विद्यात्रे स्वर्थः विद्यात्रे स्वर्धः है॥ व्यक्षसः व्यात्वे स्वर्थः विद्यात्रे स्वर्थः है॥ व्यक्षसः व्यात्वे स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स

षुश्रासर् हे मुद्रायश्राम्

ब्रिव्यायम् स्थायम् श्रुप्तायः प्राप्तः । । व्यवसः प्राप्तमः श्रुप्तायः प्राप्तः । ।

254 न्सु अर्केश न्दीन्स वर्सेन् परि हुस वन्त्।

बेबाम्बद्धर्यायात्री वयवास्रामकायात्रीयक्रियान्दा स्वापादाया सी स्टर र्टा क्ष्रायमानेसार्या गुमासूराया द्वा क्रिकेर चेराया । श्रूव तसा वे वर् भे ने रायर से लाय रहा। से प्रति स्वयं सावस्य या वसूय परि से र रग्-दर्भवायां विष्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष ग्रीकाम्रुयायरामुकायराम्चेदायर्थे। यिःवेकान्ने हिःस्रायाद्वादेशम् स्वार्यस्य म्बित्रक्तीः र्रेव प्रमुद्धार्या स्वीतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वीतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ब्रेन्पर्दे । तर्ने इससर्वें वायन्तर हें मानते त्यानु ही। वी कर्न सत्त्रवा पर्यः पश्चितः प्रकार्द्धसाक्षाः अञ्चर्दानः श्चित्रितः त्यः त्विष्वकात्रः विष्यः द्वारा विष्यः विषयः विषय र्श्वेन्यःश्लेखः स्वायदेश्वः यन्तुवः त्यः नृक्षेष्ववः यः नृतः यन्त्रवः विष्युक्षः यः त्यन्त्रे न्द्रीयात्रायात्रीन्या हो। सदत्रा मुक्षा ग्री त्राया त्री त्यूत्र ग्री त्रायायाया पर्हेन्न्। विनेत्रमानाग्रीः वारानी श्रीतः वारानी श्रीमानानी वारानी वारानी वारानी शुःबहेदान्। व्हिलाविस्रवाग्रीवागदिन्यावस्रवाउन्सेन्यमञ्जेन्न। पञ्चर पश्चर विश्व कर प्राचित्र यो पर्दे व त्या का मिक्स के प्राचित कर प्राचित चर-व्रेन्त्य। चन्नस्यान्त्रन्त्रीन्तः ह्यात्स्यात्यात्र्यान्यात्रस्याः चर-व्रेन् र्दे। निसन्य ग्रीसायसम्बन्धः मुंगुः क्वां यायमः ग्रीनः या वयसः ग्रीसः स्रीः बर्तराचेर्करा ब्रैंदालमाबीसामरमामुकामहेकाराहेकारा नाह्माहितहा तर.ग्रेर्जा क्रूंचश.ग्रीशक्षात्राश्चव्यायात्राज्ञीयात्ररात्वीर.हरा जा.सेश য এখ। প্রথম প্রথম প্রাম্থীর বেম ট্রিন্ যে দ্বী । বর্ষান্দ মহার স্ক্রম এম রেট্রন্

डेशमाशुस्यार्से॥

त्या रेट्यूश्ट्रीयेट्यीयातपुर्ध्यायभेट्रिय्युं। क्रुवंश्चर्यहेर्त्रे।

श्च.प.रवे.तस.श्चे.पश.क्षे॥ चेरःक्षेत्र.स्त्रश्चश्चित्रश्चेत्रश्ची।

क्र्याग्री:श्रुग्वेग्दवुस्याधितायम्। क्रियाग्री:श्रुग्वेग्दवुस्याधितायम्।

> श्रेअश्वास्त्रेत्यन्ते म्वत्य देवास्त्रीय। स्टार्मा स्वास्त्रीयास्त्रीयास्त्रीयास्त्रीयाः

महिनाहिं में से दें। दि स्वित् त्या से स्वाप्त स्वाप्

बेयबाने प्रतायित स्त्रीय विषया यहात क्षेत्र स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीत स् स्त्रीय स्त्रीय

म्पट-द्याः त्युं त्युवः प्यद्याः श्रेतः श्रधः विष्यदः द्याः ह्याः स्वर्थः व्यवसः स्वरं त्याः स्वरं व्यवसः व्यव

द्वां अट्या मुक्त हे अलुर म् विषय या भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भीता भ्रीताय भ्रीत्य भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीताय भ्रीत्य भ्र

अयश्चत्रम् स्वाप्त्याच्यायः मेश्वर्थायः स्वतः स्वत स्वतः देः तः तर्तुः ।।

ष्रमाश्रद्भायदेः द्वः विश्वायमः चुर्वा।

देशक्षक्षयायक्ष्यप्ति साम्यानि साम्यानि

त्र-विद्यान्य्यं त्याः स्वाधानाः ॥ त्याः स्वुद्यान्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षे

ह्याची त्याया स्वाय क्षा १ व व व त्या क्षाय क्

दे.जबःश्रुं.खेटःजबैंटःचरःजबैंटा। टेबं.चक्काःभेटःचश्रीचःचःजबा। देवःचक्काःभेटःचश्रीचःचःजबा। विरःष्टेचःश्रत्रबाद्धेःच्याः

द्युवःश्चित्तः ग्रीयाकात्मः ग्रीटः। स्रम्भान्तः ग्रीटः ग्रीटः श्वेदः श्रेम्भान्तः स्मान्यः सम्मान्यः समान्यः स श्चेर.ड्र.ट्र.ट्र.ट्रेट.क्ष्य.अश्वात्वसर्वेरः॥ चीज.ज्ञेश्व प्रश्नात्वे,वाधुश्चाश्चट.चुश्चरच.ट्रः॥ श्रदश.चीश.ट्रेट.क्ष्य.श्रश्चाट्यराजश्चारविदशःचुरः॥ ध्व.ड्र्य.श्वरश्चीश पत्तिस्थ्यश्चीय.ट्यट.श्रुशी।

बुबार्धिःशालायह्वीत्तराम्बिरश्रारात्त्रवेशी

> ह्र्याबाश्चाः द्वेतः द्वेतः द्वेतः द्वेतः व्यव्या। ह्र्याबाश्चाः हुताः द्वेतः द्वेतः द्वेतः व्यव्या।

देवे विद्रायम् प्रमानिक विद्यालया । विद्रायम् विद्यायम् । विद्रायम् ब्रिद्धिंशम्बद्दानविर्देदातुःसुदानविर्द्वान्दासुद्वान्यस्य र्त्वाः स्वीत्रास्त्रस्य स्वीत्रास्त्रस्य स्वीत्रास्त्रस्य क्ष्रम्य द्वेदि द्वेद्वे श्रेष्म व्यवस्य दि द्वेद्वा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वा क्षेत्राञ्च पुराषाः स्था । वि.पार्डिया यः लेखा चुः यः दी। स्थेयसा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स् म्रे। गुर-कुप-बेसब-द्याय:इसबाई-बेसब-उद-वसब-उद-वु:वाईवाय: क्रमान्नेमन्यत्रिम् में । । सान्य महेनानेनान्ने मानान्या विक्रमान र्वता-पर्वता-अर्व्य-प्रवासी-प्य-प्रमुख्य-प्रवास-अव-स्थन दे त्यक्ष वर्दे व प्रवे क्रिं र प्रवे क्रिक्ष प्राये द प्रवे क्षेत्र र र वी विषा प्रयः विषक स्य इस्र श्री क्षेत्रा में विर्दे र द्वेत द्विस यन्त्रा विश्व यु या देव वा वा विश्व या विश्व या विश्व या विश्व यद्भिमन्द्रम्ययायाय। द्भिमभेद्रायदे सेमस्दर्भ्यया। दर्भमभावित्रः ग्रीकेंबासर्द्रवासुसानुः र्हेगवाय। बेसवाउव व्यवसासु स्रीव पराग्नायदे स्रीतः पश्रमायदेव,री.विश्वसाविश्वमायर्थस्य स्थ्रीय.वयाचेरास्य श्रेयश्चर्यदेश्वेम्'न्नु'नुगश्चे। निर्ने'ग्रेशमुं'शर्द्वे अर्ध्यक्ष्यं सुर्वे रायावस्य उन् यमानीव मुर्जे वायान होन् यम हो या यो वाया विद्वा हो सम र्स्रेयत्त्र्। विश्वस्त्रं म्यूक्षः मुस्त्रः स्वर्त्तः स्वर्धः स्वर्त्तः स्वर्त्तः स्वर्त्तः स्वर्त्तः स्वर्तः स्वर्त

म्,र्माय,मीजात्रात्रबीर.तरावधीर.त्रात्रभेष.त.वी

दर्व-पःक्ष्यभःग्रीकःपर्युदःचनःसद्।। देःप्वेदःवेषःग्रक्ष्यःग्रेदःचनःस्। वेदःपत्रःपर्युदःचनःग्रेदःपःस्म। दर्वेदःस्यःस्युदेःचनःग्रेदः।।

श्रद्भाः श्रुपः श्रुपः त्रियः अर्थः ययदः ॥ त्राचित्रः व्यवः अर्थेदः चः त्रुपः ।। त्राचित्रः व्यवः अर्थेदः चः त्रुपः ।। त्राचित्रः अरः द्विः चर्युः चर्त्वे । याः व्यवः ययदः ।।

याः अविषयः वश्च साम्याः द्वा स्त्राः स्त्र

देशबाग्री:देशबाग्रीबादवेजायम्थार्स् ने'यवेव'बाजात्वीबाद्यश्वरात्रम् भेट्रेवा'भेट्रेवा'ग्रीबादवेजायम्थार्स् हे'क्षेम्रक्षेबायदे'श्लीबाद्यश्वर्णातम् हे'क्षेम्रक्षेबायदे'श्लीबाद्यश्वर्णातम्

लक्षाम्बद्धान्तिः विकानीक्षान्तिः क्षेत्रः विकानिक्षान्तः विक्षानिक्षः विकानिक्षः विकानिकः विकानिक्षः विकानिक्षः विकानिक्षः विकानिक्षः विकानिक्षः विकानिक

यम्। यम्। क्रिकाचीश्चरकायात्वमः क्रिकाचीय विदेश विदेश

तालानुःश्चेन्यादश्रभ्रन् ताचर्ड्न् न्युंभेन्यान्त्रस्य न्यान्त्रस्य न्यान्त्य न्यान्त्रस्य न्यान्त्रस्य न्यान्त्रस्य न्यान्त्रस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्यस्य न्यान

सवरः धुगायदे द्ये यक्षुव या दी।

ह्रे.केंस्क्रस्ट्राय्यक्तिक्ष्यी श्रीयार्च्याश्चरत्रस्त्रायक्ष्यी श्रीयार्च्याश्चरत्रस्यायक्ष्यी श्रीयार्च्याश्चरत्रस्यायक्ष्यी श्रीयार्च्याश्चरत्रस्यायक्ष्यी

264 त्स् अर्केश त्वीदश वर्केत् यदि इस यन्त्।

द्विः मुक्ष सर स्वत् द्वा स्व क्ष्य क्षेत्र क्षेत्र क्ष्य क्षेत्र क्षेत्र क्ष्य क्षेत्र क्षेत्र क्ष्य क्षेत्र क्षेत

खेरश्चेंन्ययायह्वर्याः विद्वर्या। इत्राह्यस्यायायह्वर्यः विश्वा। इत्राह्यस्यायायह्वर्यः विश्वा। स्वार्धस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्व

ने वश्यक्षन्य वर्षे प्रयाप्तु न्याय प्रवास वर्षे व

वनायितःनिविद्वेः विद्यास्य स्वा न्यामः यितः निविद्येः म्यायस्य ने स्वादेश्यादेश्य स्वाध्यस्य न्यादः योष्ट्रेश्यस्य स्वाध्यस्य न्यादः योष्ट्रेश्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्विद्यस्य स्वाध्यस्य स्यस्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्वाध्यस्य स्

वृक्षाचित्। नि.क्तर्शर्मे क्रीचिरात्मा विकानित्। नि.क्तर्शर्मे क्रीचिरात्मा विकानित्। नि.क्तर्शर्मे क्रीचिरात्मा विकानित्रात्मा विकानित्मा विकानित्रात्मा विकानित्मा विकानित्रात्मा विकानित्या विकानित्रात्मा विकानित्या विकानित्या विकानित्रात्मा विकानित्या विकानि

बेशम्ब्रुद्रश्चर्यदेर्द्वन्द्वेर्यप्तावी श्रेट्वन्द्र। देवन्द्रा विवास

266 र्स अर्केश र्युटश यहूँ र परि इस यश्री

> त्रिःक्ष्यःश्रेश्वरः द्वा । त्रित्रः श्रृक्षं रः यः यश्येशःश्वरः श्वरः श्रीकः श्वरः ।। देवः क्ष्यः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः ।। देवः क्ष्यः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः ।।

स्त्रान्त्रीट:न्यट:खुन:केंत्र:यशुरा। यहेना:हेन्द्र:व्यक्षश्चे:यक्कुन्वर्थे:वेट:॥ यहंक्षान्त्रेत्र:व्यक्ष्यःवे:यक्कुन्वर्थे:यशुरा।

देशम्ब्रुदशर्थे।। देखसम्बद्धाः विकासम्बद्धाः स्थान

> तर्नेन्-स्वाशायार्श्ववाशास्त्रःस्वाशायते॥ द्रे-स्वाःहर्नेद्रिःसःस्व॥ द्रे-सःसेन्-स्वरःन्वान्य॥ द्रे-सःसेन्-सेश्वरःहर्न्-सःसेन॥

विश्वसामुद्धित्याहे। कुँव-मूर्यसायायर्द्द्द्रम् स्वाद्यायार्ज्ञ्यायार्ज्ञ्यायायस्यायाय्यस्यायार्थ्यस्यायार्थ्य

दक्षत्रः र्क्षुत्रः र्क्षुत्रः चिद्धः चिद्धः चिद्धाः चिद्धाः चिद्धः चिद्धः चिद्धः चिद्धः चिद्धः चिद्धः चिद्धः

लेश य ५८।

पश्चित्रस्य देःसःस्रेतःस्रेसःस्री। पश्च दटःद्याःदटःस्रेससःग्रेःप्यसा। प्रस्तिःस्य देःसःस्रेतःपत्रेःस्रिम्।

दब्र्.तवः त्व्र्रः ज्वान्यः विद्यः विद्य द्यायः विद्यवः द्याः विद्यः विद्य

बेबायबुर्न्स्॥ बाबाबुआयार्द्धन्तेन्यायम्बरायदी।

क्रेंब्रॉट्स्प्रेंड्र्स्स्यः स्वायाययायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयः स्वयः

अवरः वयाक्षेत्रः तयायाः वद्याः व्यास्त्रः श्वः तद्देवः चः यो दः चतः वेदः व्यामे वद्यः विद्यः विद्यः

268 न्तु अर्केश न्तुन्स पर्शेन् परि इस पन्ना

गुःस्रदायामुःकेवार्यमानुः यद्। दि यदा। गुःस्रदायामुःकेवार्यमानुः यद्। दि यदा।

> र्केशःग्रीःश्वरःयःकेषःयःवि॥ वेत्रयदेःश्वेरःषःवेत्रःवेत्रयदे॥

बेशय द्रा

सःमाशुस्रायाने तेत् चुन्यते॥ सःमेशने यदे न्ययः त्युह्य दुन्या यश्यः मान्त्रः सर्देत् नेश्वः यश्चेन्य न्यः॥ वर्देन् कम्बाने यदेन्यः स्थान्यः चुन्य। देवे द्वस्यायमः श्चेत्रः यस्यान्यः वि

द्रियं प्रत्ये त्र्यं क्ष्यं प्रत्ये व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्य व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्

वेशःश्री।

बाचबीयार्देर्।दर्बे यामन्याची

दर्शःदह्रस्यःचरःस्ट्रह्रस्यःचःव्या। इत्राक्षःद्रस्यःचरःस्ट्रह्मद्यःचःव्या।

ब:नेब:दॅर्-भीब:रव:वर्ड्सर:वर्षा। ब:रे-दॅर्-१दर्से:उन-५:१र्रे

बेश्रामश्चरश्चायते खे. नेश्वामी द्वरावस्त्री त्वर्तायते क्वामीश्वरायः व्यामी विद्यस्त्रामी विद्यस्त्रामी विद्यस्त्रामी विद्यस्त्री विद्यस्त्रामी विद्यस्त्रमी विद्यस्ति विद्यस्त्रमी विद्यस्त्रमी विद्यस्त्रमी विद्यस्त्रमी विद्यस्त्रमी विद्यस्ति विद

बेशय ५८।

विद्यक्षात्र्र्भक्षानुद्धान्यायाः विद्यान्यायाः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यायः विद्यान्यः विद्यायः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः व

270 त्त्य केंब द्वैद्य वर्षेत् वर्षे क्य वर्षा लेख वास्त्रक कें।। अ.स.च.स्रुट त्याय वर्षे

> देवाबान्दःश्चुःस्यान्यःश्चुदःन्यादःवाश्चद्या। व्यथ्यःवान्वःस्यानःश्चुदःन्यादःयया। व्यथ्यःवान्वःस्यःतःश्चुदःन्यादःयया। द्यायःन्यःश्चुःस्यःन्यः

ब्रैट्ट्योप्ट्राल्वे ग्रीट्ट्र व्याप्ट्रिट्ट्ये स्थ्रात्त्र विक्रम् विद्र्य विक्रम् विद्र्य विक्रम् विक्रम्

स्थान्य स्थान स्य

बेशय ५८।

यद्भारतिक्षः स्वीतः स्वीतः

द्वन्त्रस्य यान्यक्षयात्त्र्वेत् वेद्यस्य । स्यान्यस्य याद्यक्ष्यस्य व्यान्त्री। द्वायः स्वतः नावस्य याद्यक्षः क्षयः व्यक्षः ।। स्वायः स्वतः नावस्य याद्यक्षः क्षयः व्यक्षः ।। स्वायः स्वतः नावस्य याद्यक्षः क्षयः व्यक्षः ।। स्वायः स्वतः स्वायः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ।।

ब्रेश्चग्रह्म्स्यःस्या अनुवायासस्य स्या

श्रद्ध-दिश्ची-रथका श्री-टा-दरवाबा-त-रच-धिःचय-त-ध्र्वाक्ष-त-क्षे। श्रुष्ण-त-कुर्-दि-विश-रच-ग्रीक-ध्र्वाका-तकःश्रुर-रद-ख्रे-च-खिर-श्रुर-दि-ख्रिकाबश्चरकाक्षे। वध-रदा-दि-दिय-श्रुषका-द्वि-दिय-वश्चिका-त्व्य-

स्वान्त्रस्य स्वा

272 न्स् अर्केश न्द्वीत्स वर्केन् वरिक्स वर्गा

त्म्यात्मस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य

ब्रायतुष्ठायःत्री। सम्पत्तुषायःत्रेटःतुःसॅटःयःवी।

> द्विर्यस्तिः चर्गेद्रायश्वस्याः गुवः हु।। द्विराचिरायश्वस्याः द्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्व

विश्वामाश्चरत्रायश्च वारावीश्वायतीत्याश्च । स्वर्मामुश्चामीत्रायायायात्र्वरः विष्यायात्रीत्रवाश्चाश्चायवित्राय्वेतित्याम् । स्वर्मामुश्चामीत्यायाय्वेत्रः इत्ययः प्रदेशस्य । वारावीश्वायत्रीत्याश्चरम् । स्वर्मामुश्चामीत्रायायायाय्वेत्रः स्वर्माम् पन्न प्रमुख प्राधित वे | निःषदः।

वर्षेत् चेषा यस दहार वर्षेया वर्षे क्षेत्र। देह हुर्षेद वर्षे सम्बद्ध स्टिन्

वेशन्र"।

यह्रवायाचे दिन्दुः केंद्राया द्वा। यद्यक्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्र विद्यक्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्र

देव:इय:यर:श्चेत:यदी॥ दयम्य:यदे:यदेव:ह्नेम्य:वेश:यख्या। स्यम्य:यदेव:हेन्म्य:वेश:यख्या। श्चेंय:द्वेत:व्यक्तेम:क्वे

बेबायन्त्रायां के स्वयं स्वायस्य स्वयं स्

> ल.चेश.ची.अक्ष्र्र-(विश्वश्चरा.टेट.।। बरश.मीश.ग्रीश.इश.पट्ट.पर्बट.(वेट.।।

274 त्तु अर्केश द्वीदश पर्शेद् परि हुस प्रमृत्।

ययर.शुर.क्षेत्र.ब्रीश.बीय.बीर.तप्।। ययर.शुर.क्षेत्र.ब्रीश.बीय.बीर.तप्।।

> ८५.चेश्यविश्वजीश्वज्ञःवाळ्डःह्येन॥ अवाळ्चःचःहेश्वज्ञःच्यःचाळ्डः

लेक्षयतुः नेक्षमित्रेक्षत्रे। नेक्षन्यान्यान्यते खेरार्दे। विकान्यते खेरार्दे नेक्षन्यते विकान्यते खेरार्दे ने

ने'चित्रेन्चमुन्'च'गर्वेद्वःदुदे'स्था। श्रे'क्वाःस्यान्यःग्रीत्रःश्रे'ग्वाव्देःस्रेन्॥ श्रे'गर्वेन्दे'चत्वेदःस्यन्दन्दे॥ म्याःस्यान्द्वेद्वःस्यान्यस्यान्त्रे

दे'खे'क्य'यर श्चेत्र'य दे॥ क्ट्रेंट मी'यदमायदिः संदर्भयर दशुरा॥ ষ্টামন্থকর বন্ধমান ব্রীধ্ব বর্ত্ত্রিক। বার্মা। বৃদ্যানের্ক্তমার্ক্ষকার্ক্যালার বর্ত্ত্বিক। বার্মা।

बेशग्रहामन्द्री। अन्तुग्यायेष्ययदे ह्यांब्र्यम्बरायदे।

> र्शः र्श्वः ष्यदः द्वाः देवाः गुवः त्वा। इत्यः त्रेष्ठं दः द्वाः त्रेष्ठः द्वाः त्रेष्ठः द्वाः व्या। इत्यः त्रेष्ठं दः द्वाः देवः यव्यः व्यवः द्वाः व्या। सःदेः त्येषाक्षः द्वतेः स्वाः ग्वांकाः तर्दे द्वा।

> इं इं जियह द्या देश हैं चित्र दा है । । इस्ट्रे के स्वर्ध के स्वर्ध हैं स्वर्ध हैं ।

बेशनु य दर

सन्त्रायन्त्रे येग्सयय्वी। र्ह्मे र्चेस्वेस्य मुख्यस्य विद्या 276 द्व अ कॅंब द्वीदब चक्रेंद्र चरे इस चन्द्र

न्दः धुरः क्षे क्षं व्यतः द्वाः देवा। वृदः धः यदे देवः व्यक्तिः वृक्षः व्यवद्या।

देव इसप्यर श्चेष प्रश्नाता । क्रिंट गरीका प्रत्या प्रति स्वत्या प्रस्ति ।

ष्रातवृद्धः 🛚

श्रायसुर्यः केंश्राणीः श्रीवायम् द्राया

क्रमःग्रीःश्वेवःग्रीकःग्रावःहःवन्नः॥ इन्येदःवयःयात्रवःद्रःयवयःय॥ इन्येदःवयःयात्रवःद्रःयवयःय॥ इन्येदःवयःयात्रवःद्रःयव्याःय।॥ इन्यःग्रीःश्वेवःग्रीकःग्रीवःद्रवःयःयव॥।

बुश्रातवृद्दः []

वर्षे | दिवरा| स्वितः त्याः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

> श्चेत्र पतित्र गृतेश ग्रीशत्य यायायरे केंबा। प्रयायदे स्वीर ते केंबा ग्रीश्चेत्र।

बेशयान्या

देखेः इस्यायम् श्चेत्रायस्त्री। व्यवस्यायस्योः त्रेत्रायद्याचीः वद्यम्। व्यवस्यायस्योः त्रेत्रायस्याचीः वद्या। द्यवस्यायस्योः त्रेत्रायस्याचीः वद्या।

स्वात्राचारित्वा स्वात्राची देश्वे प्रात्ति स्वात्राची स्वात्राची

शुक्तः हुः दर्शे दिवा अर्क्षेणः ने दिवा। शुः अञ्चलः दिवा श्रीः अर्केणः ने दिवा।

278 द्व अ केंश द्वीदश वर्शेंद्र यदे इस वर्ष्

ፙ፝도ቘ፧ቘၟ፧ዼଝ፟ቒॱघॱऄҀ Ť゙ቒॱҀ도'|| ቜۣ፧ቒቚቘ፞፞፞ቔॱҀҀॱऄҀॱघॱҀ도'||

र्केवःॲन्स्वस्यः न्याः येवः नेवः न्तः॥ सः न्दः येदः यदेः नेवः केदः नृतः॥ यद्येः येदः ययेत्यः यः योदः नेवः नृतः॥ नृत्यनः वेद्धयः यः ययेतः विद्यान्यः स्वा

क्रॅबःग्री:न्द्रीटबःत्यःयःसेन्।। क्रॅबःसंटबःस्वःसेवःश्चेतःयःचस्था। बःचस्त्रुतेःसेःसद्युव्यःस्वयःचस्था। बाक्रेवःर्यःन्वावेःस्वयेवःव्या।

ल्यान्त्रक्ष्यायवरायवान्यव्यान्त्र्यान्त्रित्यायाः वित्यान्त्रेत्याः वित्यान्त्रेत्याः वित्यान्त्रेत्याः वित्य विवाद्यान्त्रव्यायवरायवान्यवान्यान्त्रेत्यायः विवाद्याः विवाद्याः विवाद्याः विवाद्याः विवाद्याः विवाद्याः विवाद

मीन्यन्य-निद्र्या प्राञ्चन्य-निद्र्या प्राञ्चन्य-निद्र्या मिन्ने स्थाने स्थाने

 न्त्। न्यायिःश्वास्याध्याधीःश्वरः धुन्यास्याद्यः याद्यत्यः न्त्। स्थाः प्रदेशः व्याप्याद्यः विश्वः प्रदेशः प्रदेशः

देःयःइसःयरःश्चेःह्नं प्यदेःयः नेश्चत्रे। क्रेंश्च गुःश्चुः स्वरःयः श्वरः दः दः व्यादः स्वरः स्व

चर्चेट्यावयान्यस्व प्रत्रहेंग्याहे। ह्रेंच्यायावीत्या विस्त्राच्या स्वाप्त विस्त्राच्या विस्त्राचय विस्त्राच विस्त्राच्या विस्त्राच्या विस्त्राच्या विस्त्राच्या

द्रा लट्टत्वच्चाच्यान्ता न्याद्रक्ष्यन्ता द्रम्याद्रम्याद्रम् याव्यः क्ष्रम्यद्राद्यः द्रम्यः प्रम्यः क्ष्रम्यः न्याः विकान्त्रम् विकान्

त्रबुल नवर चेन् ग्री स्रेते स् इस्रमायतुर त्रशुर नदः। ने वस्रमा स्नायतुन ग्री:व्रु:ब्राईब्रा:५८ अनुअ:य:५८ | दे:ब्रुअ्श:उर्-श्रेद्र:श्रेद्र:ग्री:सु:ब्रुद्र:य: म्बिनान्द। दे म्बिन्ध य सः क्षेत्र सं मुक्तेन दर दे प्यकुः द्या प्यक्तें अप्यः श्चीन्यः बःसायान्दा। देवमुः क्रॅंटावीयान्दायान्याम् राष्ट्रायाचे नाम् वुद्र-सुद्य-सेसस्य-द्रवद्य-सर्वेद्र-तस्य वेद्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रव्य-द्रम्य-द्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-द्रम्य-या रदःश्वदशः मुशः चर्डुदेः हूँ चश्चान्दा ने चित्रेत्रः नुप्तः सूर्यः न्दा الطَّاحِد الطَّعَاجِد العَاسَاحِد الطَّاءَ حَد الطَّاءِ عَلَي السَّاحِ الطَّعَادِ الطَّعَادِ الطَّعَادِ الطَّ ब्रि:न्द्रा व्रव्यःन्द्रा ज्ञद्यःभेन् च:न्द्रा यानक्कन्य:न्द्रा न्स्युयः न्दा चंड्रायन्दा श्रेन्याश्रम्दा चडश्रयते त्यश्रम्नाम् । म्बर्स्स्स् । दि.चलुव.चर्स्रद्रस्यस्यग्रदः। यह्माह्रेवःस्यस्यानुवःचर्स्रदः वस्त्रा विद्याहेत्राचेत्रेत्राचित्राच्या । विरायस्याचेत्राच्या तालुश । तार्श्वेषुःस्याग्येक्षयात्रज्ञायाःश्ले । विश्वान्तायाःस्याश्वायाः स्वीश्वायः मिश्चरकाने। यद्रेन्यः भोनायहेगानायते क्षेत्रः स्टायन्तर हो। नियन्तर यहन तपुःशर्र्-जाञ्चवीबाताः इश्वाश्चातकः तपः विद्री

चलैन्दान्ते अन्वस्त्रसङ्ग्रस्ति विदेश्यस्य विदेश विद्या विदेश क्षेत्रस्ति । विद्या वि

ब्रूट्टर्स्यक्तिक्ष्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान् स्थान्यः स

यावश्वते स्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा स्त्रा

ल्याश्चित्रात्ते स्वाश्चर्यात्ते ह्या स्वाश्चर्यात्रे स्वाश्चर्यात्रे स्वाश्चर्याः स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्वरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्वरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्वरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्वरं स्वाश्चरं स्वाश्चरं स्वाश्वरं स्वाश्व

प्रतित्ति क्षायम् विवाद्या विवाद्य स्थात्य स्

ख्रीमार्ग्। मुश्च नावश्वादान्त्री, स्वताक्ष्मान्त्रवन्त्रम् स्वत्यक्ष्मान्त्रम् स्वत्यक्षम् स्वत्यक्यक्षम् स्वत्यक्षम् स्वत्यक्षम्

श्रदशः तुः शः तुः हिवा वीशः र्केशः गुः श्रुः तब्रूशः यरः देवा यरः युः हे व। शर्र्रात्मस्यात्रात्र्याप्त्र्वाचीश्वातस्य हे। श्रदशास्त्रशास्त्रा तर्रियात्वाची श्रीवामाविदास्यातरानेबातामवबाश्चिरावबा क्रूबाग्रीःश्च क्र्यायदुःक्षेत्रःर्रा ।इसायरःश्चेत्रायश्चे त्वरायं ग्राह्मण्यावा । वश् इसायर श्रेव परे पो मेश र्वे वायर श्रेम मान्य प्रायम वे रहें न्या तार्श्वेन्यातार्थ्यवायायावयाश्चरावया व्यानेश्वर्य्यायायायाया र्चेयःचतिः ध्रीयः में । प्रयमः तर्चेयः यक्षात्रे व्यवस्थाः त्रहेतः यदेः त्यक्षाः स्थान मवनाश्चिम् वना यहेगाहेदाश्ची। तस्या वस्र वास्त्र न्या वास्त्र विषया वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त वस्त्र वस्त वस्त् सर्वियायरानेबायदात्रात्रीबायान्वरायर्भेरायार्भेयायदान्धेरार्भे विष्कृत् तश्रवु अर्चर प्रत्या र्चेश्वर प्रता है स्वा हि प्राप्त रही स तपु.स.श्रेट्.यर्ह्न्ट.तप्र.श्रीय.वश्रा श्रेशश.क्षेत्र.वश्रश.क्षेत्र. यर चुेन् पर्दे प्रमूत्र य अद्वित य अन्तर पर्दे र य वें र य दें र य दें र य दें र य श्रेयाचरावी मविष् प्राप्ता देशाया श्रम्या अस्य अस्य स्था स्था ঽর'য়য়য়ড়ৢঽ৾৻ৠৢ৾৽ঀৄ৾য়৾৻ৼয়য়য়ড়ঽ৻ৠ৸ঢ়য়ড়ৢয়৾৻য়য়ড়ৢয়৾৻য়য়ড়য় तपु.सुर.हे। अटबासुकाग्री:क्रबायदी:दुवावीबाक्रवाग्री:श्रुग्तश्वरायर:देवाः तर वेट्री विश्वनश्चित्रय प्राचीव व्या

284 त्तु अ केंब न्दीन्ब चक्रेंन् चरि हु स चन्त्।

ययो.क्यं अ.जश. ग्री.ज्या अ.जश. श्री क्ष्यं अ.श.चकरं .त. यं धुश्वः जशा

चन्नमः वि.च.चूं त्यः चतुः सः चन्नाः स्वानः स्वेनः चन्नाः वे व्यक्षः चन्नाः वे व्यक्षः चन्नाः व्यक्षः वित्रः चन्नाः व्यक्षः वित्रः चन्नाः वित्रः चन्नाः वित्रः चन्नाः वित्रः चन्नाः वित्रः चन्नाः वित्रः चन्नाः चन्नाः वित्रः चन्नाः चन्न

त्वॅर्यः यदिः यम् कम्बाय्यस्यः दुः व्यॅर्॥ होत् विः गुत्रः तुः यस्यः से हिया। मारः मे हिंत् विः विश्वायः सुर्वे॥ रयाः मे हिंत् विः विश्वायः सुर्वे॥ रयाः मे हिंत् विः विश्वायः स्वर्वे॥ रयाः से हिंत् विः विश्वायः स्वर्वे॥ रयाः से शुं त्राव्यः से विश्वायः से विश्वायः से विश्वायः से विश्वयः से

वेशमञ्जूदशः स्था

विश्वास्त्र निक्षां हैं सबत् से न्या तर् के न्या स्त्र में निक्ष स्त्र में निक्ष स्त्र स्

देशवागरमीशहिंद्वीनेशयरत्त्राहै। वेशवाद्वर्दिनेशविद

यम्भी श्चित्र स्त्रा स्त्री स्त्रा स्त्र स्

य्युं अत्यात्यार्थेष्य स्थान्य स्थान्

चैनःतनः देर्ज्ञन्यस्यः स्थान्यः स्थान्यः विनः चैत्रः विन्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान

बेशमुरायाधिव र्वे॥

ने सुराव मानवावका हैं ग्राचा ग्रामीवावका लेवा

धेर्-ग्री-मेशनशह्माशनु-न॥

चल्वेस्त्राच्याचे। स्त्राची स

देशव नहें द दु शेद स वा ना ने श ग्राम नहें द स द स ना सा तु शेद

286 द्व अ केंब द्वीदब वर्षेद्र पते इस वन्द्र

चय्याचन्नस्याच्यस्य उत्स्वित्य प्यान्यः। च्रेत्यः सेत्यायाय्येत्रं यत्रस्यः चयन्य उत्तेत्रः प्रमुष्

यर.लर.श्रेर.ज.तियो.उक्ष्य.चक्रूरे॥

वेशम्बद्धरम्यः धेन द्री । दे प्रवेतः तु

कु:सदः, वाञ्च वाका याचुवः तत्त्व वाका याचा ग्रीटः।। यद्भायते विभागविभाग्यः स्वर्थः वाका ग्रीटः।।

खेबावी.च.र्टा रेतजाबाराकेतवाजीरा

धेर्-ग्री-दे-स-र्वान्-स्व-हेन्-झ्रेस-य-झ्रे॥ रे-क्रे-से-सद्युक्त-स्व-स्व-स्व-स्व-स-सेन्॥

डेबाग्रह्मसार्थे|

> ইঝ'গ্রীঝ'বছল'অবি'অ্ঝ'গ্রী। অনঝ'স্থীঝ'শ্রীঝ'শ্রীঝ'শ্রীনা অনঝ'স্থীঝ'শ্রীঝ'শ্রীঝ'শ্রী। ইঝ'গ্রীঝ'বছল'অবি'অ্ঝ'গ্রি'শ্রী।

বাহ-জ্-প্রস্থ-প্র-ম্ব-শ্রাপ্র-প্রশ্না বাহ-জ্-প্রস্থ-প্রশ্ন-প্রশ্না

श्रम्भ मिन्न स्थान स्था

यञ्च-स्त्रेत्-स्त्रः स्त्रः यत्त्वः स्त्रुम्। यद्ग्वतः त्यादे स्त्रः स्त्रः यत्त्वः स्त्रुम्। यद्ग्वः स्त्रः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रुम्। स्त्र्वः स्त्रः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रुम्।

दे.क्षेत्रःश्रेश्रश्चारचीचीत्त्रःज्ञान्त्रःश्चित्रःश्चःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्रःश्चित्र

288 न्स् अर्केश न्दीरश वर्शेन् परि इस वन्ना

য়য়য়য়য়ৢয়ড়য়॥ য়য়য়য়য়ৢয়ড়য়॥

खेश्रामश्चरम है। यदास्र श्रेमशायना तशाय्र्य रायते में वेदा तशास्त्रीया नरःशुराय दे वदायो नेदान्तु दे पत्वादायदे वद्वादायदे स् सर्म मुक्ष गुः क्रूंव त्यम स्दर्भ मेर् प्राप्त गुपाय । नुरस्त गुः क्रूंप गुः क्रूंप प्राप्त र्वेन्यसुद्वीयायेद्रायदेश्क्रेदार्थिन्छ। दयदावीः क्रुयार्थिः ददा यस्रयादयेवाः न्दा चक्क विवार्षेष्वश्राद्या वै:हुउ:न्दा र्ह्ववाव:क्रेव:वॅ:न्दा यङ्क:न्या **५८। अर्थ्यान्या छ५८। अ५८। श्वाप्या देवेश्वेट्यें५८।** तह्मासुदे सुर्देदे वाक्षेर सुरस्य ताया क्षेत्र से दाया महामा की का से महिता या यहेगाऱ्रेव चमना उद्गायन या वसामा विकास विवास व मुबायर त्योदबाय देर्दा उव। मुबायस उर् ग्रीबाय्याय। सर्देर चर्र्स्यात्र देवे वर्ष्यायाय द्राप्त वर्षे द्राप्त हे । वर्षे । वर्षे वर नश्रम्भयायाः मदः मृदिः मुद्दः मीः द्वीः साः श्लेदः तुः पर्हेदः गुदः सबरः द्वमाः यरः स्रीः जानविष्यातरावध्यात्राही मुकायराद्ये वतार्याक्रे तकाषामुद्राक्षायाक्षेत्रायाक्षेत्र धिवार्वे। दिते सुति पर्नेदाया वी कुयायते स्थानावाहाय सम्बद्धा वी सुन स्याग्रीःविरादुरानुः माञ्चेमाश्रायदे यागेन्या स्थात् हो। यदे रायाहेन् ग्रीकाक्षे 四下至川

न्वेनेक्ष्यविन्वायदेखेंबक्षा

क्रॅ्चर्यायमुः र्ये प्रकार्या क्रायाम्य विक्रायम् । विक्रायाम्य विक्रायम् । व

> यान्त्रयान्यः स्वात्रयान्त्रयाः विद्याः स्वात्रयाः स्वात्रयाः स्वात्रयाः स्वात्रयाः स्वात्रयाः स्वात्रयाः स्वा त्र्याः स्वात्रयाः स्वात्रयः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्रयः स्वात्रयः स्वात्रयः स्वात्यः स्वात्रयः स्वात्रयः स्वात्रयः स्वात्रयः स्वात्यः स्वात

वेशक्रेंपश्चर्या

क्रेंबागुब ह्रेंबाबायमायुम्बुयादमा। क्रेंबागुब ह्रेंबाबायमायुम्बुयादमा।

290 दस् अर्देश द्वीदश पर्शेद परी इस पन्।

त्यश्रः हें व यः न्दः त्यों मा हें व त्या। श्रे तहे मुक्षः य वे ह्वसः यः यवि॥

बेशनु:च'वे शे:यहेगशयः हे। यू:५८। चर्५५८। ५गे:र्श्वेर:५८। न्याः बेशनुवन:ग्रीशयदे:अ:धेव:लेशचक्तयः५:शे५:पदे:ध्वीर:शे:यहेगशयर्दे॥

यान्त्रम्यान्यत्रम्यः विश्वस्यः स्वा त्रुवः त्यान्त्रेवः त्युक्षः त्वः त्यः त्यः हो। स्वा स्याः कृतः त्ये व्याः त्यः त्यः हो। स्वा स्यान्त्रम्यः त्याः स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्व

क्ष्र्वःचित्रःयदेशः व्यक्तः विद्याः द्वाःयः व्यक्तः विद्यक्षेत्रः यदे द्वाः विद्याः क्ष्रियः वर्षेः विद्यक्षेतः विद्यः विद्याः क्ष्रियः वर्षे स्वयक्षेत्रः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः

प्रमृत्यायि स्त्री । त्रीक्ष्यायका सुर्याय स्त्री । स्त्रा सुक्षा स्त्री । स्त्रा सुक्षा । त्रीक्ष्य स्त्रा सु विक्षा या त्री । त्रीक्ष्य स्त्रा सुक्षा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्री । स्त्रा सुक्षा स्त्री स्त्री स्त्र विक्षा या त्री स्त्री । त्रीक्ष्य स्त्रा स्त्र व्यायदेख्यं निष्ये

त्र्र, देश्यात्र, भीष्य, भीष्

पश्चित्वायात्त्री

या पर्ने राश्चितान्त्र्यं केन्न ग्री अश्चित्वा क्ष्या प्रति स्था प्रति स्था ग्री अश्चिता क्ष्या स्था क्ष्या क

शक्ष्यं तपुर प्रमुद्ध त्या स्थान स्

चिरःक्ष्यःक्षेत्रक्षःयःस्व स्वर्धः स्वरंधः स्

292 न्तु अ केंश न्वीदश वर्शेन् परी हुअ वन्।

ब्रुव र्रम्ब्रव यदे क्षेम र्रम्बी। षव:र्र्द्रव:ग्रेंग्'र्श्वेर्'यःषेश। रत्य केष विवा सूर र य मुश्री वर्त्रेवायदे सुगार्चेट उत्तुर्गा पञ्चर प'न्द वे पहुद परे अर्केगा रवःहुःसदःचें वुदायाधेका। न्ययास्व धुनान्य विषयास्व वेत्र स्था श्रुक्तियायराअर्थे प्रमारव्युम्। तक्रें क्षेत् प्रवाद्य प्राप्त व्याप्त विकास श्रु-अहेंश-५८-विर-के-घ-५८।। **क्षें**श्रद्यार्थर ह्या है स्थान है स हेट.स.लटश्र.स.२वी.धि.उक्तिमी लट.रेग.धेरब.त.क्र्ब.ग्री.क्ष्मश्री ब्रेल'चबर्पप्यक्त,अर्द्गाचबरकिर॥ व्यक्षाग्री विस्तु से सर्देव दूर। य.श्री.ग्रेथ.री.स्रियाशासस्य त्यीरा। र्मवारान्या वार्षाच्या वार्षाच्या वार्षा शुर्वाध्यक्ष येव दरम् सुकार्स्चेव धर्मा

लु-ड्रिनुब-र्यान्ट्रीया खु-ब-ल लु-चुब-य-र्या

श्रीयश्रश्चियः तत्रः द्रियः यद्यीय। रत्यः स्वर्थः सर्थ्यश्चरः स्वर्धः स्वरं यद्याः स्वर्धाः स्वरं यद्याः यद्

विद्यात्र विद्यात्य विद्य

विवान्त्रीयस्ति स्वास्त्रीयः स्वास्त्रीयः । द्रवाश्चात्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्र स्वास्त्रः स्वास्त्

294 न्तु अर्केश न्वीदश वर्केन परिक्र वर्गना

श्रुवःबेदः द्वाः धरःश्रुः धः द्दः॥ ज्यान्य स्युक्ष प्रस्थान्य । रसिर अस्. सुव धि शिषा विश्वर्था रहा। र्.क्रॅर-श्रर-म्.पर्य-घर-पर्यीर। वर्ष्य इस्रम्य रेस में र्रा ग्रेंश्रयस्थ वयार्वे द कुश्य ५ ८ ।। वन्याक्तेन्द्वयःतुःयव्यव्यःयःन्ना र्र.च्रे.च.लु.शक्र्वा.ध.पश्चिरा। क्रूबर्दरमञ्ज्ञ सदेन्तुः याया। ब्र्च-टरबातबाचु-रिधाविद्याः हुरा। ज्याबायावबाद्यःम् हास्या क्रि.खेट.बाटा.त.रेबा.धि.जश्चीरा। क्षेंगावी यदेव यर यह अर्थे द्या स्व-देर-तुषाक्ष-पाई-द-पाणिका। श्रेदे द्वर दें भूग्रास व्यवस्य द्वर ।।। क्रदश्रायालु वे नियम्बर्धिया यदेव यदे छ्या वे अद्वेव यग्रेशवशा श्रेरःमेतेः त्वारायर् श्रियः नगरः तश्रुरा ह क्षेत्र द्रवीबाटा हुबायहवी तथा। ज्ञाबाद्य श्रीबाद्य प्रतिवाद्या।

क्रमान्ने स्वनः हिन्यानः यान्या। यान्ने त्रात्म्यायान्य स्वर्धः स्वरं स्वर्धः स्वरं स्वरं

चैत्रस्यास्त्रस्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्य स्वत्यस्य प्रमाणक्षत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य

श्चमः स्वाप्त्रः स्वाप्त्रः स्वाप्त्रः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः दे स्वाप्तः स्

श्चेशःतुःकेवःचाःश्वेदःचाःश्वे।। अर्कवःत्रुक्षशःव्यवाशःचशःश्चेवःचनःअर्हेद्।।

त्रमाश्चरकाते। देलरायन्तरा। स्रमा श्वरायात्मीवाग्रीम् देशसाग्रीकार्यायाम् स्वरायस्य स

296 द्यु:सर्केंस द्वीदस वर्सेंद्र धरे इस वर्दा

स्ट्रमाहेव चित्र तुन्न तुन तुन्न तु स्ट्रमाहेव चित्र तुन्न तुन

दे पशुरःपञ्चेस परःशुर पःभिश्रा पःशुरिःसःगःगठेगःरशुपःश्री। पःशुरिःसःगःगठेगःरशुरःग्री। पञ्चरःपञ्चेस परःशुरः पःभिश्रा।

श्चि-ततुः विश्वान्त्रम् तश्चि-तमः विन्।। दे ति श्चिम् त्यान्त्रम् तश्चिम् तश्चिम्। दे ति श्चिम् त्यान्त्रम् तश्चिम्। सक्ष्यं विश्वास्त्रम् तश्चिमः तश्च

ब्रैट्टायुःश्चिताहे। ब्रैट्टायालकाम्याः। यहेराश्चायाकास्मराभकाम्भूरायाक्षेत्रायाह्ट्टायाक्षे। यहेरक्षेत्रसः इसामञ्जाकास्भित्रात्वाह्न्याक्षेत्रायाह्म्याकायरानुद्री।

र्ह् चाक्ष-सरस-र्नीजार्ज्य-वर-र्र-स्वर-त्य-र्जीया ट्रे चक्ष्य-सरस-र्नीजार्ज्य-वर्ष-स्वर-त्य-रर्जीया

वेशायबुद रेंगा

श्चित्रायतः हेटाटे तहेव क्वियाक्षेत्र यहे त्या मान्या मान्या क्विया हे न

तस्त्रितः प्रश्नेतः प्रश्

न्यर्यक्षित्रः विश्वति हैं स्वी। इस्त्रे क्षेत्रः क्षेत्रः त्यरः त्य्युरः हो। इस्त्रः क्षेत्रः व्यरः त्युरः हो।

ब्रे निक्षा व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व

298 न्तु अर्केश न्त्री दश मक्ष्रेन परि इस मन्त्।

पश्चिम्याक्चित्रकर्न् खेर्ययम् कुल्ययम्याक्चित्यायत् स्थाक्चित्रस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस

क्रूबानी:श्रुप्तश्र यान्य्यायम्। श्रुवायदेः स्टायदेव स्था स्वाधाः ग्रीसा श्चे प्रसद्य तर्श्चे प्रत्रा न्वादःस्व वाव्यव्यव्याद्यं चःन्रः॥ क्षित्रश्रास्त्रप्तह्या-न्दायक्षेत्रश्राय-न्दा। पञ्चेतुःगविश्वाताःश्वाधश्वादाः निः॥ चर्ड्व'श्रेंदे'व्दॅरचीशर्रेव'घ'न्टा देशरवृद्दः नगदः चःश्वनः यः नदः॥ वर्द्द्र हैं । दहूर हैं शहर हैं वह साम है।। विरःस्ताक्ष्याची विष्रः विष्रा श्र.टव.परंप.चर.पोचेवाब.शह्र.प्रमशी लूटशःश्वःत्रः द्वाःषुटः स्थयः श्वा श्रीन्यादेश्रीन्यवश्यमञ्जूव॥

विश्व ग्राह्मस्य यायित्रहिं।।

ग्रिकायायिक्यायिक्याविक्षस्य विश्व स्थानिक्षस्य विश्व स्थानिक्षस्य विश्व स्थानिक्षस्य स्थानिक्सस्य स्थानिक्षस्य स्थान

मृत्यायद्वीर स्वेत् यार् त्वाव्यात्वा। मृत्यायद्वीर स्वेत् यार त्वाव्यात्वा। मृत्यायस्य चीत्राव्यायद्वीत्याय त्वा। सृत्यायस्य चीत्राव्याय स्वा। सृत्यायस्य चीत्राव्याय स्व।। मृत्यायस्य स्वायाय स्व।।

300 न्तु अ केंस न्वीदस वर्सेन् यते इस वर्ना

मिश्रमाता वे पार्यमना पश्चिताय देवेव तान पश्चिताय वि

क्षेत्राच्यक्षःश्चःस्वःत्रकःस्यः । क्षेत्राच्यक्षःश्चःस्वःत्रकःस्यः । क्षेत्राच्यक्षःश्चःस्वः ।

डेश्रम्बर्ग्यने विदेश्य यम् विश्वायात्र स्वायात्र विद्यायात्र स्वायात्र स्वायात्य स्वायात्र स्वायात्र स्वायात्र स्वायात्र स्वायात्र स्वायात्र स्व

तर्नामस्याम् स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान्य

रे.लट.वेट.क्य.श्रश्चरत्ग्रेज.जश

ब्रीन्-स्वर्थः क्रुकः क्रुकः स्वर्धः स स्वर्धः स्वरं स्वर्धः स्वर्धः स्वरं स्वरः स्वरं स्वरः स्वरः स्वरं स् ७व.ब्र्ब.टु.ट्वा.ववबातम्ब्यः हिट.पह्नव.ब्रुबातबातम्ब्यः

सदसः मुन्नः चुदः सुनः स्वानः त्युन्।। वर्भदः दशसः से अस्त्रे नास्त्रः स्वानः वर्भा। सेश्रमः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः वर्भातः वर्भातः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः वर्भातः वर्भातः स्वानः स्व

मुव्यस्त्रम् मुक्ति द्वा क्ष्यः मित्रम् स्वयः स

बिन्यत्रधुः सुन्यक्षेत्रयम् स्विन्।। स्वाय्यक्षास्य स्वित्यक्षेत्रयस्य स्वि।। स्वित्यत्रस्य स्वित्यस्य स्वि।। स्वित्यत्रस्य स्वायस्य स्व।।

कुनाविद्यास् । विद्यान्त्रायस्य ग्राटा

खे.चयु.जया.जा.च्या.खेबाबा.चयु॥ बी.चयु.खेयु.चयबायाखेबा.यबा॥ खे.चयु.खेया.चर्च्या.यह्या.यह्या। शु.धेवा.केवा.चर्च्या.चर्चा।

302 दस् अर्केश द्वीदश वर्षेद्र परि इस वन्।

क्षे.प्रयु. तम्म वाम्याः तम् वाम्यः प्रदेशः क्षे.प्रयु: तम्मः त्यः तम् वाम्यः सि क्षे.प्रयु: स्वामः सिक्षः सि क्षे.प्रयु: स्वामः सिक्षः सिक्षः सि क्षे.प्रयु: स्वामः सिक्षः सिक्षः सिक्षः सि क्षे.प्रयु: सिक्षः सिक्

क्ष्यानी:दे:हेन्व्यं द्यान्यस्त्री। दे:द्याःश्चरः दहेवः त्यश्चः तर्ज्ञ्वेषाः श्रे॥ द्यः क्ष्यं यञ्चः द्यारः त्यः स्वायाः स्वार्वेषः यञ्चः द्यारः स्वायाः स्वार्वेषः द्यारेषः स्वायाः

क्षुंकेदेःचन्यांकेनःखेदःबनःचन्दः॥ विक्रोतेःचन्यांकेनःखेदःबनःचन्दः॥

वित्रम्भूद्रश्चर्या दर्नेतिःकृष्याक्षेत्रम्भूष्यः वित्रम्भूद्रश्चर्याक्षेत्रस्थाः विक्रम्भूद्रश्चर्याक्षेत्रस्थाः

दे'अर्वेद:वुद:कुव:बेअब:द्वद:व्या विद:हु:दे'येद:कॅब:ग्री:ब्रु॥

न्त्रान्त्रस्त्रान् वर्ष्याच्यान्त्रस्य वर्ष्यस्य स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स

श्रम्भ में स्वायाय स्वायम् स्व

वयन्यक्षेन्यवे वस्त्रेन्यक्षेत्र वस्त्रे में द्वा यस्त्रेन्य वि

ल.चेंबाश्चित्रक्ष्यः स्थान्यः श्चीत्रः व्या

304 प्राक्षेत्र प्रमुद्देश वर्ष्ट्रेष्ट्र प्रदेश वर्ष्ट्रा

इस्रायावस्रक्षक्षत्र्त्र्त्ते। इस्रायावस्रक्षक्षत्र्त्त्र्त्ते।

वयन्यासेन्यवे वस्ति वस्त

द्वै:यायेद्र:यदि:क्वॅंशःश्चु:यश्चा। व्यःनेश्वःश्चु:यर्वेद्र:य्वितःशुः व्यःक्वेत्रश्चेद्र:य्वेद्वःशुः द्वे:य्वेशःश्चेयश्चरःय्वेदःशुः द्वे:य्वेशःश्चेयशःयर्वेदः।

सक्तानिक्षान् स्वान्त्रित्रात्रित्रात्रक्ष्यान्त्रीत् । वितः स्वान्त्रीत् । वितः स्वान्त्रीत् । वितः स्वान्त्रीत् । वितः स्वान्त्रीत् । वितः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वितः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वतः स्वतः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वान्त्रात् । वित्रः स्वतः स्व

क्रॅन्च क्रिन्दे न्या विकास क्रिन्दे क्रिया क्रिन्दे क्रिया क्रि

देश्वस्य देश्येद्रायात्र्यम्य विद्याः श्चेत्र द्रायः द्विस्रस्य विद्याः स्वाया ଌ୳ୣଽ୷ୠୄ୵ୢଌୖ୷ୖୡୣ୵ୣଽ୷୕ୢଌୣ୵୲୲ ଵୖୄ୕୴ୡ୕୳ଵ୕ୢୄ୷୷ୠ୕୕ଽ୕ୠୣ୵୵ଽ୷ୄୡ୕ଽୡୄ୲୲

देशवःश्वरश्चम्याश्चितःयम्। धुःस्वःयद्शयःश्वेःयञ्चेतःश्वे॥ वेंद्रःद्रस्येद्रश्चेमःश्चरश्ववश्चे॥ वेःसःश्वःयम्श्चेःयव्वव॥

ग्रीकाके अद्ये द्वीतात्व्य स्थान स्वान्त स्थान स्वान्त स्थान स्था

त्र-अह्ट-त्रुव चै-हु-त्य-म्र-त्रुव नक्क्ष्य-विक्रम्बिक्य-द्रुव स्त्रिक्य के मुन्ति न्यू के स्त्रिक्य के स्त्

306 दस अर्केश द्वीरशायकूँद यदे इसायन्।

र्हेग्रायान्द्रस्यायम् र्योजायास्य स्वाधायस्य दिन् स्वाधायस्य स्य

दे.केर.ज.चेशमीशक्षुप्र.पत्त्रियं जनाशह्रदं तपुरा करा क्रिंवाचेन केंद्र सुत ही बुदा पर पहना पाना वर्षेना ने हुवा पाकेन पे स्रिंव यर सर्दर य है। वै: हुउ: यः नर यदे वक्क विव माञ्चमारा मह्तर स्वाद दिना म्बरम्बे स्टेरिस्टिं के स्ट्रान्य । बेर्पय वस्त्र उर्प्त सिव्य प्राप्त स्ट्रा चर्त्राचियःयःश्चेत्रःक्षःतुःत्रः। र्य्यदश्चेत्रःह्वान्ययतेःश्चुःत्रःश्चेतःयतेःश्चेश्च चःस्ट्यायदेःन्येःन्दः। वोःमेयावर्षेयावयात्रुयान्यः स्ट्रायः सर्द्रायः देशस्य म्बाताकुः अदुः न्दान्ता श्वाकार्ह्म्यात्राक्षाः अत्यत्यमः अभाकवः ग्रीः मेः भूर-प्रदेश्वेद-प्रश्नादवुर-प्रश्नाधेर-प्रवेद-क्री-क्र्रेन-सु-क्ष-सु-द्र-। गुश्चर-वस्रक्र-इ-(नुव्रा-केट-ह्रम्।त्य-व्रम् वस्य-द्र-द्रत्य-द्रक्ष-द्रम् स्रम् न्दः। श्रेअश्वरुवायश्वरुवायीः स्थायम् न्यायः स्थेतः विद्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः तश्रस्यः संस्थि द्वारान्त्रीयायः स्वार्यः स्वार्यः मुद्रायः मुद्रायः स्वार्यः स्वरं गुश्रदशयदे द्वायस्थाने। यस्व वयाग्रदा

याद्यं विया यक्क क्षेत्र स्ट्रा स्ट्

ह्मद्भायत्वेत्रः व्याधितः यात्रस्यः यात्रस्तितः यात्राः द्वायः यात्रस्यः यात्रः स्त्रस्ति । द्वायः यात्रस्यः यात्रस्यः यात्रस्ति । स्रियः यात्रितः स्वायः स्वायः स्वायः यात्रस्ति । स्रियः यात्रितः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व

षुश्रानुस्यायश्रामध्याने या श्रुद्धाः श्री

यदी त्या ह्यूं में का न्या निर्माण विश्व के साम का काम का का का का काम के साम का काम काम काम का काम का काम का काम का काम

श्रेयश्चरवावा याने श्रुष्णे सर्देव श्रुस्य सर्दि।

नेमारलेन।

त्त्री श्री साम्यान्यस्य स्ति त्या स्त्री स्त्रा स्त्री स

लेबाक्रबानी मुन्नेव हिंदी यायेन चारायाया नदा। इयायर ये हैंगाय

308 न्तु अर्केश न्दी दश यक्ष्न परि इस यन्।

त्ने मुंश्नियान्यस्य ने त्युर्म्य म्या स्थान्ते व्या स्थाने स्थाने व्या स्थाने स्था

क्रिक्तं क्रि. श्री. च्रीय. श्री. श्री श्री. श्

कुबानी.च.चेबा

बेबानु चरी चरातु मुळेर चक्रवाही।

नियत्में निर्मा स्थानित् क्षियान् स्थानित्ति क्षेत्र स्थानित्र स्थानित्ति स्थानिति स्यानिति स्थानिति स्थानित

स्यायेत् व्यवे इस्यायमः विश्वा र्षेत् स्यायेव वेश्वार्षेत्रसं हेंग्याव्या ते वे से संस्टामेग वेत्।। है त्रावेश वेश से स्टामेश

त्र्वाची मुलायति सर्वे त्यक्षण्या । विकासी स्वास्त्र स

यद्यास्य स्त्रीय स्त्

केंशक्षश्रयः द्वायश्यक्षाः नुम्द्रश्रयश्यम्द्वन्यश्यम् नुम्द्रश्यश्यम्द्वन्यश्यम् केंशक्षश्यश्यम्

द्र्वेदशय:द्र्यादेशी:सेश्वय।। क्रिंशकेद:यादेशयवश्चयःयम्।

310 न्सु अःकेंशन्त्रीदस वर्सेन् चते इस वन्।

क्रेंबद्धस्यस्यस्यात्रेयस्यस्यात्रेष्ट्वा स्रुद्धस्यस्यस्यम्द्रस्यस्यम् र्वोदस्यस्यस्यम्द्रस्यस्यम् रेवेदस्यस्यस्यस्यम्

द्वीट्यत्यत्त्वत्य्यक्ष्यत्यत्त्वत्। क्ष्यत्यत्त्रेत्तत्त्वत्यत्त्वत्। क्ष्यत्यत्त्रेत्तत्त्वत्। द्विवाद्गेवत्त्वत्यक्षत्त्वत्त्वत्।।

दशक्षेत्रभूर्त्त्रभूत्रम् इयक्षक्ष्यत्त्रम् इयक्षक्षत्रम्यकूर्यस्य इयक्षक्ष्यत्त्रम्यकृष्यस्य इयक्षक्षयः इयक्षक्षयः

द्वान्यस्यस्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य

क्षेत्रायद्वेतःयाम्बद्धायः द्वा। क्षेत्रायदे यत्रुवयः यस्युक्तयः या। यदी.जायहर्षाश्चात्राचित्राच्यात्रीत्। च्रिश्चायम् च्रिश्चायात्रीत्राच्यात्रीय द्वित्याच्याच्यात्रीः श्रीत्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्राच्यात्रीयः स्रीत्राच्यात्

> दलवाश्वात्तात्रुष्ट्राचार्ष्ट्र्यास्त्र्याः तलवाश्वातात्रुष्ट्राचार्याः हिन्द्रस्त्राचार्याः हिन्द्रस्त्राच्याः

शर्षः तान्त्रेच चया दुः चैया ग्री या जेशा ने या त्या । ॥ दिया खे. चीटा ख्री या या ट्या च्या चेशा चिटा प्रि. चिटा ना प्रदेश स्था या त्या या या या ख्री या ग्री अप या द्र त्या या या ख्री या ग्री अप या द्रिता स्था या क्षी ता या प्रदेश या या विद्या स्था या विद्या या विद्या

> यद्यास्त्रीट्रय्दीराधावश्चात्रुयः न्या स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रा स्त्रास्त्रः निद्यान्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्राः स्त्रास्त्राः स्त्रास्त्रः स्त्राः स्त्रास्त स्त्रास्त्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्र

त्र्वावः म्यान्त्र्यः मृत्यः यात्रः यदे द्वयः। द्वयाद्याद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वतः यदे व्यव्याद्यः यदे व्यव्याद्यः यदे व्यव्याद्यः यदे व्यव्याद्यः यदे व्यव स्वयाद्याद्यः स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं यदे व्यव्याद्यः यद्यः यद्यः यदे व्यव्याद्यः यदे व्यव्याद्यः यद्यः यद्यः यद्यः यद्यः यद्यः यद्यः यदे व्यव्याद्यः यद्यः यद्य

312 न्तु अर्केशन्वीदश्यक्षिन् यदे हुस चन्त्।

व्यास्त्रः स्त्रीयः स्तर्भयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्री

म्यायद्वीयायम्बर्धान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्

मुत्यः प्रदेश्यः द्वाः देश्यः द्वाः त्यस्यः व्यक्षः द्वाः त्यस्यः व्यक्षः द्वाः त्यस्यः व्यक्षः त्यः त्यस्यः व प्रदेशः त्यस्यः द्वाः त्यस्यः त्यस्यः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व प्रदेशः व्यवस्य व्यवस्य

073408

Accession No.
Shontarakshita Library
Tibetan Institute, Sarnath